Open Bible Stories Translation Questions

संस्करण 5.1

[ur-deva]

कॉपीराइट और लाइसेंसिंग

Open Bible Stories Translation Questions
तारीख: 2019-11-11
संस्करण: 5.1
द्वारा प्रकाशित: Door43

Open Bible Stories
तारीख: 2019-09-17
संस्करण: 5.1
द्वारा प्रकाशित: BCS

License

Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International (CC BY-SA 4.0)

This is a human-readable summary of (and not a substitute for) the full license found at http://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/.

You are free to:

- **Share** — copy and redistribute the material in any medium or format
- **Adapt** — remix, transform, and build upon the material for any purpose, even commercially.

The licensor cannot revoke these freedoms as long as you follow the license terms.

Under the following conditions:

- **Attribution** — You must give appropriate credit, provide a link to the license, and indicate if changes were made. You may do so in any reasonable manner, but not in any way that suggests the licensor endorses you or your use.
- **ShareAlike** — If you remix, transform, or build upon the material, you must distribute your contributions under the same license as the original.

No additional restrictions — You may not apply legal terms or technological measures that legally restrict others from doing anything the license permits.

Notices:

You do not have to comply with the license for elements of the material in the public domain or where your use is permitted by an applicable exception or limitation.

No warranties are given. The license may not give you all of the permissions necessary for your intended use. For example, other rights such as publicity, privacy, or moral rights may limit how you use the material.

विषयसूची

Open Bible Stories Translation Questions **5**
1. पैदाइश 5
2. गुनाह दुनया में दाखिल होता है - 11
3. सैलाब 15
4. अब्रहाम के साथ खुदा का मुआहदा 20
5 . वादे का बेटा 24
6. खुदा इज़हाक़ के लिए शरीक –ए-हयात का इंतज़ाम करता है - 28
7. खुदा याक़ूब को बरकत देता है 31
8. खुदा यूसुफ़ और उसके खानदान को बचाता है 35
9.खुदा मूसा को बुलाता है 40
10 . दस वाबाएं 45
11. फ़सह 49
12. ख़ुरूज 52
13 . बनी इस्राईल के साथ खुदा का मुआहदा 57
14. बयाबान में घूमना फिरना 62
15. वादा किया हुआ मुल्क 67
16. छुटकारा देने वाले 72
17. खुदा का अहद दाउद के साथ 78
18 , तक़सीम शुदा हुकूमत 83
19. अंबिया 87
20. जिलावतनी और वापसी 93
21. खुदा मसीहा का वादा करता है 97
22 . यूहन्ना की पैदाइश 102
23. येसु का जन्म 105
24 .युहन्ना येसु को बपतिस्मा देता है - 109
25 . शैतान येसु की आज़माइश करता है - 112
26. यीशु अपनी ख़िदमत शुरू करता है 115
27 . अच्छे सामरी की कहानी 119
28 . दौलतमंद जवान हाकिम 123
29 .बे-रहम नौकर की कहानी 126
30 . यीशु पांच हज़ार लोगों को खिलाता है 129
31. यीशु पानी पर चलता है 132
32 . यीशु एक बदरुह के मारे शख्स को और एक बीमार औरत को शिफ़ा देता है - 135
33 . किसान की कहानी 140
34 . यीशु दूसरी कहानियां सिखाता है 143
35 .रहमदिल बाप की कहानी 147
36 . यीशु की तब्दील -ए- हैयत 151
37 .यीशु लाज़र को मौत से जिलाता है 154
यीशु को फ़रेब दिया जाता है 158
39 .यीशु का मुक़द्दमा किया जाना 163
40 . यीशु को सलीब दी गई 167
41 . खुदा यीशु को मुरदों में से जिलाता है 171
42 . यीशु आसमान पर सऊद फ़रमाता है 174
43. कलीसिया शुरू होती है 178
44 . पतरस और युहन्ना एक भीक मांगने वाले को शिफ़ा देते हैं - 183
45 स्तिफ़ुनुस और फिलिप्पुस 186
46 पौलुस एक मसीही बन जाता है 191
47 . फिलिप्पी में पौलुस और सिलास 195

48 यीशु वादा किया हुआ मसीहा है - 200
49 . खुदा का नया अहद 205
50 यीशु की दोबारा आमद 211

योगदानकर्ताओं 217
Open Bible Stories Translation Questions योगदानकर्ताओं 217
Open Bible Stories योगदानकर्ताओं 217

Open Bible Stories Translation Questions

1. पैदाइश

01:01

यह वह है कि किस तरह खुदा ने इब्तदा में हर एक चीज़ को बनाया- उसने काइनात और उसमें की हर एक चीज़ को छ: दिनों में तक़लीक़ की – बाद में खुदा ने ज़मीन को बनाया – वह अँधेरा और ख़ाली था ,उसमें उसने कोई चीज़ नहीं बनाई थी – मगर खुदा की रूह पानी की सतह पर जुम्बिश करती थी -

कायनात की हरेक चीज़ कहां से आई ?

ख़ुदा ने हर एक चीज़ को बनाया -

ख़ुदा को हर एक चीज़ बनाने में कितना अरसा लगा?

छ: दिन लगे -

01:02

फिर ख़ुदा ने कहा, " रौशनी हो जा" सो रौशनी होगई –खुदा ने देखा कि रौशनी अच्छी है और उसने उसे "दिन" कहा –उसने उसको अंधेरे से जुदा किया जिसको उसने "रात" कहा - तक़लीक़ के पहले दिन में ख़ुदा ने रौशनी बनाई -

तख़लीक़ के हर दिन के आख़िर में ख़ुदा का अमूमन रद्देअमल क्या था ?

उसने कहा कि वह अच्छा था -

01:03

तक़लीक़ के दूसरे दिन ख़ुदा ने कहा "पानियों के ऊपर फ़ज़ा हो " और वहां एक फ़ज़ा हो होगई – खुदा ने इस फ़ज़ा को आसमान कहा -

---

01:04

तीसरे दिन खुदा ने कहा “पानी एक जगह जमा हो जिससे कि खुश्की नज़र आए “ और ऐसा ही हुआ –उसने खुश्की को “ज़मीन“ कहा, और जो पानी जमा हो गया था उसे “समुन्दर” कहा-खुदा ने जो तक़लीक़ की थी उसे देखा और कहा “अच्छा है “

तख़लीक़ के हर दिन के आख़िर में ख़ुदा का अमूमन रद्देअमल क्या था ?

उसने कहा कि वह अच्छा था -

01:05

फिर खुदा ने कहा “ज़मीन हर तरह के पौदों और फलदार दरख्तों से फलें – और ऐसा ही हुआ – खुदा ने जो तक़लीक़ की थी उसे उसने देखा और कहा “अच्छा है” -

तख़लीक़ के हर दिन के आख़िर में ख़ुदा का अमूमन रद्देअमल क्या था ?

उसने कहा कि वह अच्छा था -

01:06

तक़लीक़ के चौथे दिन खुदा ने कहा “फ़लक पर नय्यर हों” और सूरज और चाँद तारे ज़ाहिर हुए ,खुदा ने उनकी तक़लीक़ की कि ज़मीन पर रौशनी डाले , और दिन और रात की , और सालों की एक निशानी ठहरे- खुदा ने जो तक़लीक़ ली थी उसने उसे देखा और कहा “अच्छा है” -

तख़लीक़ के हर दिन के आख़िर में ख़ुदा का अमूमन रद्देअमल क्या था ?

उसने कहा कि वह अच्छा था -

01:07

पांचवें दिन खुदा ने कहा “पानी जानदारों से भर जाए , और आसमान में परिंदे उड़ा करे – यह उसी तरह हैं जिन्हें खुदा ने बनाए , जो पानी में तैरते हैं और तमाम परिंदे जो हवा में उड़ते हैं , खुदा ने देखा कि वह सब अच्छे हैं और उसने उन्हें बरकत दी

तख़लीक़ के हर दिन के आख़िर में ख़ुदा का अमूमन रद्देअमल क्या था ?

उसने कहा कि वह अच्छा था -

01:08

तक़लीक़ के छट्टे दिन खुदा ने कहा “सब तरह के ज़मीन के जानवर पैदा हों” और ऐसा ही हुआ जिस तरह खुदा ने कहा था – कुछ तो चौपाए थे ,कुछ ज़मीन पर रेंगने वाले , और कुछ जंगली जानवर थे – खुदा ने यह देखकर कहा “अच्छा है “

तख़लीक़ के हर दिन के आख़िर में ख़ुदा का अमूमन रद्देअमल क्या था ?

उसने कहा कि वह अच्छा था

01:09

तब खुदा ने कहा,” आओ हम इंसान को अपनी सूरत पर बनाएं , ताकि वह हमारी शबीह पर हों , ताकि वह ज़मीन पर और तमाम जानवरों पर हुकूमत करे -

ख़ुदा ने जानवरों को इंसान से किस तरीक़े से फ़र्क बनाया ?

ख़ुदा ने इन्सान को अपनी सूरत और अपनी शबीह पर बनाया -

ख़ुदा क्या कहता कि बनी इंसान की ज़िम्मेदारी क्या होगी ? वह ज़मीन पर अपना इख़्तियार रखेंगे और जानवरों पर भी कि वह उनकी परवाह करें -

---

01:10

सो खुदा ने ज़मीन से थोड़ी सी मिटटी ली और उसे आदमी की शक्ल दी और उसमें जिंदगी का दम फूँका उस आदमी का नाम आदम था – खुदा ने एक बड़ा बाग़ लगाया जहाँ आदम रह सकता था और वहां उसको रखा कि बाग़ की रखवाली करे -

ख़ुदा ने पहले इंसान को कैसे बनाया ?

ख़ुदा ने उसको ज़मीन की मिटटी से बनाया-

आदमी किस तरह जीती जान हुआ ?

ख़ुदा ने उस में ज़िन्दगी का दम फूँका -

पहले आदमी का क्या नाम था ?

आदम था

आदम को कहां रखा गया था ?

एक बाग़ में जिसको ख़ुदा ने तैयार किया था -

01:11

बाग़ के बीचों बीच खुदा ने दो ख़ास दरख़्त लगवाए ----एक जिंदगी का दरख़्त , दूसरा नेक व बद की पहचान का दरख़्त – खुदा ने आदम से कहा कि वह बाग़ के किसी भी दरख़्त का फल खा सकता था सिवाए नेक व बद की पहचान के दरख़्त का फल जिसे उस को नहीं खाना था – अगर वह उसका फल खाए तो मर जाएगा -

कौनसे ख़ास दरख़्त का फल खाने के लिए आदम को मना किया गया था ?

नेक ओ बद् कि पहचान का दरख़्त -

नेक ओ बद् की पहचांन के दरख़्त का फल खाने का क्या अंजाम होने वाला था ?

वह मर जाएगा -

01:12

फिर खुदा ने कहा, “आदमी के लिए अकेला रहना अच्छा नहीं“, मगर जानवरों में से कोई भी आदम का मददगार नहीं हो सकता था -

जब तमाम क़िस्म के जानवर वहां पर मौजूद थे फिर भी आदम अकेला क्यूँ था ?

जानवर आदम के लिए मददगार साबित नहीं हुए थे -

01:13

सो खुदा ने आदम को गहरी नींद में सुलादिया – फिर खुदा ने आदम की पसलियों में से एक को निकाला और उस से एक औरत बनाई और उसे आदम के पास ले आया -

ख़ुदा ने औरत को कैसे बनाया ?

औरत को ख़ुदा ने आदम् की पसली से बनाया -

01:14

जब आदम ने उस औरत को देखा तो उसने कहा, "आखिर –ए– कार यह मेरी जैसी है , यह नारी कहलाएगी क्योंकि यह नर से निकाली गयी है - इसी लिए आदमी अपने मांबाप को छोड़ेगा और अपनी बीवी के साथ एक होकर रहेगा "-

आदम के लिए "औरत" क्या मायने रखती थी ?

इसका मतलब यह हुआ कि औरत आदमी से बनाई गयी थी -

एक आदमी के लिए एक बीवी को रखने का क्या मक़सद है ?

ताकि वह दोनों एक हो जाएं -

01:15

खुदा ने आदमी और औरत दोनों को अपनी सूरत पर बनाया – उसने उन्हें बरकत दी और उनसे कहा "बहुत से बचचे , नाती नातन , पोता पोती पैदा करो - अपनी नसल की अफ़ज़ाइश करो और ज़मीन को भरदो – और खुदा ने देखा कि हर एक चीज़ जो उसने बनाई थी बहुत ही अच्छी है , और वह उन सब को देखकर बहुत ख़ुश हुआ और यह सब कुछ तक़लीक़ के छट्टे दिन हुआ -

तख़लीक़ की बाबत ख़ुदा की क्या तश्ख़ीस थी जब उसने उसको ख़त्म किया था ?

वह बहुत अच्छा था -

01:16

जब सातवां दिन आया तो खुदा ने उन सब कामों को जिन्हें वह कर रहा था ख़तम किया – उसने सातवें दिन को बरकत दी और उसे पाक ठहराया , क्यूंकि उसने उस दिन तक़लीक़ के कामों को बन्द कर दिया था – इस तरह से खुदा ने काएनात और उसमें की सारी चीजों की तक़लीक़ की -

ख़ुदा ने सातवें दिन क्या किया ?

उसने आराम किया और सातवें दिन को बरकत दी और उसे पाक ठहराया -

2. गुनाह दुनया में दाखिल होता है -

02:01

आदम और उसकी बीवी उस खूबसूरत बाग़ में जिसे खुदा ने उनके लिए बनाया था बड़ी ख़ुशी से रहने लगे थे – उन दोनों में से किसी ने भी कपड़े नहीं पहने हुए थे –मगर यह उन के लिए शर्मिंदा महसूस करने का सबब नहीं था , क्यूंकि ज़मीन पर गुनाह नहीं था – वह अक्सर बाग़ में चला फिरा करते थे और खुदा से रिफ़ाक़त कर बातें किया करते थे -

आदम और हव्वा नंगे थे तो वह क्यूं शरमाते नहीं थे ?

क्यूंकि दुनिया में कोई गुनाह नहीं था -

02:02

मगर उस बाग़ में एक सांप रहता था – वह बहुत ही मक्कार और चालाक था – उसने औरत से पुछा “क्या खुदा ने सच – मुच तुमसे कहा है कि बाग़ के किसी भी दरख़्त का फल नहीं खाना?”

सांप ने हव्वा से पहला सवाल क्या पूछा ?

“क्या ख़ुदा ने सच मुच बाग़ के किसी भी दरख़्त के फल को खाने से मना किया था” ?

02:03

औरत ने जवाब दिया,” हम बाग़ के किसी भी दरख़्त का फल खा सकते हैं सिवाए उस दरख़्त के फल में से जो नेक व बद की पहचान के दरख़्त का फल है – खुदा ने हम से कहा है कि अगर तुम उसका फल खाओ या फिर छुओगे तो तुम मर जाओगे-“

किस दरख़्त के फल से आदम और हव्वा को खाने से मना किया गया था ?

उनको नेक ओ बद् के पहचान के दरख़्त के फल से नहीं खाना चाहिए था -

अगर आदम और हव्वा नेक ओ बद् की पहचान के दरख़्त का फल खा लेते तो ख़ुदा ने क्या कहा था कि उनपर क्या गुज़रेगा ?

उस ने कहा था कि वह मर जाएंगे -

02:04

सांप ने औरत को जवाब दिया, "यह सच नहीं है , तुम नहीं मरोगी ,बल्कि खुदा जानता है कि जैसे ही तुम उस फल को खाओगी तुम खुदा की मानिंद हो जाओगी और नेक व बद को जान्ने लगोगी जैसा वह जानता है "-

शैतान ने कौनसा सबब बताया कि ख़ुदा नहीं चाहता था कि आदम और हव्वा उस फल को खाएं ?

उसने कहा कि ख़ुदा झूट बोल रहा था इस लिए कि ख़ुदा नहीं चाहता था कि जिस तरह ख़ुदा सब कुछ जानता था वैसा वह भी जानें -

---

02:05

औरत ने जो देखा कि फल देखने में ख़ुशनुमा और खाने में लज़ीज़ मालूम पड़ता है , और वह अक़लमन्द भी बनना चाहती थी तो उसने दरख्तों के कुछ फलों को लिया और खाया , फिर उसने अपने शौहर को भी दिया जो उस के साथ था , और उसने भी खाया -

औरत ने उस फल को क्यूँ खाया ?

उस ने देखा कि वह फल देखने में ख़ुशनुमा और खाने में ज़ायाक़ादार है और वह अक़्लमंद बनना चाहती थी

क्या आदम और हव्वा को फल खाने पर मज्बूर किया गया था ? नहीं - उन्होंने अपनी आज़ाद मर्ज़ी से फल खाने को चुना और ख़ुदा कि ना फ़रमानी की -

---

02:06

अचानक उन दोनों की आँखें खुल गयीं और उन्हें मालूम हुआ कि वह नंगे हैं , उन दोनों ने पेड़ के पत्तों को सीकर कपड़े बनाने के ज़रिये अपने जिस्म को ढांकने की कोशिश की -

आदमी और औरत ने क्या किया जब उन्हों ने नंगे पन का एहसास किया ?

उन्होंने पेड़ के पत्तों को सी कर लुंगियां बनाईं -

02:07

फिर आदम और उसकी बीवी बाग़ में से चलते हुए खुदा की आवाज़ सुनी – वह दोनों खुदा से छिप गए – फिर खुदा ने आदम को पुकारा, "तुम कहाँ हो"? आदम ने जवाब दिया "मैंने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना और मैं डर गया – क्यूंकि मैं नंगा था इसलिए छिप गया"-

---

02:08

फिर खुदा ने पूछा, "तुमको किसने कहा कि तुम नंगे हो"? क्या तुमने वह फल खाया जिस के लिए मैं ने कहा था कि न खाना"? आदम ने जवाब दिया ," तूने यह जो औरत मुझे दी थी उसने मुझे फल खाने को दिया " फिर खुदा ने औरत से पूछा,"तूने यह क्या किया?" औरत ने जवाब में कहा " सांप ने मुझ से मककारी की"

ख़ुदा ने जब आदमी के गुनाह का सामना कराया तो आदमी ने किसतरह रद्दे-अमल पेश किया ?

उसने औरत पर इलज़ाम लगाया -

जब ख़ुदा ने औरत के गुनाह का सामना कराया तो औरत ने किस तरह रद्दे-अमल पेश किया ?

उस ने सांप पर इलज़ाम लगाया -

02:09

खुदा ने सांप से कहा "तुम लानती हो , तुम पेट ले बल चला करोगे और मिटटी चाटोगे, तुम और औरत आपस में नफ़रत करोगे , और तम्हारी औलाद भी आपस में नफ़रत करेंगी, और औरत की नसल तुम्हारे सर को कुचलेगी और तू उसकी एड़ी को डसेगा "-

सांप पर ख़ुदा की लानत क्या थी ?

कि तू अपने पेट के बल चलेगा और औरत कि नस्ल तेरे सर को कुचलेगी -

---

02:10

खुदा ने फिर औरत से कहा,"मैं तेरे दर्द –ए –हमल को बहुत बढ़ाऊंगा और तेरी रग़बत अपने शौहर की तरफ़ होगी और वह तुझ पर हुकूमत करेगा "-

औरत पर ख़ुदा की लानत क्या थी ?

तू दर्द के साथ बच्चा जनेगी,और हालाँकि तेरी रग़बत अपने ख़ाविंद कि तरफ़ होगी ,और वह तुझ पर हुकूमत करेगा -

---

02:11

खुदा ने आदम से कहा " चूँकि तूने अपनी बीवी की बात मानी और मेरी बात नहीं मानी 'अब ज़मीन तेरे सबब से लानती हुई – तुझे फ़सल उगाने के लिए सख्त मेहनत करनी पड़ेगी – फिर तू मर जाएगा – तेरा जिस्म मिटटी में फिर से लौट जाएगा , आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा रखा जिसका मतलब है जिंदगी देने वाली - इसलिए कि वह तमाम लोगों की मां बनेगी – और खुदा ने आदम और हव्वा को जानवर के चमड़े के कुरते बनाकर ढांक दिया-

आदमी पर ख़ुदा की लानत क्या थी ?

तू मशक़्क़त के साथ खेती करेगा और तू मर जाएगा और ख़ाक में मिल जाएगा -

---

02:12

फिर खुदा ने कहा " देखो इंसान नेक व बद की पहचान में हम में से एक की मानिंद हो गया है ,उन्हें हयात के दरख़्त से खाने नहीं देना चाहिए जिसे खाकर वह हमेशा के लिये ज़िन्दा रहे , इसलिए खुदा ने आदम और हव्वा को बाग़ से निकाल दिया , खुदा ने बाग़ के मद्ख़ल पर पर एक ज़बरदस्त फ़रिश्ते को रखा ताकि हयात के दरख़्त में से कोई खाने न पाए -

आदम औरहव्वा को हमेशा तक ज़िन्दा रहने के लिए ख़ुदा ने किस तरह रोक लगा दी ?

ख़ुदा ने उन्हें बाग़ से बाहर कर दिया और उसके मद्कख़ल पर निहायत ज़ोरावर फ़रिश्तों को रखा कि हयात के दरख़्त की हिफ़ाज़त हो -

3. सैलाब

03:01

बहुत अरसा बाद दुनिया में बहुत से लोग रहते थे – वह शरारत पसंद और दहशत गर्द बन चुके थे – यह बहुत ही बुरा हुआ कि खुदा ने तमाम दुनिया को एक बड़े सैलाब के ज़रिये हलाक करने का फैसला किया -

ख़ुदा ने दुनिया को तबाह करने क फ़ैसला क्यूं किया ?

लोग बहुत बदकार और शरारत पसंद हो गए थे -

ख़ुदा ने दुनिया को तबाह करने के लिए क्या मंसूबा बनाया ? कि वह एक सैलाब भेजेगा -

---

03:02

मगर ख़ुदा नूह से ख़ुश था – वह एक रास्त्बाज़ शख्स था जो शरारत पसंद लोगों के बीच में रहता था – खुदा ने नूह से कहा कि वह ज़मीन पर बहुत बड़ा सैलाब लाने को है – इसलिए खुदा ने नूह से कहा कि एक बड़ी कश्ती की तामीर करे -

नूह ख़ुदा कि नज़र में क्यूं मक़्बूल हुआ ?

क्यूंकि वह एक रास्तबाज़ शख्स था -

03:03

खुदा ने नूह से कहा कि कश्ती 140 मीटर लम्बी, 23 मीटर चौड़ी और 13½ मीटर ऊंची होनी चाहिए – नूह को वह कश्ती लकड़ी की बनानी चाहिए थी जिस में तीन मंज़िल हो और कई सारे कमरे , छत और एक खिड़की हो - कश्ती नूह और उसका ख़ानदान और हर तरह के ज़मीनी जानवर को सैलाब के दौरान महफूज़ रखेगा -

ख़ुदा ने नूह से क्या करने को कहा ?

एक बड़ी कश्ती तैयार करे -

कश्ती बनाने का क्या मक़सद था ?

ताकि सैलाब के दौरान , नूह अपने ख़ानदान और जानवरों की हिफ़ाज़त करे -

03:04

नूह ने खुदा की बात मानी - उसने और उसके तीन बेटों ने मिलकर कश्ती की तामीर की , जिस तरह ख़ुदा ने उनसे तामीर करने को कहा था – कश्ती को तैयार करने में बहुत साल लग गए क्यूंकि वह बहुत बड़ी थी – सैलाब जो आने वाला था उसकी बाबत नूह ने लोगों को आगाही दी थी , ख़बरदार किया था और उनसे कहा कि खुदा की तरफ़ फिरें – मगर उनहोंने उसपर एतक़ाद नहीं किया -

जब नूह ने लोगों से कहा कि सैलाब आने वाला है तो लोगों का रद्दे-अमल क्या था ?

उन्होंने नूह का यक़ीन नहीं किया -

03:05

खुदा ने नूह और उसके ख़ानदान से यह भी कहा कि अपने लिए और जानवरों के लिए काफ़ी खुराक ज़खीरा करो – जब सब कुछ तय्यार था तब खुदा ने नूह से कहा अब वक़्त था कि वह और उसके तीन बेटे और उनकी बीवियां कश्ती में सवार हों ,यह सब आठ लोग थे -

---

03:06

खुदा ने हर एक जानवर में से नर और मादा , परिंदों में से कुछ नर और मादा नूह के पास भेजे थे ताकि वह कश्ती के अन्दर जाए और सैलाब के दौरान महफूज़ रहे –खुदा हर एक क़िस्म के जानवर और परिंदों के सात –सात जोड़े याने नर और मादा भेजे थे ताकि उनकी नसल क़ायम रहे और क़ुर्बानी के लिए इस्तेमाल हो – जब वह सब के सब कश्ती में अन्दर मौजूद थे तब ख़ुदा ने ख़ुद ही बाहर से कश्ती का दरवाज़ा बन्द कर दिया था -

सैलाब से पहले कश्ती में कौन से जानवर दाख़िल हुए ?

हर तरह के जानवर में से एक नर और एक मादा ,और परिंदों में से सात नर और सात मादा और पालतू जानवरों में से सात जोड़े ताकि क़ुर्बानी में इस्तेमाल हो सकें -

नूह का ख़ानदान और जानवरों के अन्दर दाख़िल होने के बाद कश्ती का दरवाज़ा किस ने बंद किया ?

ख़ुदा ने बाहर से दरवाज़ा बंद किया -

03:07

फिर बारिश शुरू होगई , और बारिश हुई , और बारिश हुई , पुरे चालीस दिन चालीस रात लगातार बिना रुके मोसलधार बारिश हुई ! पानी ज़मीन के ऊपर बढ़ता ही चला गया था – सारी दुनिया की चीज़ें पानी से ढंक गईं यहाँ तक कि ऊंचे – ऊंचे पहाड़ भी एक –एक करके डूबने लगे -

कितनी मुद्दत तक बारिश हुई ?

चालीस दिन और चालीस रात

03:08

सूखी ज़मीन पर जितने भी जानदार थे वह सब मर गए सिवाए उन लोगों और जानवरों के जो कश्ती में मौजूद थे – कश्ती पानी में तैरने लगी और हर एक चीज़ जो कश्ती के अन्दर थी वह डूबने से बच गयी -

सैलाब का पानी किस हद तक ऊँचा चढ़ा ?

सैलाब ने दुनिया की तमाम चीज़ों को ढँक दिया यहाँ तक कि सब से ऊँचे पहाड़ भी ढँक गए -

ज़मीन पर हर एक चीज़ का क्या हश्र हुआ ?

सब के सब मर मिट गए -

03:09

जब बारिश का गिरना बन्द हुआ तो कश्ती पांच महीने तक पानी में तैरती रही और उस दौरान पानी आहिस्ता –आहिस्ता घटना शुरू हुआ – फिर एक दिन कश्ती एक पहाड़ की चोटी पर जाकर टिक गया – मगर दुनिया अभी भी पानी से ढकी हुई थी , तीन महीने बाद पहाड़ों की चोटियाँ नज़र आने लगीं -

---

03:10

फिर और चालीस दिन बाद नूह ने एक कव्वे को उड़ाया यह देखने के लिए कि पानी कितना कुछ सूखा था – कव्वे को टिकने के लिए सूखी जगह नहीं मिली तो वो वापस आगया -

---

03:11

बाद में नूह ने एक फ़ाख़ते को उड़ाया –फ़ाक्ते को भी कोई सूखी ज़मीन न मिलने की वजह से वह नूह के पास वापस लौट आया – एक हफ़्ता बाद नूह ने उसी फ़ाक्ते को फिर से उड़ाया – अब की बार जब वह वापस उड़ कर आया तो उसकी चोंच में ज़ेतून का एक पत्ता था , जिससे ज़ाहिर था कि पानी घट रहा था और पेड़ पौधे बढ़ रहे थे

03:12

नूह ने एक और हफ़्ता इंतज़ार किया और उसने उसी फ़ाख़ते को तीसरी बार उड़ाया – इस बार उसको टिकने की जगह मिल गयी थी और वो वापस नहीं आया , और पानी भी बहुत जल्द सूखने लगा था !

नूह ने कैसे मालूम किया कि सैलाब का पानी सूख चुका है ?

उस ने एक फ़ाख़्ता को बाहर उड़ाया और वह वापस नहीं आई -

03:13

दो महीने बाद खुदा ने नूह से कहा कि अब तू और तेरा ख़ानदान और तमाम जानवर कश्ती से बाहर आ सकते हैं – तुम्हारे बचचे और नाती पोते हों और तुम ज़मीन को मामुर व- महकूम करो - सो नूह और उसका खान्दान् कश्ती से बाहर आया-

जब वह कश्ती से बाहर आए तो ख़ुदा ने नूह और उसके ख़ानदान से क्या करने को कहा ?

उसने उनसे कहा बहुत से बच्चे और नाती पोते पैदा करो और ज़मीन को मामूर करो -

---

03:14

नूह के कश्ती से बाहर आने के बाद उसने एक क़ुरबांन गाह बनाई और जानवरों में से कुछ को लेकर क़ुर्बानी चढ़ाई – खुदा उस क़ुर्बानी से ख़ुश था और उसने नूह और उसके खानदान को बरकत दी -

कश्ती से बाहर निकल आने के बाद नूह ने किस तरह ख़ुदा की परस्तिश की ?

उसने एक क़ुर्बान गाह बनाई और जानवरों में से कुछ लेकर ख़ुदा के लिए क़ुर्बानियाँ चढ़ाईं -

---

03:15

खुदा ने कहा मै वादा करता हूँ कि मैं ज़मीन पर लोगों को बुराई के सबब से लानत नहीं भेजूंगा या फिर दुनया को सैलाब से हलाक नहीं करूंगा , हालांकि लोग अपने बचपन से ही बुरे और गुनहगार हैं -

ख़ुदा ने क्या वायदा किया कि दोबारा वह इस काम को कभी नहीं करेगा ?

कि वह सैलाब के ज़रिये दुनिया को तबाह करने के लिए ज़मीन पर लानत नहीं भेजेगा -

---

03:16

खुदा ने अपने वादे की निशानी बतोर आसमान में पहली बार क़ोस –ए- क़ज़ह (कमान) को रखा – जब भी कभी आसमान में वह कमान नज़र आता है तो खुदा अपने लोगों की बाबत अपने वादे को याद करता है -

अपने वायदे कि निशानी के तौर पर उसने आसमान पर क्या बनाया ?

उसने आसमान पर एक क़ौस-ए-क़ज़:(कमान) को रखा -

4. अब्रहाम के साथ खुदा का मुआहदा

04:01

सैलाब के बहुत अरसा बाद फिर से बहुत से लोग दुनिया में थे – फिर उनहोंने खुदा के ख़िलाफ़ और एक दुसरे के साथ गुनाह किया – क्यूंकि उन सब की एक ही ज़बान थी वह सब मिलकर जमा हुए और एक शेहर तामीर की- बजाए इसके कि वह ज़मीन को मामूर करते जैसे खुदा ने उनको हुक्म दिया था -

सैलाब के बाद क्या लोगों ने ज़मीन को मामूर किया जैसे ख़ुदा ने उनको हुक्म दिया था ?

नहीं -बल्कि उन्होंने एक जगह जमा होकर एक शाहर की तामीर की -

उस वक़्त ज़मीन में कितनी क़िस्म की ज़ुबानें थीं?

उस वक़्त एक ही ज़ुबान थी -

04:02

वह बहुत घमंडी थे और वह खुदा के हुक्मों की फ़र्मान्बर्दारी नहीं करना चाहते थे इस मायने में कि किस तरह जिंदगी जीनी है, यहाँ तक कि उन्हों ने एक बहुत ही बुलंद बुर्ज बनाना शुरू किया जो आसमान को छूने जैसा था – खुदा ने देखा कि अगर वह मिलकर इस तरह बुराई करते जाएंगे तो वह और भी गुनहगारी के काम कर सकते थे -

ज़मीन को मामूर करने के बजाए लोगों ने एक साथ जमा होकर क्या किया ?

उन्होंने मिलकर एक ऊँचा बुर्ज बनाना शुरू किया जो आसमान को छू जाए -

---

04:03

सो खुदा ने उन की ज़बान में कई क़िस्म की इख़तिलाफ़ डाल दी और लोगों को पूरी दुनिया में फैला दिया – जिस शहर को उनहोंने बनाना शुरू किया था उसका नाम बाबुल था , जिसका मतलब है “गड़बड़ -“

ख़ुदा लोगों को पूरी दुनिया में फैल जाने के लिए क्या किया ?

उसने उनकी ज़ुबान में कई इख़्तिलाफ़ डाले कि वह मुख़्तलिफ़ ज़ुबानें बोलने लगे -

उस शहर का क्या नाम था जिसे वह तामीर कर रहे थे ?

बाबुल

“बाबुल” नाम के क्या मायने हैं ? गड़बड़ी

04:04

सदियों साल बाद खुदा ने एक शख्स से बात की जिस का नाम अब्राम था – खुदा ने उससे कहा “अपने मुल्क और अपने खानदान को छोड़कर निकल आ और उस मुल्क में चला जा जिसे मैं तुझे दिखाऊंगा – मैं तुझे बरकत दूंगा और तुझ से एक बड़ी क़ौम बनाऊंगा – मैं तेरा नाम सरफ़राज़ करूँगा – जो तुझे बरकत दे मैं उन्हें बरकत दूंगा , जो तुझ लानत दे मैं उन्हें लानत दूंगा –ज़मीन के तमाम ख़ानदान के लोग तेरे सबब से बरकत के हक़दार होंगे -

ख़ुदा ने अब्राम से क्या करने को कहा ?

ख़ुदा ने अब्राम से कहा कि तू अपने मुल्क और ख़ानदान को छोड़कर दूसरे मुल्क में जा -

खुदा ने अब्राम के लिए क्या करने का वायदा किया था ?

उसने अब्राम से वह सारे मुल्क देने का वायदा किया जो वह दूर से देख सकता था ताकि उसका नाम बड़ा हो -ताकि उसकी नस्ल से एक बड़ी क़ौम बनाए और उस के वसीले से ज़मीन के तमाम ख़ानदानों को बरकत दे -

---

04:05

सो अब्राम खुदा का हुक्म बजा लाया – उसने अपनी बीवी सारै को लिया – वह दोनों अपने तमाम नौकर चाकर और माल व असबाब के साथ जो उनके साथ था निकल पड़े और उस मुल्क को गए जिसे खुदा ने उसे दिखाया था – और वह जगह मुल्क –ए– कनान था -

अब्राम किस मुल्क को गया ?

मुल्क -ए- कनान को

04:06

जब अब्राम कनान में दाखिल हुआ तो खुदा ने कहा “तू अपने चारों तरफ़ देख- यह तमाम मुल्क मैं तुझे और तेरी नसल को दूंगा और वह इन सब के मालिक होंगे –फिर अब्राम उस मुल्क में सुकूनत करने लगा -

कनान की बाबत ख़ुदा ने अब्राम को क्या वायदा किया ?

ख़ुदा वह मुल्क अब्राम और उसकी नस्ल को एक मीरास बतौर देगा -

04:07

मलकी सिदक़ नाम का एक शख्स था जो ख़ुदा तआला का काहिन था – एक दिन अब्राम जंग से वापस लौटते वक़्त उस से मुलाक़ात की – मलकी सिदक़ ने अब्राम को बरकत दी और कहा "खुदा तआला की तरफ़ से जो आसमान और ज़मीन का मालिक है अब्राम मुबारक हो और मुबारक खुदा तआला जिसने तेरे दुशमनों को तेरे हाथ में कर दिया" – फिर अब्राम ने जंग में जो चीज़ें फ़ तेह करके हासिल की थीं उन सब का दसवां हिस्सा मलकी सिदक़ को दीं -

मल्किसिद्क़ कौन था ?

वह ख़ुदा तआला का काहिन था -

मल्किसिद्क़ ने अब्राम के लिए क्या किया ?

उसने अब्राम को बरकत दी -

अब्राम ने मल्किसिद्क़ को क्या दिया ?

जो कुछ उसका था उन सब का दसवां हिस्सा उसने मल्किसिद्क़ को दिया -

---

04:08

बहुत साल गुज़र गए अभी तक अब्राम और सारै के कोई बेटा या वारिस नहीं हुआ था – खुदा ने अब्राम से बात की और उसे एक बेटा इनायत करने का वादा किया जिससे कि उसकी नसल आस्मांन के तारों जैसी होगी –अब्राम ने ख़ुदा के वादों पर भरोसा किया – तब खुदा ने एलान किया कि अब्राम एक रास्त्बाज़ शख्स है क्यूंकि उसने खुदा के वादे पर भरोसा किया -

कई साल तक कनान में रहने के बाद ख़ुदा ने अब्राम से क्या वायदा किया ?

अब्राम का एक बेटा होगा और उसकी औलाद आसमान के तारों की मानिंद होगी -

ख़ुदा ने अब्राम को रास्तबाज़ क्यूं कहा ?

क्यूंकि अब्राम ख़ुदा के वायदे पर ईमान लाया था -

04:09

फिर खुदा ने अब्राम के साथ एक मुआहदा किया – आम तोर से एक मुआहदा दो जमाअत के दरमियान होता है कि वह मुस्तक़बिल में क्या कुछ करने वाले हैं – मगर इस मुआमले में खुदा ने अब्राम से तब वादा किया जब वह गहरी नींद में था – मगर अभी भी वह ख़ुदा की आवाज़ को सुन सकता था - खुदा ने कहा ,मैं तुझे तेरे ही सुल्ब से एक बेटा बख्शूंगा – और मुल्क –ए– कनान मैं तेरी नसल को देता हूँ – मगर अभी भी अब्राम के कोई बेटा नहीं हुआ था -

एक अहद क्या होता है ?

दो जमाअतों के बीच एक राज़ीनामा होता है

5 . वादे का बेटा

05:01

अब्राम और सारै के मुल्क –ए –कनान में पहुँचने के दस साल बाद उन के पास अभी भी कोई बच्चा नहीं था – सो अब्राम की बीवी सारै ने उससे कहा जबकि खुदा ने मुझको बच्चा होने से महरूम रखा है – अब मैं बूढ़ी भी हो चली हूँ कि बच्चा पैदा करने के क़ाबिल नहीं रही तो तू ऐसा कर कि मेरी मुलाज़िमा हाजिरा को ले – उससे भी शादी कर – ताकि वह मेरे लिए बच्चा पैदा करे -

सारै ने ऐसा क्यूं सोचा उसका बच्चा नहीं होगा ?

क्यूंकि वह बहुत बूढ़ी हो चुकी थी

एक बच्चा होने के लिए सारै ने अब्राम से क्या कहा ?

उसने कहा कि उसकी लौंडी हाजरा से शादी करले ताकि उस के लिए बच्चा हो -

---

05:02

सो अब्राम ने हाजरा से शादी की – हाजरा के एक लड़का हुआ और अब्राम ने उसका नाम इस्माईल रखा - मगर सारै हाजरा से हसद रखती थी – जब इस्माईल तेरह साल का हुआ तो खुदा ने फिर अब्राम से बातें की -

हाजरा के बच्चे का नाम क्या था ?

इस्माईल

सारै और हाजरा के बीच क्या परेशानी थी ?

सारै हाजरा से हसद रखने लगी -

05:03

खुदा ने कहा “मैं खुदावंद खुदा हूँ , मैं तुझ से एक अहद बान्धता हूँ – तब अब्राम खुदा के हुज़ूर सर निगूं हुआ –खुदा ने अब्राम से कहा “तू बहुत से क़ौमों का बाप होगा – मैं कनान का मुल्क मिलकियत बतोर तुझे और तेरी नसल को दूंगा –और मैं हमेशा के लिए उनका ख़ुदा हूँगा – सो तुम्हारे ख़ानदान में से हर एक फ़र्ज़न्द –ए– नरीना का ख़तना होना चाहिए -

कौन से अहद के वायदे ख़ुदा ने अब्राम से किये थे ?

यह कि अब्राम कई एक क़ौमों का बाप होगा और ख़ुदा उसको और उसकी नस्ल को कनान का मुल्क देगा -

ख़ुदा ने अब्राम से क्या कहा कि उन दोनों के बीच अहद का निशान क्या होगा ?

उसके ख़ानदान के हरेक फ़रज़न्दे नरीना का ख़तना हो -

05:04

तेरी बीवी सारै के एक बेटा होगा ---- वह वादा का बेटा होगा – उसका नाम इज़हाक़ रखना - मैं अपना मुआहदा उस से बांधूंगा – और उससे एक बड़ी क़ौम निकलेगी –इस्माईल से भी एक बड़ी क़ौम बनाऊंगा – पर मेरा मुआहादा इज़हाक़ से होगा – फिर खुदा ने अब्राम का नाम अब्राम से अब्रहाम रखा जिस के मायने हैं “बहुतों का बाप“ खुदा ने सारै का नाम भी बदलकर सारह रखा –जिस के मायने हैं “शहज़ादी”-

ख़ुदा ने किस के लिए कहा कि वह वायदे का बेटा कहलाएगा ?

इज़हाक़,सारा का बेटा

वह कौन था जिस से एक बड़ी क़ौम बनने वाली थी ?

इज़हाक़ और इस्माईल दोनों से

अब्राम का नया नाम क्या था ?अब्रहाम के क्या मायने हैं ?

बहुत सी कौमों का बाप -

05:05

जिस दिन अब्रहाम का खतना हुआ उसी दिन उस के घराने के सारे फ़र्ज़न्द –ए- नरीना का भी ख़तना हुआ –जब अब्रहाम 100 साल का था तब सारह की उमर 90 साल की थी – और सारह ने अब्रहाम का बेटा जनी –उनहोंने उसका नाम इज़हाक़ रखा जिस तरह खुदा ने उनसे कहा था -

---

05:06

जब इज़हाक़ जवान था तब खुदा ने अब्रहाम के ईमान की आज़माइश यह कहकर की कि “इज़हाक़ जो तेरा इकलौता बेटा है उसको ले और मेरे लिए क़ुर्बानी बतौर चढ़ा –“ सो फिर से एक बार अब्रहाम खुदा का हुक्म बजा लाने चला और अपने बेटे की क़ुर्बानी के लिए तैयारी की -

इज़्हाक़ जब लड़का ही था तो ख़ुदा ने उससे क्या करने को कहा ?

ख़ुदा ने अब्रहाम से कहा कि इज़्हाक़ को क़ुर्बानी बतौर नज़्र करे

ख़ुदा ने अब्रहाम से इज़्हाक़ की क़ुर्बानी क्यूँ चाही ?

ताकि अब्रहाम के ईमान की आज़माइश हो -

05:07

जब अब्रहाम और इज़हाक़ क़ुर्बानी की जगह की तरफ़ चलने लगे तो इज़हाक़ ने अब्रहाम से पूछा ,”ऐ बाप, हमारे पास क़ुर्बानी के लिए आग और लकड़ियाँ तो हैं ,मगर सोख्तनी क़ुर्बानी के लिए बर्रा कहाँ है ?

अब्रहाम ने इज़्हाक़ से क्या कहा कि उन के पास क़ुर्बानी के लिए बर्रा क्यूँ नहीं है ?

अब्रहाम ने कहा कि ख़ुदा ख़ुद ही क़ुर्बानी के लिए बर्रा मुहय्या करेगा -

---

05:08

जब वह क़ुर्बानी की जगह पर पहुंचे तो अब्रहाम ने अपने बेटे इज़हाक़ को बाँधा और उसको कुर्बान्गाह पर लिटाया – वह बस अपने बेटे पर छुरी चलाना ही चाहता था कि खुदा ने अब्रहाम का हाथ रोक कर कहा कि अपना हाथ लड़के पर न चला – अब मैं जानता हूँ कि तू मेरा खौफ़ मानता है क्यूंकि तूने अपने बेटे को भी जो तेरा इकलौता है मुझ से दरेग़ न किया -

क्या ख़ुदा चाहता था कि अब्रहाम इज़्हाक़ कि क़ुर्बानी दे ?

नहीं -वह सिर्फ़ यह देखना चाहता था कि अब्रहाम ख़ुदा का हुक्म बजा लाता है कि नहीं -

---

05:09

अब्रहाम ने अपने नज़दीक एक मेंढा देखा जिस के सींघ एक झाड़ी में अटके हुए थे - खुदा ने उस मेंढे को इज़हाक़ के बदले क़ुर्बानी चढ़ाने के लिए मुहैया किया था – अब्रहाम ने ब-ख़ुशी उस मेंढे को खुदा के लिए क़ुर्बानी बतौर चढ़ाया -

इज़्हाक़ के बदले में ख़ुदा ने क़ुर्बानी के लिए किसे मुहय्या किया ?

उसने एक मेंढा मुहैया किया जिस के सींग झाड़ी में अटके पड़े थे -

---

05:10

फिर ख़ुदा ने अब्रहाम से कहा “इस लिए कि तूने मेरे लिए सब कुछ देने को तैयार हुआ – यहाँ तक कि तूने अपने इकलौते बेटे को भी रख नहीं छोड़ा ,मैं तुझे बरकत पर बरकत देने का वादा करता हूँ – तेरी नसल आसमान के तारों से भी ज़ियादा होगी – क्यूंकि तू मेरा हुक्म बजा लाया – मैं दुनिया के तमाम कौमों पर तेरे ख़ानदान के वासिले से बरकत दूंगा “

अब्रहाम जब ख़ुदा का हुक्म बजा लाया तो ख़ुदा ने अब्रहाम के हक़ में क्या करने का वायदा किया ?

उस ने वायदा किया कि अब्रहाम की औलाद आसमान के तारों जैसी होगी और दुनिया के तमाम ख़ानदान उसके ख़ानदान के वसीले से बरकत पायेंगे -

6. खुदा इज़हाक़ के लिए शरीक –ए-हयात का इंतज़ाम करता है -

06:01

जब अब्रहाम बहुत ज़ियादा बूढ़ा हो गया तो इज़हाक़ जवान होने लगा था – सो अब्रहाम अपने नौकरों में से एक को बुलाकर अपने मुल्क में जहाँ उसके रिश्तेदार रहते थे भेजा कि उसके बेटे इज़हाक़ के लिए एक लड़की ढूंड कर ले आए ताकि उसकी बीवी बने -

अब्रहाम ने अपने नौकर को अपने मुल्क में उसके रिश्तेदारों के पास क्यूं भेजा ?

उसके बेटे इज़्हाक़ के लिए बीवी लाने के लिए -

06:02

एक लम्बा सफ़र तय करने के बाद अब्रहाम का नौकर उस मुल्क में जा पहुंचा जहाँ उसके रिश्तेदार रहते थे –खुदा ने उस नौकर को रिबेक़ा के घर की तरफ़ रहनुमाई की जहां वह अपने खानदान के साथ रहती थी –वह अब्रहाम के बड़े भाई की पोती थी -

नौकर ने रेबेक़ा को कैसे तलाश किया ?

ख़ुदा ने उसके घर कि तरफ़ रहनुमाई की -

अब्रहाम से रिबेक़ा की रिश्तेदारी कैसी थी ?

रिबेक़ा अब्रहाम के बड़े भाई की पोती थी -

06:03

रिबेक़ा को जब मालूम पड़ा कि अब्रहाम का नौकर अपने बेटे के लिए लड़की लेजाने के लिए आया है तो रिबेक़ा उस नौकर के साथ जाने के लिए राज़ी होगई – जैसे ही रिबेक़ा अब्रहाम के घर पहुंची जितना जल्द हो सकता था उतना ही जल्द इज़हाक़ ने उसके साथ शादी कर ली -

इज़्हाक़ से शादी करने के लिए क्या रिबेक़ा को नौकर के साथ ज़बरदस्ती भेजा गया था ?

नहीं -वह जाने के लिए राज़ी थी -

06:04

एक लम्बे अर्से के बाद अब्रहाम की मौत हो गई – फिर खुदा ने इज़हाक़ को बरकत दी इसलिए कि उसने अब्रहाम से मुआहदा बाँधा था इन मुआहदों में से एक वादा जो खुदा ने अब्रहाम से किया था वह था अनगिनत बेशुमार नसल मगर इज़हाक़ की बीवी रिबेक़ा के बचचे न हो सके थे -

ख़ुदा के कौनसे वायदे इज़्हाक़ को पहुंचे जब अब्रहाम मरा था ?

वह तमाम वायदे जो ख़ुदा ने अब्रहाम से किये थे जिस में यह भी शामिल है कि उसकी औलाद बे शुमार होंगी -

उसकी औलाद बे शुमार होने का वायदा इज़्हाक़ के ज़रिये से पूरा होते हुए क्यूँ नज़र नहीं आया ?

इसलिए कि रिबेक़ा के बच्चे नहीं हो सकते थे -

06:05

मगर इज़हाक़ ने रिबेक़ा के लिए खुदा से दुआ की और खुदा ने रिबेक़ा के हक़ में इज़हाक़ की दुआ क़बूल की और वह हामिला हुई – उसके पेट में तवाम थे यानी जुड़वा बचचे – वह दोनों बच्चे पेट के अन्दर ही एक दूदरे से लड़ाई कर रहे थे तो रिबेक़ा ने ख़ुदा से पूछा कि मेरे पेट में यह क्या हो रहा है ?

06:06

खुदा ने रिबेक़ा से कहा “तुम दो बेटों को जन्म देने जा रही हो “ उन दोनों की नस्लें दो बड़ी मुख्तलिफ़ क़ौमें होंगी वह दोनों एक दूसरे के दुश्मन होंगे – वह दोनों आपस में लड़ेंगे – मगर जो क़ौम तेरे छोटे बेटे की होगी वह तेरे बड़े बेटे की क़ौम पर हावी हो जाएगी -

ख़ुदा ने रिबेक़ा से उसके जुड़वे बेटों की बाबत उनके पैदा होने से पहले क्या कहा था ?

वह दोनों एक बहुत बड़ी क़ौमें होंगी और बड़ा बेटा छोटे कि ख़िदमत करेगा -

---

06:07

जब रिबेक़ा के बच्चे पैदा हुए थे तो बड़ा लाल रंग का और रुएं दार था यानी उसके पुरे जिस्म में बाल ही बाल थे , और उसका नाम एसाव रखा गया – फिर जब छोटा पैदा हुआ तो वह एसाव की एड़ी को पकड़ा हुआ था –उनहों ने उसका नाम याक़ूब रखा -

बड़े बेटे का क्या नाम था ?

एसाव

छोटे बेटे का क्या नाम था ?

याक़ूब

7. खुदा याक़ूब को बरकत देता है

07:01

जैसे जैसे दोनों लड़के बड़े होते गए याक़ूब को घर पर ही रहना पसंद था मगर एसाव को जानवरों का शिकार करना पसंद था – रिबेक़ा याक़ूब से कुछ ज़ियादा ही मोहब्बत रखती थी , मगर इज़हाक एसाव से मोहब्बत रखता था -

---

07:02

एक दिन एसाव जब शिकार से लौटा तो वह बहुत भूका था ,एसाव ने याक़ूब से कहा जो तूने अपने लिए खाना बनाया है उसमें से थोड़ा मुझे दे दे – याक़ूब ने जवाब दिया कि पहले तुम मुझ से वादा करो कि अपने पह्लोठे होने का हक़ मुझे दे दोगे ? – सो एसाव ने वादा किया कि मैं तुझे वह सारी चीज़ें जो फ्लोठे होने के हक़ में है तुझे दे दूंगा – फिर याक़ूब ने अपने खाने में से थोड़ा एसाव को दे दिया -

छोटे बेटे याकूब ने किस तरह बड़े बेटे का सारा हक़ छीना ?

एसाव ने याक़ूब को अपने पह्लोठे होने के हक़ को कुछ खाने के बदले में बेच डाला -

---

07:03

दूसरी तरफ़ इज़हाक अपनी बरकत एसाव को देना चाहता था मगर उसके बरकत देने से पहले ही रिबका और याक़ूब ने चालाकी करी – याक़ूब ने खुद को एसाव जैसा बना लिया, उसके कपड़े पहन लिए , उसने जानवर के बाल अपनी गर्दन और हाथ में चिपका लिए , अब इसलिए कि इज़हाक़ की आँखें धुंदला गयी थीं , वह उसको पहचान न सका -

इज़्हाक़ अपनी बरकतें जो कि रस्मोरिवाज के मुताबिक़ थीं किसको देना चाहता था ?

एसाव को

इज़्हाक़ से एसाव कि बरकतें लेने में याक़ूब ने किस तरह कि चालाकी की ?

याक़ूब बकरी के बालों की खाल पहन कर इज़्हाक़ के पास गया ताकि वह एसाव जैसा दिखे -

---

07:04

याक़ूब इज़हाक़ के पास आया और कहा कि "मैं एसाव हूँ ,मैं इसलिए आया हूँ कि तू मुझे बरकत दे –जब इज़हाक़ ने याक़ूब को टटोला और उसके कपड़े सूंघे तो ऐसा लगा कि वह एसाव है और उसे बरकत दे दी -

---

07:05

एसाव याक़ूब से नफ़रत करने लगा क्यूंकि उसने पह्लोठे होने का हक़ छीन लिया था और उसकी बरकतें भी ले ली थी जो सबसे बड़े बेटे को दी जाती थी, सो उसने याक़ूब को उसके बाप के मरने के बाद हलाक करने का मंसूबा बाँधा -

इसलिए कि याक़ूब ने एसाव की बरकतों को चुरा लिया था तो एसाव ने याक़ूब के साथ क्या करने का मंसूबा किया ?

एसाव ने याक़ूब को इज़्हाक़ के मरने के बाद हलाक करने का मंसूबा बनाया -

---

07:06

मगर रिबक़ा ने एसाव के मंसूबे को मालूम कर लिया था फिर रिबेक़ा और इज़हाक़ दोनों ने मिल्कर याकूब को रेबेक़ा के रिश्तेदारों के पास दूर भेज दिया-

याक़ूब को हलाक करने कि बाबत जब रिबेक़ा ने एसाव के मनसूबे को चुपके से सुना तो रिबेक़ा और इज़्हाक़ ने क्या किया ?

उन्होंने याक़ूब को रिबेक़ा के रिश्तेदारों के पास दूर भेज दिया -

---

07:07

याक़ूब रिबेक़ा के रिश्तेदारों के पास बहुत सालों तक रहा – उसी दौरान याक़ूब ने दो शादियाँ की और उसके बारह बेटे और एक बेटी पैदा हुईं –खुदा ने याक़ूब को बरकत दी और वह बहुत बड़ा दौलतमंद शख्स बन गया -

अगले बीस सालों के दौरान याक़ूब के साथ क्या कुछ हुआ ?

उसने शादी करली थी और बारह बेटे थे और एक बेटी थी और ख़ुदा ने उसको दौलतमंद बना दिया था -

---

07:08

बीस साल तक याक़ूब अपने मांबाप के घर से यानि कनान से दूर था – फिर याक़ूब अपने ख़ानदान में वापस आया – मगर अब वह अकेला नहीं था – उसके साथ उसका पूरा ख़ानदान था ,जानवरों के रेवड़ थे, नौकर चाकर थे -

---

07:09

मगर याक़ूब अभी भी अपने भाई एसाव से डरता था –क्यूंकि वह सोचता था कि एसाव अभी भी उसको हलाक करना चाहता था – सो उसने बहुत से जानवर अपने नौकरों के हाथ भिजवाए – नौकरों ने एसाव से कहा कि “आप का ग़ुलाम याक़ूब ने यह सारे जानवर आपको देने के लिए कहा है और वह बहुत जल्द यहाँ तशरीफ़ ला रहें हैं -

याकूब जब कनान लौटा तो क्यूँ डर रहा था ?

उस ने सोचा कि एसाव उसको मार डालेगा -

याक़ूब ने एसाव के ग़ुस्से को ठंडा करने के लिए क्या किया ?

उसने एसाव को जानवरों के ग़ोल इनाम बतौर पेश किये -

07:10

मगर एसाव ने याक़ूब को हलाक करने की मंशा छोड़ दी थी – इस के बदले में वह याक़ूब से दुबारा मिलने की आरज़ू रखता था –जब याक़ूब को मालूम पड़ा कि एसाव उससे सुलह का आरज़ू रखता है तो वह ख़ुश हुआ और इतमीनान और तसल्ली से मुल्क –ए – कनान में अपने खानदान के साथ रहने लगा था –फिर इज़हाक़ की जब मौत हुई तो दोनों ने मिलकर अपने बाप को मिटटी दी –ख़ुदा का मुआहदा और वादे जो उसने अब्रहाम से किए थे वह अब इज़हाक़ और याक़ूब में पूरे होने वाले थे -

क्या एसाव अभी भी याक़ूब से नाराज़ था ?

नहीं , उसने पहले से ही उसको मुआफ़ कर दिया था -

याक़ूब कहाँ रहने लगा था ?

कनान में

इज़्हाक़ के मरने के बाद अहद के वायदों को जो असलियत में अब्रहाम को दिया गया था किसने हासिल किया ?

याक़ूब ने

8. खुदा यूसुफ़ और उसके खानदान को बचाता है

08:01

कई सालों बाद जब याक़ूब बूढ़ा हो चुका तो उसने अपने चाहेते बेटे यूसुफ़ को यह कहला कर भेजा कि अपने भाइयों को देखकर आना की वह गल्ला चरा रहे थे कि नहीं – कि वह ठीक से गल्ले की रखवाली कर रहे हैं कि नहीं -

---

08:02

यूसुफ़ के भाई युसूफ से नफ़रत करते थे क्यूंकि उनका बाप याक़ूब बहुत ज़ियादा युसुफ़ से महब्बत रखता था –इसलिए भी कि युसूफ ने ख़ाब देखा था कि वह उनका हाकिम बननें वाला था जब यूसुफ़ अपने भाइयों के पास आया तो उनहोंने उसको अग़वा कर लिया और उसको सौदागरों के हाथ ग़ुलाम बतौर बेच डाला -

यूसुफ़ के भाई उससे क्यूँ नफ़रत रखते थे ?

क्यूंकि यूसुफ़ याक़ूब का चहेता बेटा था और यूसुफ़ ने ख़्वाब में देखा था कि वह उनका हाकिम ठहरेगा -

यूसुफ़ के भाइयों ने उस के साथ क्या बुराई की ?

उन्होंने उसको अग़वा कर लिया और ग़ुलामों के सौदागरों के हाथ बेच दिया -

---

08:03

यूसुफ़ के भाई शाम को घर पहुँचने से पहले युसूफ के बु क़ल्मून क़बा को बकरे के खून में डुबोया और जाकर अपने बाप से कहने लगे कि यूसुफ़ को किसी जानवर ने हलाक कर दिया और सबूत बतौर उसके पहने हुए खून से सने कपड़े दिखाए – इसे सुनकर याक़ूब खस्ताहाल हो गया और दिल में बहुत ज़ियादा रंज किया -

यूसुफ़ के भाइयों ने याक़ूब को उसके ग़ायब होने की ख़बर कैसे दी ?

उन्होंने यूसुफ़ के कपड़ों को बकरी के ख़ून से सनाया और याक़ूब को दिखाया ताकि वह सोचे कि किसी जंगली जानवर ने उसे खा लिया -

---

08:04

गुलामों के सौदागर यूसुफ़ को मिस्र ले गए – मिस्र उस ज़माने का बहुत बड़ा और ज़बरदस्त मुल्क था जो दर्याए नील के किनारे पर वाक़े था – सौदागरों ने यूसुफ़ को एक दौलतमंद सरकारी अफ़सर के हाथों बेच दिया – यूसुफ़ ने अपने मालिक की बहुत ईमानदारी से ख़िदमत की और खुदा ने यूदुफ़ को बरकत दी -

मिस्र में क्या ख़ुदा ने यूसुफ़ को छोड़ दिया था ?

नहीं - बल्कि हर बात में ख़ुदा ने यूसुफ़ को बरकत दी -

08:05

उसके मालिक की बीवी यूसुफ़ को अपने साथ अपने बिस्तर में सुलाना चाहती थी – मगर यूसुफ़ ने इनकार किया कि ऐसा करके वह ख़ुदा के ख़िलाफ़ गुनाह नहीं करेगा –अंजाम बतौर वो यूसुफ़ से ग़ुस्सा हुई और यूसुफ़ पर झूठा इल्ज़ाम लगाकर गिरफ़्तार कराया और क़ैद ख़ाने में डलवा दिया – मगर यूसुफ़ खुदा की नज़र में वफ़ादार रहा और खुदा ने उसको क़ैद ख़ाने में भी बरकत दी -

मिस्र में यूसुफ़ को क़ैद खाने में क्यूँ भेज दिया था ?

यूसुफ़ ने अपनी मालकिन के साथ सोने से इनकार कर दिया था , इसपर उसने यूसुफ़ पर झूठा इलज़ाम लगाया और क़ैद खाने में डलवा दिया -

---

08:06

दो साल बाद यूसुफ़ अभी भी क़ैद में ही था – हालांकि वह बे क़ुसूर था – एक दिन “फ़िरोन” जिसे मिसरी लोग अपना बादशाह मानते थे उसने दो ख़ाब देखे जिसे देखकर बाद्शाह अपने आप में बहुत ही परेशान था –बादशाह के सलाहकारों में से कोई भी इस क़ाबिल नहीं था कि वह उसके दो खाबों की ताबीर बयान कर सके -

---

08:07

खुदा ने यूसुफ़ को किसी के भी ख़ाब की ताबीर बयान करने की क़ाबिलियत अता कर रखी थी – जब यह बात फ़िरोन को मालूम पड़ी तो उसने यूसुफ़ को क़ैद ख़ाने से बुलवा भेजा – यूसुफ़ ने फ़िरोन के ख़ाबों की ताबीर सही मायनों में कह सुनाया और कहा “कि आने वाले सात सालों में खुदा कसरत की फ़सल भेजने वाला है मगर उसके आगे दुसरे सात बरसों में बहुत ही होलनाक क़हत भी –“

ख़ुदा ने यूसुफ़ में कौनसी ख़ासियत दी थी ?

ख़्वाबों की ताबीर बताने की क़ाबिलियत -

फ़िरौन के ख़्वाब का क्या मतलब था ?

ख़ुदा मौजूदा सात सालों में इफ़रात की फ़स्ल देने वाला था और इसी तरह दूसरे सात सालों में क़हत(सूखा) -

---

08:08

फ़िरोन यूसुफ़ से बहुत ज़ियादा मुतास्सिर हुआ और उसको तमाम मुल्क –ए- मिस्र का वज़ीर –ए- आज़म मुक़र्रर किया -

फ़िरौन ने यूसुफ़ को अपने ख़्वाब की ताबीर के लिए क्या इनाम पेश किया ?

उसने यूसुफ़ को मिस्र के दूसरे नंबर का हाकिम बना दिया -

08:09

यूसुफ़ ने सरकारी ज़खीरा करने वालों से कहा कि हाल के सात बरसों में जो कसरत से फ़सल होने वाली है जितना ज़ियादा हो सके उतना अनाज का ज़खीरा कर लें – फिर दुसरे सात बरसों में जो क़हत साली के अय्याम थे उनमें यूसुफ़ ने गरीबों को रिआयती दामों पर अनाज बेचा ताकि लोग बगैर किसी दिक्क़त के अनाज खरीद सकें -

यूसुफ़ ने सात साल के क़हत के लिए क्या तय्यारियाँ कीं ?

यूसुफ़ ने मिस्रियों से कहा कि सात सालों के अच्छे फ़स्ल के दौरान ज़ियादा खूराक अपने गोदामों में भर लें और क़हत के सात सालों के दौरान उन्हें बेच दें -

---

08:10

यह क़हत के साल न सिर्फ़ मिस्र में निहायत सख्त थे बल्कि कनान में भी जहाँ याक़ूब का ख़ानदान रहता था -

---

08:11

सो याक़ूब ने भी अपने बड़े बेटों को अनाज खरीदने के लिए मिस्र भेजा – उसके भाइयों ने यूसुफ़ को नहीं पहचाना जब वह अनाज खरीदते वक़्त उनके सामने खड़ा था ,मगर यूसुफ़ ने उन्हें पहचान लिया था -

यूसुफ़ के भाई मिस्र क्यूँ आए थे ?

वह अनाज खरीदने आए थे क्यूंकि कनान में भी क़हत बहुत भारी था -

08:12

यूसुफ़ उन्हें जांचने के बाद कि वह बदल चुके हैं या नहीं यूसुफ़ ने अपना तआरुफ़ अपने भाइयों के सामने कराया – उसने उनसे कहा “मैं तुम्हारा भाई यूसुफ़ हूँ ! डरो मत, तुमने तो मेरे साथ बुराई की और मुझे गुलाम बनाकर बेच दिया था – मगर खुदा ने उसी बुराई को भलाई में बदल दिया - अब तुम अपने बाप को लेकर मिस्र आ जाओ ताकि मैं हमेशा के लिए पुरे खानदान के वास्ते ख़ुराक मुहैय्या करता रहूँगा “-

यूसुफ़ अपने भाइयों को यह बताने से पहले कि वह कौन था वह क्यूँ उन का इम्तिहान लेना चाहता था ?

वह उन का इम्तिहान लेना चाहता था कि वह बदल गए हैं कि नहीं -

यूसुफ़ के भाइयों ने जो उस को ग़ुलाम बतौर बेचा था उस के बदले में ख़ुदा ने उनपर किस तरह भलाई ज़ाहिर की ?

यूसुफ़ मिस्र में एक इक़तिदार वाला हाकिम बन गया था और ख़ुदा ने उसे इस्तेमाल किया कि उसके ख़ानदान को और दीगर लोगों को क़हत के दौरान ख़ुराक मुहय्या करे -

---

08:13

जब यूसुफ़ के भाई घर लौटे तो उनहोंने अपने बाप से कहा कि यूसुफ़ अभी तक जिंदा है – यूसुफ़ यह सुनकर फूला न समाया -

---

08:14

हालांकि याक़ूब बूढ़ा हो चुका था - इसके बावजूद भी वह अपने पूरे खानदान के साथ मिस्र को रवाना हुआ और वह सब के सब मिस्र में सुकूनत करने लगे –याक़ूब ने अपने मरने से पहले तमाम बेटों को बरकत दी -

जब याक़ूब को मालूम पड़ा कि यूसुफ़ ज़िन्दा था तो याक़ूब ने क्या किया ?

वह अपने पूरे ख़ानदान के साथ मिस्र को रवाना हुआ -

08:15

वह मुआहादे के वादेजो जो खुदा ने अब्रहाम को दिए थे वह इज़हाक़ में फिर याक़ूब में और फिर याक़ूब से उसके बारह बेटों और उनके खानदानों में पहुंचा – उन बारह बेटों की नस्लें बनी इस्राएल के बारह क़बीलों में तक़सीम हुए -

याक़ूब के मरने के बाद ख़ुदा के वायदों को जो उसने अब्रहाम को दिए थे किसने हासिल किया ?

याक़ूब के बारह बेटों ने -

याक़ूब के बारह बेटों की औलाद क्या बन गए थे ?

बनी इस्राईल के बारह क़बीले -

9.खुदा मूसा को बुलाता है

09:01

यूसुफ़ के मरने के बाद उसके तमाम रिश्तेदार मिस्र में रहते थे –वह और उसकी नस्लें मिस्र में कई सालों तक रहे –और उनके कई बचचे पैदा हुए – वह बनी इस्राएल कहलाए -

---

09:02

सदियों साल बाद बनी इस्राएल का शुमार बहुत ही ज़ियादा होगया था –मिसरी लोगों की नई पीढ़ी यूसुफ़ के एहसानों को भूल चुके थे जो उसने उनके लिए किया था –अब वह लोग बनी इस्राईल की बड़ी क़ौम से खौफ़ खाने लगे थे इसलिए फ़िरोन जो उस वक़्त मिस्र में हुकूमत करता था उसने बनी इस्राईल को मिस्रियों का ग़ुलाम बना लिया था -

मिस्री लोग बनी इस्राईल से क्यूँ डरते थे ?

क्यूंकि बनी इस्राईल शुमार में बहत ज़ियादा थे -

मिस्रियों लोग जब उनसे डरते थे तो फ़िरौन ने क्या किया ?

उसने उनको मिस्रियों का ग़ुलाम बना दिया -

09:03

मिसरियों ने बनी इस्राईल कौम को मजबूर किया कि वह उनके लिए इमारतें बनाएं और यहाँ तक कि एक पूरे शहर की तामीर करें – उनकी कड़ी मेहनत और मशक़त ने उनकी जिंदगियों को शिकस्ता हाल और रंजीदा कर दिया था- मगर खुदा उनको बरकत देता रहा और उनके बचचे भी होते गए -

---

09:04

फ़िरोन ने देखा कि बनी इस्राईल के बहुत से बचचे हैं और उन का शुमार बढ़ रहा है तो उसने हुक्म जारी किया कि बनी इस्राईल के तमाम छोटे बचचों को क़त्ल करके नील नदी में फ़ेंक दिया जाए -

फ़िरौन ने बनी इस्राईल की बढ़ती हुई तादाद को कम करने की कोशिश कैसे की ?

उस ने हुक्म जारी किया कि जो भी इस्राईल में बच्चा पैदा हो उसे दरिया -ए- नील में फेंक दिया जाए -

---

09:05

किसी इस्राईली औरत ने एक लड़के को जन्म दिया – वह और उसके शौहर ने फ़िरोन के डर से जितना उन से बन पड़ता था उतना लड़के को छिपाया -

---

09:06

जब लड़के के मांबाप आगे को छिपा नहीं सकते थे तो उनहोंने एक सरकंडे की टोकरी बनाई और नील नदी के किनारे बहा दिया ताकि क़त्ल होने से बच जाए – और उस बचचे की बड़ी बहिन से कहा कि उसपर नज़र रखे कि उसका क्या हाल होता है -

उस लड़के बच्चे का क्या हुआ जिसे टोकरी में रखकर नदी में बहा दिया गया था ?

फ़िरौन की बेटी ने उसे देखा , उसे अपना बेटा बना कर महल में ले गई और उसे मूसा नाम दिया -

---

09:07

फ़िरोन की बेटी जो नदी की सैर करने अपनी सहेलियों के साथ आई थी उस टोकरी में बचचे को देखातो वह उस बचचे से बहुत मुतास्सर हुई और उसको अपना बच्चा बना लिया – उसने एक दाई को मुक़र्रर किया मगर वह नहीं जानती थी कि वह उसकी असली मां थी –जब बच्चा बड़ा होगया और उसको मां के दूध की ज़रूरत नहीं थी तो मां ने उस बचचे को फ़िरोन की बेटी के हाथ सुपुर्द करदी –फ़िरोन की बेटी के हाथ सुपुर्द करदी -

उस लड़के बच्चे का क्या हुआ जिसे टोकरी में रखकर नदी में बहा दिया गया था ?

फ़िरौन कि बेटी ने उसे देखा , उसे अपना बेटा बनाकर महल में ले गई और उसे मूसा नाम दिया -

---

09:08

जब मूसा जवान हो चुका तो उसने एक दिन एक मिसरी को देखा की वह इस्राईली ग़ुलाम की मार पीट कर रहा था –मूसा ने उस इस्राईली को बचाने की ग़रज़ से बीच बचाव् करने की कोशिश की -

मूसा ने अपने एक साथी इस्राईली को बचाने के लिए क्या किया ?

उसने एक मिस्री को हलाक कर दिया जो इस्राईली को मार रहा था और उसकी लाश को ज़मीन में गाड़ दिया -

---

09:09

जब मूसा ने देखा कि कोई उसे नहीं देख रहा था तो उसने उस मिसरी को मार डाला और उसके मुर्दा जिस्म को ज़मीन में दफ़न कर दिया मगर किसी ने देख लिया था कि मुसा ने क्या किया था -

मूसा ने अपने एक साथी इस्राईली को बचाने के लिए क्या किया ?

उसने एक मिस्री को हलाक कर दिया जो इस्राईली को मार रहा था और उसकी लाश को ज़मीन में गाड़ दिया -

---

09:10

इसकी ख़बर फ़िरोन तक पहुँच गयी थी कि मूसा ने क्या किया था – फ़िरोन ने मूसा को हलाक करने की कोशिश की मगर मूसा मिस्र से भाग कर बयाबान में चला गया – फ़िरोन के सिपाही मूसा को ढूंढ नहीं पाए -

मूसा को मिस्र से क्यूँ भागना पड़ा ?

जब फ़िरौन को मालूम पड़ा कि मूसा ने एक मिस्री को हलाक किया है तो फ़िरौन मूसा को मारना चाहता था -

फ़िरौन से बचने के लिए मूसा कहां चला गया ?

वह बयाबान में चला गया -

09:11

मिस्र से बहुत दूर एक बयाबान में मूसा ने एक चरवाहे का काम ढूंढ लिया और वह एक चरवाहा बन गया – वहीँ पर उसने शादी भी करली और उसके दो बचचे भी हो गये -

---

09:12

मूसा अपने ससुर के भेड़ों को चरा रहा था – एक दिन उसने क्या देखा कि एक झाड़ी में आग लगी हुई थी –मगर वह झाड़ी आग से भसम नहीं हो रही थी – मूसा झाड़ी के बिलकुल नज़दीक गया यह देखने के लिए कि वह झाड़ी भस्म क्यूँ नहीं होती – जब वह झाड़ी के क़रीब गया तब खुदा ने उससे बात की और कहा "मूसा अपनी जूतियां उतार दो क्यूंकि जहाँ तू खड़ा है वह मुक़द्दस ज़मीन है –"

बयाबान में जब मूसा अपने भेड़ों की रखवाली कर रहा था तो उसने कौनसी ग़ैर मामूली चीज़ देखी ?

उसने एक जलती हुई झाड़ी देखी मगर वह जलकर राख नहीं होती थी -

जब मूसा जलती हुई झाडी के पास पहुंचा तो ख़ुदा ने मूसा से क्या कहा ?

ख़ुदा ने कहा ,"मूसा ,अपनी जूतियां उतार दे , क्यूंकि तू एक मुक़द्दस ज़मीन पर खड़ा है" -

---

09:13

खुदा ने कहा "मैं ने अपने लोगों के दुःख तकलीफ़ देखें हैं –मैं तुझे फ़िरोन के पास भेजूंगा ताकि तू बनी इस्राईल को उनकी ग़ुलामी से छुड़ा कर मिस्र से बाहर ला सके –मैं उनको कनान का मुल्क दूंगा ,वह मुल्क जिसको देने के लिए मैं ने अब्रहाम , इज़हाक़ और याक़ूब से वादा किया था -

हम कैसे जानते हैं कि ख़ुदा बनी इस्राईल की परवाह करता था ?

ख़ुदा ने मूसा से कहा "मैं ने अपने लोगों के दुःख को देखा है"-

ख़ुदा ने मूसा से क्या कहा कि वह बनी इस्राईल के लिए क्या करना चाहता है ?

ख़ुदा ने मूसा से कहा कि फ़िरौन के पास जाकर बनी इस्राईल को मिस्र की ग़ुलामी से छुड़ा कर ले आओ -

ख़ुदा ने बनी इस्राईल को कौनसा मुल्क देने के लिए कहा ?

मुल्क -ए- कनान की ज़मीन थी जिसको देने का वायदा ख़ुदा ने अब्रहाम , इज़्हाक़ और याक़ूब से किया था -

09:14

मूसा ने खुदा से पूछा “लोग जब मुझ से पूछेंगे कि तुझे किसने भेजा तो मुझे क्या जवाब देना होगा “? ख़ुदा ने कहा“मैं जो हूँ –सो मैं हूँ “सो तू बनी इस्राईल से यूँ कहना कि “मैं जो हूँ ‘ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है –“उनसे यह भी कहना कि मैं यह्वे हूँ , तुम्हारे बाप दादा अब्रहाम, इज़हाक़ , और याक़ूब का खुदा – अबद तक मेरा यही नाम है -

ख़ुदा ने अपने किस नाम के लिए कहा था कि वह हमेशा के लिए रहेगा ?

यहोवा का नाम -

09:15

मूसा डरा हुआ था , और वापस फ़िरोन के पास नहीं जाना चाहता था ,क्यूंकि उसने सोचा कि वह ठीक से बोल नहीं सकता था- मगर खुदा ने कहा तेरा भाई हारुन बोलने में तुम्हारी मदद करेगा –“

ख़ुदा ने मूसा कि मदद के लिए किसको भेजा ?

ख़ुदा ने मूसा के भाई हारुन को उसकी मदद के लिए भेजा -

ख़ुदा ने क्या कहा कि फ़िरौन मूसा और हारुन की बात का कैसा रद्दे अमल पेश करेगा ? फ़िरोन सख़्त हो जाएगा -

10 . दस वाबाएं

10:01

खुदा ने मूसा और हारुन को पहले से ही ख़बरदार कर दिया था कि फ़िरोन सख्त हो जाएगा – जब वह फ़िरोन के पास गए तो उन्हों ने कहा “बनी इस्राईल का खुदा यूँ फरमाता है कि मेरे लोगों को जाने दे “- मगर फ़िरोन ने उनकी नहीं सुनी –बजाए इसके कि बनी इस्राईल को आज़ादी से जाने देता , उसने उन्हें मजबूर किया कि और ज़ियादा कड़ी मेहनत से काम करें -

ख़ुदा का क्या पैग़ाम था जो मूसा और हारुन ने फ़िरौन को दिया ?

उन्होंने कहा “मेरे लोगों को जाने दो”!

फ़िरौन ने जब इस फ़रमान को सुना तो उसने क्या किया ?

उसने बनी इस्राईल को और ज़ियादा मशक़्क़त से काम करने पर मजबूर किया -

---

10:02

फ़िरोन लोगों को जाने से इनकार करता रहा ,तब खुदा ने मिस्र पर दस दहशतनाक वाबाएं भेजीं – इन वाबाओं के ज़रिए ख़ुदा ने फ़िरोन को बताया कि वह फ़िरोन से और तमाम मिसरी देवताओं से ज़ोरावर है-

फ़िरौन ने जब बनी इस्राईल को जाने नहीं दिया तो ख़ुदा ने क्या किया ?

उसने मिस्र पर दस हौल्नाक वबाएं भेजीं -

इन वबाओं के ज़रिये ख़ुदा फ़िरौन को क्या बताना चाहता था ?

कि वह फ़िरौन से और दीगर मिस्री देवताओं से बहुत ज़ियादा ज़ोरावर है -

---

10:03

खुदा ने नील नदी के पानी को खून में बदल डाला –इसके बावजूद भी फ़िरोन ने बनी इस्राईल को जाने नहीं दिया -

ख़ुदा ने नील नदी के पानी को क्या किया ?

ख़ुदा ने नील नदी के सारे पानी को ख़ून में बदल दिया -

10:04

फिर खुदा ने तमाम मुल्क–ए-मिस्र में मेंडक भेजे –सब जगह मेंडक ही मेंडक नज़र आते थे – तब फ़िरोन ने मूसा से गिड़गिड़ाया कि उन मेंदकों को हटा ले – मूसा ने उनकी बात मां ली – इसपर सारे मेंडक मर तो गए थे मगर फ़िरोन ने अपना दिल सख्त कर लिया और बनी इस्राईल को जाने नहीं दिया -

---

10:05

फिर ख़ुदा ने मच्छरों की वबा भेजी –फिर उसने मक्खियों की वबा भेजी –फ़िरोन ने मूसा और हारुन को बुला भेजा ,उसने उनसे कहा कि “अगर वह इस वबा को दूर करते हैं तो बनी इस्राईल मिस्र छोड़ सकते हैं – जब मूसा ने खुदा से दुआ की तो खुदा ने मुल्क–ए-मिस्र से तमाम मक्खियों – को दूर किया मगर जब मक्खियाँ दूर हुईं तो फ़िरोन नेने अपना दिल फिर से सख्त किया और बनी इस्राईल को जाने नहीं दिया -

---

10:06

फिर खुदा ने मिस्रियों के सारे जानवरों को बीमार कर दिया और वह बिमारी से मरने लगे – मगर फ़िरोन का दिल सख्त ही रहा और बनी इस्राईल को जाने नहीं दिया -

---

10:07

फिर खुदा ने मूसा से कहा कि “फ़िरोन के सामने हवा में राख उड़ाओ – जब मूसा ने ऐसा किया तो तमाम मिस्रियों के जिस्म में दर्द वाले बड़े बड़े फोड़े निकल पड़े ,मगर बनी इस्राईल को कुछ नहीं हो रहा था - मगर खुदा ने फ़िरोन के दिल को सख्त किया और बनी इस्राईल को जाने नहीं दिया -

दर्दनाक फोड़ों कि वबा से कौन मुतास्सिर हुए थे ?

दर्दनाक फोड़े मिस्रियों पर ज़ाहिर हुए न कि बनी इस्राईल पर -

10:08

इसके बाद खुदा ने बड़े-बड़े ओले बरसाए जिस के सबब से मिस्रियों के फ़सल का बहुत ज़ियादा नुख्सान होने लगा –बल्कि मिस्रियों में से जो भी घर से बाहर निकलता था वह ओलों से मरजाता था –मगर बनी इस्राईल इन ओ लों से महफूज़ थे – फ़िरोन ने मूसा और हारुन को फिर से बुलवा भेजा और उनसे कहा "मैं ने गुनाह किया है ,अब तुम लोग जा सकते हो "सो मूसा ने फ़िरोन के सामने दुआ की और आसमान से ओले बरसना बन्द होगया -

---

10:09

मगर फ़िरोन ने फिर से गुनाह किया और अपने दिल को सख्त किया -

10:10

फिर खुदा ने सारे मुल्क –ए-मिस्र में टिडडीयों के दल भेजेजो पूरे मुल्क-ए-मिस्र में छा गए – मगर बनी इस्राईल के खैमों में एक भी टिडडी नहीं था – टिडडीयों ने मिस्रियों के सारे फ़सल चट कर गए जो ओलों से बर्बाद नहीं हुए थे -

---

10:11

फिर खुदा ने सारे मुल्क –ए –मिस्र को अँधेरा कर दिया –जहां मिसरी लोग रहते थे वहाँ सब जगह अँधेरा ही अँधेरा था – तीन दिन तक लगातार अँधेरा ही अँधेरा पूरे मिस्र में छाया रहा – मिसरी लोग अंधरे की वजह से घर से बाहर नहीं निकलते थे – मगर बनी इस्राईल जहाँ रहते थे वहां उजाला था -

क्या अँधेरा छा जाने कि वबा ने सब पर मसावी तोर से असर किया था ?

नहीं - अँधेरा वहीँ पर छाया हुआ था जहाँ पर मिस्री रहते थे मगर जहाँ पर बनी इस्राईल रहते थे वहां पर उजाला था -

---

10:12

9 तरह की वाबाएं भेजे जाने के बाद भी फ़िरोन ने बनी इस्राईल को जाने नहीं दिया - फ़िरोन ने मूसा और हारुन की बात नहीं मानी – तब ख़ुदा ने फ़ैसला किया कि वह मिस्रियों पर एक आख़री वबा भेजेगा जिससे फ़िरोन का दिलो दमाग बदल जाएगा -

फ़िरौन ने पहली नौ वबाओं का किस तरह से रद्दे अमल पेश किया ?

उसने लोगों को आज़ादी से जाने से इनकार किया -

फ़िरौन पर पहली नौ वबाओं का रद्दे अमल पेश करने के बाद ख़ुदा ने क्या किया ?

ख़ुदा ने दसवें वबा को भेजने का मंसूबा बनाया -

पहली नौ वबाओं ने जो नहीं किया तो यह दसवीं और आख़री वबा क्या करने वाली थी ?

यह फ़िरौन का दिल बदलने वाला था -

11. फ़सह

11:01

खुदा ने मूसा और हारून को फ़िरोन के पास यह कहलाकर भेजा कि बनी इस्राईल को जाने दे – उनहोंने फ़िरोन को आगाह किया कि अगर वह बनी इस्राईल को जाने नहीं देता है तो ख़ुदा मिस्रियों के तमाम पह्लोठे बचचे यहाँ तक कि तमाम जानवरों के पह्लोठों को भी मार डालेगा – जब फ़िरोन ने यह बात सुनी तो वो अभी भी एत्काद करने और ख़ुदा की बात मानने से इनकार किया -

ख़ुदा ने मिस्रियों से क्या कहा अगर फ़िरौन बनी इस्राईल को जाने नहीं देगा तो वह क्या करेगा ?

वह उन के पह्लोठों को हलाक करेगा वह चाहे आदमियों के हों या जानवरों के -

---

11:02

ख़ुदा ने पह्लोठे बचचों को बचाने का तरीका निकाला कि चाहे वह जो कोई भी हो वह ख़ुदा पर ईमान लाए – हर एक खानदान को एक बर्रे का चुनाव करना था और उसे मारना था -

लोग अपने पह्लोठे बेटों को कैसे बचा सकते थे ?

उन्हें एक बे ऐब बर्रे को ज़बह करना था और उसका ख़ून अपने घरों की चौखट पर लगाना था -

---

11:03

ख़ुदा ने बनी इस्राईल से कहा कि बर्रे का खून लेकर अपने – अपने घरों के चौखट पर लगाए और उन्हें चाहिए था कि उस बर्रे के गोश्त को अख्मिरी रोटी के साथ भून कर खाए और जल्दी – जल्दी खाए – ख़ुदा ने उनसे यह भी कहा कि खाने के फ़ौरन बाद अपने खानदान समेत मिस्र से निकलने की तय्यारी करे -

लोग अपने पह्लोठे बेटों को कैसे बचा सकते थे ?

उन्हें एक बे ऐब बर्रे को ज़बह करना था और उसका ख़ून अपने घरों की चौखट पर लगाना था -

भुने हुए बर्रे के गोश्त के साथ ख़ुदा ने इस्राएलियों को कौनसी ख़ास चीज़ खाने को कहा ?

बिना ख़मीर वाली रोटी -

बनी इस्राईल जब खा रहे थे तो उनको किस चीज़ के लिए तैयार रहना था ?

मिस्र छोड़ने के लिए तैयार रहना था -

11:04

बनी इस्राईल ने वही सब किया जो खुदा ने उन्हें करने के लिए कहा था –आधी रात को खुदावंद ख़ुदा ने पूरे मिस्र में घूम फिरकर मिस्रियों के तमाम पह्लोठों को मार डाला -

---

11:05

तमाम बनी इसराईल के घरों के चौखटों पर खून ही खून था ,सो खुदा उन के घरों को छोड़ता गया – घर के अन्दर रहने वाला हर कोई महफ़ूज़ था –वह उस बर्रे के खून के सबब से बचाए गए थे -

जिन के घरों की चौखट पर ख़ून के निशान थे ख़ुदा ने उन के साथ क्या किया ?

ख़ुदा उन सब के घरों को छोड़ता गया और जो उस घर के अन्दर थे वह सब महफ़ूज़ थे -

---

11:06

मगर मिसरी लोग खुदा पर ईमान नहीं लाए थे न ही उसका हुक्म बजा लाए थे – सो खुदा उनके घरों को नहीं छोड़ा – खुदा ने तमाम मिस्रियों के घरों में जिनमें पह्लोठे बच्चे थे उन सब को मार डाला -

ख़ुदा ने हर एक मिस्री के घर में क्या किया ?

उसने हर एक पह्लोठे बेटे को हलाक कर दिया -

11:07

हरएक मिसरी जो क़ैद खाने में था उसके बेटे से लेकर फ़िरोंन के महल में जिन के पह्लोठे बेटे थे वह सब मर गए – सो नतीजा यह हुआ कि तमाम मुल्क–ए-मिस्र में रोने और मातम करने की आवाज़ गूंजने लगी – वह सारा खानदान शदीद ग़मगीन और उदासीन था -

मिस्रियों के कितने पह्लोठे बेटे थे जो मारे गए थे ?

मिस्रियों के सारे के सारे पह्लोठे बेटे ,यहाँ तक कि फ़िरौन के भी -

---

11:08

उसी रात को फ़िरोन ने मूसा और हारुन को बुलवाया और उनसे कहा “बनी इस्राईल को ले जाओ और जितनी जल्द हो सके मिस्र को छोड़ो “मिसरियों ने भी बनी इस्राईल से इसरार किया कि फ़ौरन मिस्र से निकल जाएं -

इस आख़री वबा के बाद फ़िरौन ने मूसा और हारुन से क्या कहा ?

बनी इस्राईल को लो और जितना जल्द होसके फ़ौरन मिस्र से निकल जाओ -

12. ख़ुरूज

12:01

बनी इस्राईल मिस्र से निकलने में बहुत ख़ुश थे क्यूंकि आगे को वह ग़ुलाम नहीं थे और वह वादा किया हुआ मुल्क की तरफ़ रवाना हो रहे थे – मिस्रियों ने वह सब कुछ दिया जो बनी इस्राएल ने मांगता ताकि उनसे पीछा छुड़ा सके यहाँ तक कि सोना चांदी और दीगर क़ीमती चीज़ें कुछ लोग जो दुसरे कौम के थे उनहोंने भी इन वाक़ियात को देखकर खुदा पर ईमान ले आए और बनी इस्राईल के साथ निकल पड़े जब वह मिस्र को छोड़ रहे थे -

बनी इस्राईल जब मिस्र छोड़ रहे थे तो मिस्रियों ने बनी इस्राईल को क्या दिया ?

जो कुछ उन्होंने माँगा यहाँ तक कि सोना चान्दी और दीगर क़ीमती चीज़ें -

बनी इस्राईल के साथ और किन लोगों ने मिस्र को छोड़ा -

दीगर क़ौमों के कुछ लोग जो ख़ुदा पर ईमान लाए थे -

12:02

एक ऊँचा बादल का खम्बा दिन में बनी इस्राईल के आगे –आगे चलता था और वही खम्बा रात में आग का खम्बा बन जाता था क्यूंकि खुदा उस बादल और आग के खम्बे में मौजूद था जो हमेशा उन के साथ रहा करता था - और सफ़र में उनकी रहनुमाई करता था – बनी इस्राईल को अगर कुछ करना था तो वह यह था कि उसके पीछे –पीछे चलते जाओ -

ख़ुदा ने बनी इस्राईल की किस तरह से रहनुमाई की ?

दिन में बादल के खम्बे के ज़रिये और रात में आग के खम्बे के ज़रिये से -

---

12:03

थोड़े ही वक़्त के अन्दर फ़िरोन और उसके लोगों ने अपना इरादा बदल दिया - वह बनी इस्राईल को दोबारा अपना ग़ुलाम बनाना चाहते थे – सो उनहोंने बनी इस्राईल का पीछा किया – ऐसा उनहोंने खुद से नहीं सोचा था बलकि खुदा ने उनको ऐसा सोचने पर मजबूर किया था –खुदा ने ऐसा इसलिए किया क्यूंकि वह उन्हें याद दिलाना चाहता थ कि “वह” याने “यह्वे” फ़िरोन और तमाम मिसरी देवताओं से बहुत ही ज़ियादा ज़ोरावर है -

ख़ुदा ने फ़िरौन का दिल क्यूँ सख़्त किया और बनी इस्राईल का पीछा करने दिया ?

फ़िरौन को यह बताने के लिए कि वही एक सच्चा ख़ुदा है और फ़िरौन के तमाम देवताओं से बहुत ही ज़ोरावर है

12:04

जब बनी इस्राईल ने देखा कि फ़िरोन का फौजी लश्कर उनका पीछा कर रहा है तो उनहोंने महसूस किया कि वह फ़िरोन की फ़ौज और बहर –ए– क़ुलज़म के बीच फँस चुके हैं – वह बहुत डर गए और चिल्ला उठे कि मिस्र को छोड़ने में हमने बहुत बड़ी गलती की है – हमने मिस्र को क्यूँ छोड़ा ? हम मरने जा रहे हैं -

बनी इस्राईल ने किस तरह रद्देअमल पेश किया जब वह समुन्दर और फ़िरौन कि फ़ौज के बीच फंसे हुए थे ?

उन्होंने कहा “हम ने क्यूँ मिस्र को छोड़ा ?हम तो मरे जा रहे हैं” -

---

12:05

मूसा ने बनी इस्राईल से कहा डरो मत – आज खुदा हमारी तरफ़ से लड़ेगा और तुमको बचाएगा –फिर खुदा ने मूसा से कहा “अपने लोगों से कह कि वह बहर-ए –कुल्ज़म की तरफ़ बढ़ते जाएं -

उनका ख़ौफ़ ठंडा करने के लिए मूसा ने बनी इस्राईल से क्या कहा ?

उसने कहा “डरो मत , आज ख़ुदा तुम्हारे लिए लड़ेगा और तुम्हें बचाएगा “-

---

12:06

फिर खुदा ने उस बादल के खम्बे को ऐसा घुमाया कि बनी इस्राईल और मिसरी फ़ौज के बीच में इस तरह रखा कि मिसरी फ़ौज बनी इस्राईल को देख नहीं सकते थे -

बनी इस्राईल जब बचने कि कोशिश कर रहे थे तो ख़ुदा ने उन्हें बचते हुए देखने से मिस्रियों को कैसे रोका?

ख़ुदा ने बादल के खम्बे को उन के बीच में रखा -

12:07

ख़ुदा ने मूसा से कहा “अपना हाथ समुन्दर के ऊपर उठा” जब मूसा ने ऐसा किया तो समुन्दर के दाएं और बाएँ दोनों तरफ़ हवा का दबाव पड़ा और दोनों तरफ़ के पानी को हटा दिया जिससे समुन्दर के बीचों बीच एक सूखा रास्ता बन गया -

ख़ुदा ने मूसा से क्या कहा कि समुन्दर में बनी इस्राईल के बचने के लिए रास्ता होजाए ?

ख़ुदा ने मूसा से कहा समुन्दर पर अपना हाथ बढ़ा ताकि समुन्दर के दो हिस्से हो जाएं -

---

12:08

बनी इस्राईल उस सूखी ज़मीन के रास्ते चल पड़े और उन्हों ने देखा कि उनकी दाएँ और बाएं तरफ़ मानो पानी की दीवार खड़ी है -

किस तरह बनी इस्राईल समुद्र को पार कर सके ?

वह सूखी ज़मीन पर चल कर गए -

12:09

फिर खुदा ने उस बादल के खम्बे को उन के बीच से हटाया ताकि मिसरी लोग देख सकें कि बनी इस्राईल किस तरह बचकर निकल रहे थे – सो मिसरी फ़ौजियों ने चाहा कि उनका पीछा करें -

---

12:10

सो उनहोंने बनी इस्राईल का पीछा करके वह भी समुन्द्र के उस सूखे रास्ते से गुज़रे – मगर खुदा ने उनके लिए रास्ता बन्द कर दिया ,जो पानी की दीवार थी वह आपस में मिल गई और मिसरियों के घोड़ों के रथ पानी में डूबने लगे – मिसरी लोग चिल्लाने लगे “यहाँ से भागो क्यूंकि खुदा बनी इस्राईल की तरफ़ से लड़ने पर आमादा है –“

मिस्रियों का क्या हश्र हुआ जब उन्होंने समुन्दर के बीच बनी इस्राईल का पीछा किया ?

ख़ुदा ने मिस्रियों को दहशत ज़दा कर दिया और उन के रथ आपस में टकराकर फंस गए -

---

12:11

तमाम बनी इस्राईल जब बहर–ए-क़ुल्ज़ुम के उस पार पहुँच गए तो खुदा ने मूसा से कहा "अपना हाथ समुन्दर की तरफ़ बढ़ा ,जब मूसा ने ऐसा किया तो पानी मिस रियों की फ़ौज पर गिर पड़ा और अपनी क़ुदरती हालत पर आगया – मिस्र की सारी फ़ौज पानी में डूब कर मर गई -

किस तरह ख़ुदा ने मिस्री फ़ौज को तबाह किया ?

समुन्दर का पानी आपस में एक होगया और मिस्र की फ़ौज पानी में डूब गई और वह सब के सब मर गए -

---

12:12

जब बनी इस्राईल ने देखा कि सारी मिसरी फ़ौज पानी में डूब कर मर गई तो उन्हों ने खुदा पर भरोसा किया – वो ईमान लाए कि मूसा खुदा का एक नबी है -

बनी इस्राईल ने किस तरह रद्देअमल पेश किया जब मिस्री लोग उनकी आँखों के सामने मर रहे थे ?

उन्होंने ख़ुदा पर भरोसा किया और ईमान लाए कि मूसा ख़ुदा का एक नबी था -

---

12:13

बनी इस्राईल ने खुशियाँ मनाई क्यूंकि खुदा ने उनको न सिर्फ़ मरने से बल्कि गुलामी से भी छुटकारा दिया –अब वह खुदा की इबादत करने और उसका हुक्म बजा लाने के लिए आज़ाद थे - बनी इस्राईल ने अपनी नई आज़ादी मनाने की ग़रज़ से खुदा की हम्द के गीत गाए कि किस तरह खुदा ने उनको मिसरी फ़ौज से बचाया -

बनी इस्राईल ने ख़ुदा की हम्द ओ सिताइश में क्यूँ गाना गया ?

क्यूंकि ख़ुदा ने उन्हें मिस्रियों से बचाया था -

12:14

खुदा ने बनी इजराइल को हुक्म दिया कि हर साल इस छुटकारे के दिन को याद करने के लिए ईद मनाएं कि किस तरह खुदा ने मिस्रियों को हराया और उन्हें उनकी गुलामी से आज़ाद किया – इस ईद का नाम फ़सह का ईद था – इस फ़सह की ईद में उन्हें एक

तंदरुस्त और मोटे ताज़े बर्रे को मारना होता है - उसको भूनना पड़ता है और अख्मीरी रोटी के साथ अपने खानदान के साथ खड़े होकर जल्दी –जल्दी खाना पड़ता है -

मिस्रियों पर ग़ालिब आने के इस वाक़िये को याद रखने के लिए ख़ुदा ने बनी इस्राईल से क्या कहा ?

ख़ुदा ने उन्हें हुक्म दिया कि हर साल फ़सह की ईद मनाया करें -

13 . बनी इस्राईल के साथ खुदा का मुआहदा

13:01

बहर –ए– क़ुल्ज़ुम के ज़रिये बनी इस्राईल को जब खुदा ने रहनुमाई की तो उसने उन्हें बयाबान में भी एक पहाड़ी की तरफ़ रहनुमाई की जो सीना का पहाड़ कहलाता है –यह वही पहाड़ है जहां मूसा ने जलती हुई झाड़ी को देखा था – बनी इस्राईल ने इसी पहाड़ी के नीचे अपने डेरे डाले थे -

लाल समुन्दर को पार करने के बाद ख़ुदा ने बनी इस्राईल की किस तरफ़ रहनुमाई की ?

उस ने सीना पहाड़ कि तरफ़ रहनुमाई की -

13:02

खुदा ने मूसा और तमाम बनी इस्राईल से कहा “तुम्हें हमेशा मेरे अहकाम बजा लाने होंगे और मेरे अहद को मानना होगा जो मैं तुझ से बाधूंगा –अगर तुम यह करोगे तो तुम मेरे इनाम वाली मिलकियत ,शाही काहिनों का फ़िरक़ा और पाक कौम ठहरोगे -

ख़ुदा ने बनी इस्राईल से क्या वायदा किया कि अगर वह उसका हुक्म बजा लाएंगे तो वह किस के हक़दार बन जाएंगे ?

उन्हें जाएदाद बख़्शी जाएगी , उन्हें मिलकियत सौंपी जाएगी , उन्हें काहिनों की बादशाही दी जाएगी और वह एक मुक़द्दस क़ौम कहलाएगी

13:03

तीन दिन तक लोगों ने खुद को तैयार होने में लगाया - खुद को पाक साफ़ किया कि खुदा उनके क़रीब आसके फिर खुदा सीना पहाड़ पर नीचे उतर आया – जब वह आया तो माहोल में शोर ओ ,गुल गरजनें , बिजलियों की चमक ,धुंआ ,क़रना की बुलंद आवाज़ पूरी तरह से सारा पहाड़ और आस पास का माहौल गूँज उठा ऐसा कि सीना पहाड़ पूरी तरह से हिल गया हो – फिर मूसा खुद ही पहाड़ के ऊपर गया -

जब ख़ुदा सीना पहाड़ पर उतर आया था तो कौन से निशानात ज़ाहिर हुए थे ?

गरजनें , बिजलियाँ , धुंआ और क़रना कि ऊँची आवाज़ -

13:04

फिर खुदा ने लोगों के साथ एक अहद बाँधा ,खुदा ने कहा "मैं यह्वे तुम्हारा खुदा हूँ – मैं ने ही तुमको मिस्र की गुलामी से बचाया है – तुम कभी भी ग़ैर माबुदों की परस्तिश न करना -

---

13:05

तुम अपने लिए कोई तराशी हुई मूरत न बनाना ,न उनकी परस्तिश करना –क्यूंकि मैं यह्वे ही तुम्हारा अकेला खुदा हूँ , तुम मेरा नाम बे फ़ाइदा न लेना- याद करके तू सबत का दिन पाक मानना – दुसरे लफ़्ज़ों में छे दिनों में तुम अपना काम काज करन , पर सातवाँ दिन तेरे लिए आराम का दिन ठहरे , उस दिन तू मुझे याद करना -

---

13:06

तू अपने बाप और मां की इज्ज़त करना - तू खून न करना- तू ज़िना न करना – तू चोरी न करना – तू झूट न बोलना – तू अपने पड़ौसी के घर का लालच न करना ,न उसकी बीवी का लालच करना – तू उसके घर के किसी भी चीज़ का लालच न करना -

---

13:07

फिर खुदा ने उन दस अहकाम को पत्थर के दो लोहों पर लिख दिए और उन्हें मूसा को दे दिए – खुदा ने लोगों को कुछ और क़ानून क़ाइदे भी दिए कि उनको माने –अगर वह उसके अहकाम बजा लाते हैं तो खुदा ने वादा किया कि वह उन्हें बरकत देगा और उनकी हिफ़ाज़त करेगा मगर उसने कहा कि अगर वह उह्काम नहीं बजा लाते हैं तो वह उन्हें सज़ा देगा-

अगर बनी इस्राईल ख़ुदा के अहकाम नहीं बजा लाएंगे तो ख़ुदा उन के साथ क्या करेगा ?

वह उन्हें सज़ा देगा -

13:08

खुदा ने बनी इस्राईल से यह भी कहा कि एक बड़ा सा ख़ेमा बनाएं ---- याने कि ख़ेमा –ए- इजतिमा – उसने उनसे कहा कि बा - क़ाईदा तौर से किसी तरह इस ख़ेमे को बनाना है और उसके अन्दर कौन कौन सी चीज़ें किस लकड़ी या पत्थर से बनाई जाए या तराशा जाए – खेमा और दो कमरों के बीच एक बड़ा सा पर्दा लगाने को कहा गया था ताकि खुदा परदे के पीछे वाली कमरे में आकर

सुकूनत कर सके – सामने वाले कमरे को पाक मक़ाम और बिलकुल अन्दर वाला कमरा जो परदे के पीछे था उसे पाक्तरींन मक़ाम कहा जाता था – पाक तरीन मक़ाम जहाँ खुदा की सुकूनत थी उसके अन्दर सिर्फ़ सरदार काहिन को ही साल में एक बार दाखिल होने की इजाज़त थी -

ख़ुदा ने बनी इस्राईल से क्या कहा कि वह उस के लिए क्या बनाएं ?

उसने उनसे कहा कि वह उसके लिए एक ख़ेमा -ए- इज्तिमा बनाएं -

परदे के पीछे जहाँ ख़ुदा सुकूनत करता था , उस कमरे में कौन दाखिल हो सकता था ?

सिर्फ़ सरदार काहिन

13:09

खेमा –ए- इज्तिमा के आगे की तरफ़ लोगों को एक मज़बह भी बनाने की ज़रूरत थी – जो शख्स खुदा की शरीअत के ख़िलाफ़ कोई गुनाह करता था तो उसको मजबह के पास एक जानवर को लाना ज़रूरी था –फिर एक काहिन उस को ज़बह करता था , और ख़ुदा के लिए उसको मज़बह पर चढ़ाता था – ख़ुदा ने कहा कि उस जानवर का खून उस शख्स के गुनाह को ढ्केगा – इस बतौर खुदा उस शख्स के गुनाह को आइन्दा के लिए नहीं देखेगा – वह शख्स खुदा के हुज़ूर पाक ठहरेगा – खुदा ने मूसा के भाई हारून और उसकी नसल को काहिन होने के लिए चुना -

लोग किस तरह अपने गुनाह ढांक सकते थे ?

वह क़ुर्बानी के लिए काहिनों के पास एक जानवर को ला सकते थे -और उस जानवर का खून उन के गुनाहों को ढांक सकता था -

उसके काहिन बनने के लिये ख़ुदा ने किसको चुना ?

हारून और उसकी औलाद को चुना गया था -

13:10

लोग इस बात पर राज़ी हुए कि वह खुदा की दी हुई शरीयत को ख़ुशी के साथ बजा लाएंगे – वह इस बात से भी राज़ी हुए कि वह सिर्फ़ और सिर्फ़ खुदा के लोग हैं और सिर्फ़ उसी की परस्तिश करेंगे -

---

13:11

कई दिन तक के लिए मूसा ने सीना पहाड़ के ऊपर क़याम किया – वह खुदा से बातें करता रहा – मगर बनी इस्राईल मूसा के वापस नीचे आने का इंतज़ार करते -करते थक गए – सो उनहोंने हारुन के पास सोना लाकर कहने लगे तू हमारे लिए एक बुत बना ताकि हम खुदा के बदले उस बुत की परस्तिश कर सकें – इस तरह उनहोंने खुदा के ख़िलाफ़ एक हौलनाक गुनाह किया -

सीना के पहाड़ से जब मूसा के लौटने में देरी हुई और इंतज़ार करते करते थक गए तो उन्होंने क्या किया ?

उन्हों हारुन को मजबूर किया कि वह उन के लिए एक सोने की मूरत बनादें ताकि वह उसकी इबादत करें और उसके लिए क़ुर्बानियां चढ़ाएं -

---

13:12

हारुन ने बछड़े की शक्ल में एक सोने की मूरत बनाई –लोग बुरी तरह से उस मूरत की पूजा करने लगे ,यहाँ तक कि उसके आगे नाचने , कूदने , और कुर्बानियां भी चढ़ाने लगे – जब खुदा ने यह देखा तो उनके इस गुनाह पर उसको बहुत ग़ुस्सा आया – वह उन्हें बर्बाद कर देना चाहता था मगर मूसा ने उनकी सिफ़ारिश की कि उन्हें हालाक न करे – खुदा ने मूसा की दरखास्त सुनी और उन्हें हलाक करने से बाज़ आया -

सीना के पहाड़ से जब मूसा के लौटने में देरी हुई और इंतज़ार करते करते थक गए तो उन्हों ने क्या किया ?

उन्हों हारुन को मजबूर किया कि वह उन के लिए एक सोने की मूरत बनादे ताकि वह उसकी इबादत करें और उसके लिए क़ुर्बानियां चढ़ाएं -

ख़ुदा ने बनी इस्राईल को जब उन्हों ने उस की नाफ़रमानी की तो उनको बर्बाद क्यूँ नहीं किया ?

क्यूंकि मूसा ने उनकी शिफ़ाअत की थी -

13:13

आखिर –ए-कार मूसा सीना पहाड़ से नीचे उतर आया –वह अपने हाथ में पतथर की दो लोहें लिए हुए था जिसमें खुदा ने दस अहकाम लिखे थे – फिर उसने जब उस बछड़े की मूरत को देखा तो बहुत गज़बनाक हुआ और हाथ में लिए हुए दस अह्काम की लोहों को ज़मीन पर पटक कर तोड़ डाला -

उन पत्थर की लौहों का क्या हाल हुआ जिन पर ख़ुदा ने अपने हाथ से दस अहकाम लिखकर दिए थे ?

मूसा ने ग़ुस्से में आकर उन्हें ज़मीन पर पटक दिया था और वह तेहस नेहस होगई थीं -

---

13:14

फिर मूसा ने उस मूरत को पीसकर उसका सफ़ूफ़ बनाया और उसको पानी में घोलकर जो लोग उसमें शामिल थे उनको पिलाया – खुदा ने उन पर एक वबा भेजी और उनमे से बहुत से उस वबा से मर गए -

मूसा ने उस सोने के बुत का क्या किया ?

उसने उस मूरत को कूट कूट कर उसका चूर बनाया और पानी में घोल कर लोगों को पिलाया -

---

13:15

दस अहकाम के लिए मूसा ने जिन दो लोहों को तोड़ डाला था उसके बदले में खुदा ने दो नई लोहें बनाई –फिर वह सीना पहाड़ पर ही उन लोगों के लिए मुआफी की दरखास्त करने लगा – खुदा ने मूसा की दरखास्त सुनी और उन्हें मुआफ कर दिया मूसा दस अहकाम के नए लोहों के साथ पहाड़ से नीचे उतरा – फिर खुदा ने सीना पहाड़ पर से वादा किए हुए मुल्क की तरफ़ बनी इस्राईल की राह्नुमाई की -

दस अहकाम की पत्थर की लौहों का बदल कैसे किया ?

मूसा ने खुद ही नई पत्थर की लौहें बनाकर उसमें दस अहकाम लिखे -

सीना पहाड़ के बाद बनी इस्राईल कहां के लिए रवाना हुए ?

ख़ुदा ने बनी इस्राईल को वायदे के मुल्क की तरफ़ रहनुमाई की -

14. बयाबान में घूमना फिरना

14:01

खुदा बनी इस्राईल से अपने अहद के सबब से शरीअत की तमाम बातें यह कहकर ख़तम की कि तुमको इस पर चल्ना ज़रूरी है – फिर उसने सीना पहाड़ से उनकी रहनुमाई की – खुदा उन्हें वादा किए हुए मुल्क में ले जाना चाहता था - उस मुल्क को मुल्क –ए– कनान भी कहा जाता है – खुदा बादल के खम्बे में होकर उन के आगे –आगे चलौर बनी इस्राईल उनके पीछे –पीछे चले -

जब बनी इस्राईल ने सीना पहाड़ को छोड़ा तो ख़ुदा ने कहाँ जाने के लिए उनकी रहनुमाई की ?

ख़ुदा ने उनको कनान जो वायदा किया हुआ मुल्क था उस की तरफ़ जाने कि रहनुमाई की

14:02

खुदा ने अब्रहाम , इज़हाक़ और याक़ूब से वादा किया था कि वह उनकी नसल को वादा किया हुआ मुल्क देगा मगर अब वहां पर कई लोगों के दीगर कबीले रह रहे थे जिन्हें कनानी लोग कहा जाता था – कनानी लोग न तो खुदा की परस्तिश करते थे और न उसका हुक्म बजा लाते थे-वह झूटे माबूदों की परस्तिश करते थे और कई एक बुरे काम अंजाम देते थे -

---

14:03

खुदा ने बनी इस्राईल से कहा था कि " जब तुम वादा किए हुए मुल्क मे पहुंचो तो वहां पर तमाम कनानियों से छुटकारा पाना होगा और उन्हें मुल्क से ख़ारिज करना होगा – उनसे कभी सुलह मत करना और न उनके साथ शादी के रिश्ते बनाना – तुम उनके तमाम बुतों को बर्बाद कर देना – अगर तुम मेरा हुक्म नहीं बजा लाओगे तो तुम मेरे बदले में उनके माबुदों की परस्तिश करते हुए ख़त्म हो जाओगे

ख़ुदा ने बनी इस्राईल से क्या कहा कि कनानियों के साथ क्या सुलूक करना है ?

उसने उनसे कहा कि उनसे छुटकारा पाओ , उनके साथ सुलह मत करो , उन के साथ शादी ब्याह मत रचाओ और उनके तमाम बुतों को बर्बाद करदो -

---

14:04

जब बनी इस्राईल कनान की सरहद पर पहुंचे तो मूसा ने बनी इस्राईल के बारह क़बीलों में से हरएक कबीले के एक आदमी को चुना –और उन्हें नसीहत दी कि वहां जाएं और वहां का भेद लें कि वह मुल्क कैसा है ,वहां के लोग कैसे हैं ,वह लोग ताक़तवर हैं कि कमज़ोर हैं ?

14:05

यह बारह आदमी कनान की तरफ सफ़र के लिए रवाना हुए –और चालीस दिन बाद वापस आए – उन्हों ने लोगों से कहा कि वहाँ की ज़मीन ज़रखेज़ है और फ़सल अफरात से है – मगर इन बारह में से दस ने कहा कि वहां की शहरें मज़बूत हैं- वहां पर (बनी अनाक़) यानि क़द आवर लोग पाए जाते हैं ! अगर हम उनपर हमला करेंगे तो वह यक़ीनन हम को शिकस्त दे देंगे वगैरा -

कनान के मुल्क की बाबत उन बारह जासूसों ने क्या कहा ?

कि ज़मीन बहुत ज़रख़ेज़ है और फ़स्ल की कुल पैदावार भी अच्छी है -

दस जासूसों ने ऐसा क्यूँ कहा कि बनी इस्राईल को कनानियों पर हमला नहीं करनी चाहिए ?

उन्होंने कहा कि “वहां के शहर मज़बूत हैं , लोग अनाक़ी (क़द आवर) हैं – और अगर हम उनपर हमला करेंगे तो वह हम को शिकस्त देदेंगे और हमको मार डालेंगे “-

---

14:06

फ़ौरन कालेब और यशो और दीगर दो जासूसों ने कहा “यह सच है कि कनान के लोग लम्बे चौड़े और ताक़तवर लोग हैं ,मगर यक़ीनन हम उन्हें शिकस्त देदेंगे और खुदा हमारी तरफ़ लड़ेगा -

कालेब और यशौ ने कनान के लोगों की बाबत क्या कहा ?

लोग मज़बूत तो हैं मगर हम उन को हरा सकते हैं, ख़ुदा हमारे लिए लड़ेगा -

---

14:07

मगर लोगों ने कालेब और यशो की नहीं सुनी- वह मूसा और हारुन से ग़ुस्सा हुए और उनसे कहा “तुम क्यूँ हमें इस हौलनाक जगह पर ले आए ? हाय काश हम मिस्र में ही मार जाते ,या वहीँ पर रह जाते – जब हम मुल्क के अन्दर जाएंगे तो हम जंग में मारे जाएंगे-

और कनानी लोग हमारे बीवी बचचों को गुलाम बना लेंगे-लोगों यहाँ तक भी चाहा कि एक फ़रक़ सरदार चुन लिया जाए जो हम को वापस मिस्र तक लेजाए

जासूसों की ख़बर सुनकर लोग क्या करना चाहते थे ?

वह एक दूसरा रहनुमा चुनना चाहते थे और मिस्र वापस जाना चाहते थे -

---

14:08

जब लोगों ने ऐसा कहा तो खुदा उनसे बहुत गुससा हुआ जब वह खेमा –ए- इजतमा में आए तब खुदा ने उनसे कहा “तुमने मेरे ख़िलाफ़ बग़ावत की है –तुम में से जितनों ने ऐसा कहा है हर कोई इस बयाबान में भटकता रहेगा – तुम में से जो बीस साल का या उस से ऊपर का हो जिस ने बगावत की है वह इसी बयाबान में भटकते –भटकते मर जाएगा –और वह मुल्क –ए-कनान में दाख़िल नहीं होंगे जिसे मैं तुमको देने वाला था – सिर्फ़ यशो और कालेब का घराना उस मुल्क में दाखिल होने पाएंगे –“

ख़ुदा ने क्या कहा कि उन लोगों की ना फ़रमा नी के लिए ख़ुदा उन को कैसी सज़ा देगा ?

बीस साल से ऊपर जितने भी लोग होंगे वह सब बयाबान में भटकेंगे - यशौ और कालेब का ख़ानदान इसमें शामिल नहीं है -

---

14:09

जब लोगों ने सुना कि खुदा यूँ कह रहा है तो उन्हें पछतावा हुआ क्यूंकि उनहोंने गुनाह किया था –उनहोंने जोश में आकर कहा ,”आओ हम कनानियों पर हमला करने चलें – मगर मूसा ने उन्हें खबरदार करके कहा “मत जाओ,क्यूंकि ख़ुदावंद खुदा तुम्हारे साथ नहीं जाएगा – मगर उनहोंने मूसा की नहीं सुनी -

---

14:10

खुदा उन के साथ नहीं था जब वह हमला करने गए थे –जिसका नतीजा यह हुआ कि उन सबको कनानियों ने शिकस्त दी और उन में से कुछ को हालाक कर डाला –फिर ना उम्मीद होकर बनी इस्राईल कनान से वापस लौटे बाक़ी चालीस साल तक वह बयाबान में भटकते फिरे

बनी इस्राईल को शिकस्त क्यूँ मिली जब उन्होंने कनानियों पर हमला किया ?

क्यूंकि जंग में ख़ुदा उन के साथ नहीं गया था -

14:11

चालीस सालों के दौरान बनी इस्राईल बयाबान में आवारा फिरते रहे – खुदा ने उनके लिए सारी ज़रूरतें मुहय्या कीं –खुदा ने उन के लिए आसमान से रोटी इनायत की जिसे " मन्न " कहा गया – खुदा ने उनके लिए बटेरों का भी इंतज़ाम किया था – उनके झुण्ड खेमों के सामने भेजे थे ताकि उन्हें गोश्त खाना नसीब हो – उन चालीस बरसों के दौरान खुदा ने न तो उनके कपड़े पुराने होने,न उनके जूते फटने दिए -

बनी इस्राईल बयाबान में कितने अरसे तक इधर उधर भटकते रहे ?

चालीस साल तक

बयाबान में बनी इस्राईल को ख़ुदा ने कैसे मुहैय्या किया ?

उसने उन्हें "मन्ना" खिलाया , बटेरें खिलाईं , उन के कपड़े और जूते फटने से बचाये -

---

14:12

यहाँ तक कि खुदा ने उनके लिए चट्टान से पानी निकाला कि वह अपनी प्यास बुझा सके – इनसब के बावजूद भी बनी इस्राईल ने मूसा और हारुन और खुदा के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई, शिकायतें करने , और बड़ बड़ाने लगे थे –फिर भी खुदा उनकी बाबत वफ़ादार रहा –उसने वह सब कुछ किया जो उसने अब्रहाम , इज़हाक़ और याक़ूब की नसल के साथ करने का वादा किया था

जब लोगों ने मूसा और हारुन से शिकायतें कीं और बुड़बुड़ाये तो ख़ुदा ने इसका रद्देअमल कैसे ज़ाहिर किया ?

ख़ुदा अभी भी अब्रहाम , इज़्हाक़ और याक़ूब को दिए गए वायदों में वफ़ादार था -

---

14:13

दूसरी दफ़ा जब बनी इस्राईल के पास पानी नहीं था तो खुदा ने मूसा से कहा था कि चट्टान से बातें करे तो चट टान में से पानी निकल आएगा "-मगर मूसा ने चट्टान से बात नहीं की बल्कि उसने दो बार चट्टान को लाठी से मारा –इस तरह मूसा खुदा के हुक्म के ख़िलाफ़ गया और उसकी ताज़ीम नहीं की –चट्टान से सब के पीने के लिए पानी तो निकल आया था मगर खुदा ने मूसा से कहा था कि,इसलिए कि तू ने ऐसा किया तुम वादा किए हुए मुल्क में हरगिज़ दाख़िल नहीं होगे –"

जब मूसा ने चट्टान पर लाठी मारी तो ख़ुदा उससे क्यूँ गज़बनाक था ?

क्यूंकि मूसा ने जैसा उससे कहा गया था चट्टान से बात न करके ख़ुदा की नाफ़रमानी की (उसको जलाल नहीं दिया) -

ख़ुदा ने मूसा को उसकी नाफ़रमानी कि सज़ा कैसे दी?

ख़ुदा ने मूसा से कहा कि वह वायदा किये हुआ मुल्क में दाख़िल नहीं होगा -

---

14:14

बनी इस्राईल के 40 साल तक बयाबान में चक्कर लगाने के बाद वह सब के सब जिन्होंने खुदा के ख़िलाफ़ बग़ावत की थी वह सब बयाबान में ही ढेर हो गए –खुदा ने फिर से लोगों को वादा किया हुआ मुल्क के किनारे ले गया –मूसा बहुत बूढ़ा हो चुका था –सो खुदा ने यशो को चुना कि बनी इस्राईल की रहनुमाई में उनकी मदद करे –फिर खुदा ने मूसा से वादा किया कि एक दिन वह अपने लोगों के लिए मूसा की मानिंद एक दूसरा नबी भेजेगा -

ख़ुदा ने बनी इस्राईल से क्या वायदा किया कि वह मुस्तक़्बिल में किसको भेजेगा ?

मूसा के जैसा दूसरा नबी

14:15

फिर खुदा ने मूसा से कहा कि पहाड़ की चोटी पर चला जाए ताकि वह वादा किए हुए मुल्क को अपनी आँखों से देख ले –मगर खुदा ने उसको इजाज़त नहीं दी कि वह उसमें दाखिल हो –फिर मूसा मर गया और बनी इस्राईल ने उसके लिए 30 दिन का मातम मनाया –यशो अब बनी इस्राईल का नया रहनुमा था – यशो एक अच्छा रहनुमा था –क्यूंकि उसने खुदा पर भरोसा किया था और उसका हुक्म बजा लाया था -

मूसा के मरने के बाद किसने बनी इस्राईल कि रहनुमाई की ?

यशौ ने

यशौ किस तरह का रहनुमा था ?

वह एक बहुत अच्छा रहनुमा था क्यूंकि उसने ख़ुदा पर भरोसा किया था और उसकी फ़रमान बरदारी की थी -

15. वादा किया हुआ मुल्क

15:01

आखिरेकार वह वक़्त था बनी इस्राईल के लिए कि कनान में दाखिल हों – वादा किया हुआ मुल्क – उस मुल्क में एक शहर था जिस का नाम यरीहो था - उस शेहर के चारों तरफ़ मज़बूत दीवारें थीं – ताकि महफूज़ रह सके –यशो ने उस शेहर में दो जासूस भेजे – उस शेहर में राहब नाम की एक फाहिशा रहती थी –उस फ़ाहिशा ने इन दो जासूसों को अपने घर में छिपा रखा था – बाद में उसने इनकी मदद की कि शेहर से बच कर निकल सके – उसने ऐसा इसलिए किया क्यूंकि वह खुदा पर ईमान रखती थी –उन जासूसों ने वादा किया था कि जब बनी इस्राईल यरीहो को बर्बाद करेंगे तो वह उसे और उसके ख़ानदान को बचा लेंगे -

जब वायदा किये हुये मुल्क में दाख़िल होने को थे तो यशौ ने सब से पहले क्या किया ?

उस ने दो जासूस यरीहो के लिये भेजे -

जासूसों ने राहब फ़ाहिशा से क्या वायदा किया ?

उन्होंने राहब और उसके ख़ानदान को बचाने का वायदा किया उस वक़्त जब बनी इस्राईल यरीहो शहर को बरबाद करने वाले होंगे -

---

15:02

वादा किए हुए मुल्क में दाख़िल होने के लिए बनी इस्राईल को यरदन नदी पार करना ज़रूरी था –खुदा ने यशो से कहा , “सब से पहले काहिनों को जाने दे”जब कहिनो ने यरदन नदी में अपना क़दम रखा तो पानी का बहाव अपने आप से बन्द होगया ताकि बनी इस्राईल यरदन पार होकर सूखी ज़मीन पर जा सके -

बनी इस्राईल यर्दन नदी को किस तरह पार कर सके थे ?

जैसे ही ख़ुदा के काहिनों ने यर्दन नदी पर क़दम रखा उसके पानी का बहाव बंद होगया था -

---

15:03

जब लोग यरदन पार हो गए तो खुदा ने यशो से कहा “यरीहो पर हमला करने के लिए तैयार होजाओ इस के बावजूद भी कि शेहर बहुत मज़बूत था – खुदा ने लोगों से कहा कि उन के काहिन और सिपाहियों को हर दिन एक चक्कर शेहर का लगाना चाहिए , इस तरह से छ दिन चक्कर लगाएं – सो काहिनों और सिपाहियों ने ऐसा ही किया -

बनी इस्राईल ने यरीहो पर कैसे हमला किया ?

उन्होंने पूरे शहर का चक्कर एकबार छः दिनों तक के लिए किया – फिर सातवें दिन उन्होंने सात बार चक्कर लगाया -जब उन्होंने सातवें बार चक्कर लगाया तब सिपाही लोग चिल्लाए और काहिनों ने बिगुल बजाए -

---

15:04

फिर सातवें दिन बनी इस्राईल ने शेहर का चक्कर सात बार और लगाया – जब उन्हों ने सातवें बार शेहर का चक्कर लगाना खत्म किया उस के बाद कहिनों ने अप नी तुरहियाँ बजाईं और सिपाही बुलंद आवाज़ से चिल्लाए -

बनी इस्राईल ने यरीहो पर कैसे हमला किया ?

उन्होंने पूरे शहर का चक्कर एकबार छः दिनों तक के लिए किया – फिर सातवें दिन उन्होंने सात बार चक्कर लगाया -जब उन्होंने सातवें बार चक्कर लगाया तब सिपाही लोग चिल्लाए और काहिनों ने बिगुल बजाए -

---

15:05

तब यरीहो के चारों तरफ़ की दीवार नीचे गिर पड़ी ! बनी इस्राईल को जैसा खुदा ने हुक्म दिया था शेहर के हर एक चीज़ को उनहोंने तबाह व बर्बाद कर दिया – सिर्फ़ उन्हों ने राहब और उसके ख़ानदान को छोड़ दिया जो बनी इस्राईल का हिस्सा बन चुकी थी – कनान के दुसरे लोगों ने जब सुना कि बनी इस्राईल ने यरीहो को बर्बाद कर दिया , तब वह बनी इस्राईल से हैबत खाने लगे कि बनी इस्राईल उन पर भी हमला बोल सकते हैं -

जब फ़ौजी सिपाही चिल्लाए और काहिनों ने बिगल बजाई तो क्या हुआ ?

यरीहो की दीवार गिर पड़ी और बनी इस्राईल शहर की हर एक चीज़ को बर्बाद कर कर सकें थे -

राहब और उसके ख़ानदान का क्या हुआ ? वह हलाक नहीं किये गए ,और इस्राईलियों का एक हिस्सा बन गए -

---

15:06

खुदा ने बनी इस्राईल को हुक्म दिया था कि कनान के किसी भी लोगों की जमाअत से कभी भी समझोता न करें – मगर कनानी लोगों की जमाअत में से एक जिन्हें यबूसी कहा जाता है यशो से झूट बोला कि वह कनान से बहुत दूर इलाक़े में रहते हैं उनहोंने यशो से समझौते की दरखास्त की – यशो और दीगर बनी इस्राईल के रहनुमाओं ने खुदा से नहीं पूछा कि उन्हें क्या करना चाहिए – इसके बदले में उन्हों ने याबुसियों से सम्झौता करली -

जिबूनियों ने इस्राईलियों के साथ सुलह करने का कैसा बहाना किया ?

उन्होंने कहा कि वह कनान से बाहर बहुत दूर मक़ाम पर रहते थे -

यशौ और बनी इस्राईल ने क्यूँ मालूम नहीं कर पाए कि जिबूनी झूट बोल रहे थे ?

इसलिए कि उन्होंने ख़ुदा से नहीं पुछा था -

15:07

तीन दिन बनी इस्राईल ने पाया कि यबूसी लोग कनान में रहने लगे थे – वह यबुसियों से ग़ुस्सा हुए क्यूंकि उनहोंने बनी इस्राईल को धोका दिया –मगर उनहोंने अपने समझौते को जारी रखा क्यूंकि यह खुदा के सामने किया हुआ वादा था – कुछ अर्से बाद कनान के दूरी जमाअत के लोग अमोरियों ने सुना कि याबूसियों ने बनी इस्राईल से समझौता कर रखा है तब उन्होंने एक बड़ी फ़ौज तैयार की और यबूसियों पर हमला बोल दिया – तब यबूसियों ने मदद के लिए यशो को एक पैग़ाम भेजा -

बनी इस्राईल ने क्यूँ सुलह का बर्ताव रखा और जिबूनियों की हिमायत की ?

क्यूंकि उन्हों ने ख़ुदा के सामने वायदा किया था -

15:08

सो यशो ने बनी इस्राईल की एक फ़ौज तय्यार की और पूरी रात याबूसियों तक पहुँचने के लिए चलते रहे – बहुत सवेरे उन्हें यह देखकर ताज्जुब लगा कि अमूरी फ़ौज पर पहले ही से हमला हो रखा था -

---

15:09

उस दिन बनी इस्राईल के हक़ में खुदा ने जंग लड़ी थी उसने अमूरियों पर ओले बरसाकर उन्हें परेशान कर दिया था और बहुत से अमूरियों को हलाक कर डाला था -

ख़ुदा ने अमूरियों के खिलाफ़ बनी इस्राईल के हक़ में कैसी लड़ाई लड़ी ?

उसने अमूरियों को उलझन में डाल दिया , उनपर ओले बरसाए और सूरज को एक जगह पर रोक दिया ताकि बनी इस्राईल के पास काफ़ी वक़्त दरकार हो कि दुश्मनों को पूरी तरह से शिकस्त दे सकें -

---

15:10

खुदा ने सूरज को भी एक जगह पर रुके रहने का सबब बनाया ताकि बनी इस्राईल पूरी तरह से अमूरियों को शिकस्त देने के लिए वक़्त ले सके – उस दिन खुदा ने बनी इस्राईल को बड़ी फ़तेह दिलाई -

ख़ुदा ने अमूरियों के खिलाफ़ बनी इस्राईल के हक़ में कैसी लड़ाई लड़ी ?

उसने अमूरियों को उलझन में डाल दिया , उनपर ओले बरसाए और सूरज को एक जगह पर रोक दिया ताकि बनी इस्राईल के पास काफ़ी वक़्त दरकार हो कि दुश्मनों को पूरी तरह से शिकस्त दे सकें -

---

15:11

जब खुदा ने उन फ़ौजों को शिकस्त दी उसके बाद कनानियों की दीगर जमाअत ने मिलकर बनी इस्राईल पर हमले किए – मगर यशो और बनी इस्राईल ने मिलकर बहुत बुरी तरह से उन पर हमला किया और उन्हें बर्बाद कर दिया -

यशौ और बनी इस्राईल ने दीगर कनानी लोगों कि जमाअतों के साथ कैसा बर्ताव किया जो उनपर हमला करने को आए थे ?

यशौ और बनी इस्राईल ने उन सब को बर्बाद कर दिया -

15:12

इन जंगों के बाद खुदा ने बनी इस्राईल के हर एक कबीले को वादा किया हुआ मुल्क का एक हिस्सा अता किया –फिर खुदा ने बनी इस्राईल को उनकी तमाम सरहदों पर अमन –ओ-अमान और सुलह सलामती बखशी -

वायदा किये मुल्क को किस तरह से तक़सीम किया गया ?

ख़ुदा ने इस्राईल के बारहों क़बीलों को उन का अपना हिस्सा दिया -

---

15:13

जब यशो बूढ़ा हो गया तब उसने तमाम बनी इस्राईल को जमा होने का हुक्म दिया – तब उसने लोगों को याद दिलाया कि उनहोंने खुदा के अहद पर चलने का वादा किया है जो उसने सीना पहाड़ पर हासिल किया था – तब लोगों ने यशो से वादा किया कि वह खुदा के वफ़ादार रहेंगे और उसकी शरीअत को मानेंगे -

जब यशौ बूढ़ा होगया तो उसने बनी इस्राएल को अपने पास क्यूँ बुलाया ?

इसलिए ताकि उन्हें उस कानूनी मुआहदे कि बाबत याद दिलाये कि बदस्तूर उनपर अमल करें जो ख़ुदा ने उन के साथ बाँधा था -

बनी इस्राईल ने यशौ को कैसे जवाब दिया ?

उन्होंने वायदा किया कि वह ख़ुदा की शरीयत पर अमल करने में वफ़ादार रहेंगे -

16. छुटकारा देने वाले

16:01

यशो के मरने के बाद बनी इस्राईल ने खड़ा की नाफ़र्मानी की , वह उसका हुक्म नहीं बजा लाए –उन्हों ने खुदा के शरीअत की इताअत नहीं की न ही उन्हों ने बचे हुए कनानियों को मुल्क से बाहर किया – बनी इस्राईल ने सच्चे खुदा यह्वे के बदले कनानियों के देवताओं की परस्तिश की – बनी इस्राईल के पास कोई बादशाह नहीं था इसलिए हर किसी ने वही किया जो उनकी नज़र में ठीक था -

यशौ के मरने के बाद बनी इस्राईल ने किस तरह से ख़ुदा की नाफ़रमानी की ?

उन्होंने कनानियों को अपने मुल्क से बाहर नहीं किया और यह वह जो सच्चा ख़ुदा है उस के बदले कनानियों के झूटे देवताओं की परस्तिश की -

---

16:02

बनी इस्राईल खुदा की ना फ़रमानी करते हुए एक ऐसा नमूना इख्तियार किया जिसको उनहोंने बार – बार (कई बार) अंजाम दिया - वह नमूना इसतरह चला कि :बनी इस्राईल ने बहुत बार सालों तक खुदा की नाफ़रमानी की-फिर ख़ुदा उन्हें अपने दुशमनों से शिकस्त खाने के ज़रिए उन्हें सज़ा देता था – उनके दुशमन उनकी चीज़ें चुरा लेते थे, उनकी जाएदाद बर्बाद करते और लूट लेते थे और उन में से बहुतों को क़त्ल करते थे – फिर जब उनके दुशमनों नें उनपर ज़ुल्म ढाया और उन्हें मग्लूब किया तो बनी इस्राईल ने अपने गुनाहों से तौबा की और ख़ुदा से मिन्नत की कि वह उन्हें छुड़ाए -

ख़ुदा ने बनी इस्राईल को उनकी नाफ़रमानी के लिए किस तरह से सज़ा दी ?

ख़ुदा ने उनके दुश्मनों को उनपर ग़ालिब होने दिया -

16:03

हर बार जब भी बनी इस्राईल तौबा करते थे खुदा उन्हें छुड़ाता था उस ने ऐसा एक छुड़ाने वाले का इंतज़ाम करते हुए किया ---एक ऐसा शख्स जो उनके दुशमनों से लड़े और उन्हें शिकस्त दे –फिर मुल्क में अमन होता था और छुड़ाने वाला अच्छी तरह उनपर हुकूमत करता था –लोगों को छुड़ाने के लिए खुदा ने कई एक छुटकारा दिलाने वालों को भेजा –खुदा ने फिर से मिद्यानियों को जो उन के पास के दुश्मन थे इस्तेमाल किया कि वह बनी इस्राईल को शिकस्त दे -

जब बनी इस्राईल ने मदद के लिए ख़ुदा को पुकारा तो ख़ुदा ने किस तरह उनको जवाब दिया ?

उसने एक छुटकारा देने वाले को खड़ा किया कि वह उन्हें छुटकारा दिलाए और मुल्क में अम्न - ओ व सुकून बहाल हो -

16:04

मिद्यानियों ने सत साल तक बनी इस्राईल के फ़सल को लूटा –बनी इस्राईल उनसे बहुत ज़ियादा डर गए थे –उनमें से बहुत से ग़ारों में छिपने लगे थे कि वह उन्हें न पाएं –आखिरेकार उन्हों ने खुदा को पुकारा की वह उन्हें बचाए -

16:05

एक इसराईली आदमी था जिस का नाम जिदौन था – वह एक पोशीदा जगह में खलियान साफ़ कर रहा था कि मिद्यानी उसे चुरा न लेजाए – यह्वे का फ़रिश्ता उस के पास आया और उससे कहा “ऐ ज़बरदस्त सूरमा खुदा तेरे साथ है ! जा, और बनी इस्राईल को मिद्यानियों से छुड़ा”-

जिदौन क्या कर रहा था जब यह वह का फ़रिश्ता उस के पास आया ?

जिदौन पोशीदा तौर से ग़ल्ला निकालने वाली मशीन से ग़ल्ला निकाल रहा था ताकि मिद्यानी उन्हें चुरा न ले जाएँ

16:06

जिदौन के बाप ने एक बुत के लिए एक मज़बह मख्सूस किया हुआ था –पहली बात जो खुदा ने जिदौन से कही वह यह कि जिदौन अपने बाप के मजबह को तोड़ डाले –मगर जिदौन लोगों से डरता था –तो फिर उसने रात भर का इंतज़ार किया और उसने उस मजबह के टुकड़े –टुकड़े कर डाले –उसने उस के पास ही और खुदा के लिए एक नया मजबह बनाया और उसके लिए उसपर एक क़ुर्बानी चढ़ाई -

16:07

दूसरे दिन सुबह के वक़्त लोगों ने देखा कि किसी ने मज़बह की खूब दुर्गत की है और वह बहुत ग़ुस्से हुए –यह सोचकर कि जिदौन ने किया होगा वह उस के घर उसको हलाक करने गए –मगर जिदौन के बाप ने कहा ,”तुम क्यूँ अपने देवता की मदद करना चाहते हो ? अगर वह देवता है तो अपनी हिफ़ाज़त खुद को करने दो –इसलिए कि उस ने ऐसा कहा लोगों ने जिदौन को नहीं मारा -

16:08

मिद्यानी लोग फिर से बनी इस्राईल की फ़सल चुराने आए –वह गिनती में बे - शुमार थे – जिदौन ने बनी इस्राईल को जमा किया कि मिद्यानियों के ख़िलाफ़ लड़ाई करे –जिदौन ने खुदा से दो निशानी मांगी कि सच –मुच खुदा बनी इस्राईल को बचाने के लिए उससे कह रहा है -

ख़ुदा ने वह कौन से दो निशान जिदौन को दिए यह साबित करने के लिए कि उसके ज़रिये से बनी इस्राईल को बचाएगा ?

ख़ुदा ने ऐसा होने दिया कि सुबह की शबनम की बूंदें कपड़े पर गिरें न कि ज़मीन पर और फिर ज़मीन पर गिरें न कि कपड़े पर -

---

16:09

पहली निशानी के लिए जिदौन ने एक भेड़ के चमड़े को मैदान पर रखा और खुदा से मांग करी कि ओस की बूँदें सिर्फ़ उस चमड़े पर गिरे और ज़मीन सूखी रहे ,सो खुदा ने ऐसा ही किया, दूसरी रात जिदौन ने कहा कि सिर्फ़ ज़मीन पर ओस गिरे और चमड़ा सूखा रहे यो खुदा ने ऐसा भी किया– इन दो निशानियों के सबब से जिदौन ने एत्काद किया कि खुदा सचमुच बनी इस्राईल को मिद्यानियों से बचाना चाहता है -

ख़ुदा ने वह कौन से दो निशान जिदौन को दिए यह साबित करने के लिए कि उसके ज़रिये से बनी इस्राईल को बचाएगा ?

ख़ुदा ने ऐसा होने दिया कि सुबह की शबनम की बूंदें कपड़े पर गिरें न कि ज़मीन पर और फिर ज़मीन पर गिरें न कि कपड़े पर -

---

16:10

फिर जिदौन ने इस्राईल के सिपाहियों को बुलाया कि वह उसके पास आए और 32,000 मर्द उसके पास जमा हुए-खुदा ने कहा यह बहुत ज़ियादा हैं सो जिदौन ने उन 22,000 लोगों को वापस भेज दिया जो जंग करने से डरते थे – खुदा ने जिदौन से कहा कि अभी भी लोग ज़ियादा हैं –सो जिदौन ने 300 सिपाहियों को छोड़ बाक़ी सबको घर भेज दिया -

जिदौन ने सिर्फ़ 300 सिपाहियों को छोड़ बाकी सिपाहियों को क्यूँ घर भेज दिया ?

क्यूंकि ख़ुदा ने कहा था कि लड़ाई के लिए आदमी ज़ियादा हैं -

16:11

उस रात खुदा ने जिदौन से कहा “नीचे मिद्यानियों की छावनी में जा और चुपके से उनकी बातें सुन –जब तुम उनकी बातें सुनोगे तो उनपर हमला करने से डर नहीं लगेगा –सो उस रात जिदौनु उनकी छावनी पर गया और एक मिद्यानी सिपाही को अपने दोस्त से यह कहते सुना जो उसने ख़ाब में देखा था – उसका खाब यह था की गिदोन की फ़ौज हमको (मिद्यानियों की फ़ौज) को हरा देगी – जब जिदौन ने यह सुना तो उसने खुदा के आगे सर को झुकाया -

ख़ुदा ने मज़ीद कौनसी निशानी जिदौन को दी ताकि वह न डरे ?

जिदौन ने एक मिद्यानी सिपाही से उसके ख़्वाब को सुना जो कह रहा था कि जिदौन की फ़ौज मिद्यानी फ़ौज को शिकस्त देदेगी -

मिद्यानी सिपाही के ख़्वाब को सुनकर जिदौन ने क्या किया ?

उसने ख़ुदा को सिजदा किया -

16:12

फिर जिदौन ने अपने सिपाहियों में से हर एक को एक नरसिंगा, एक मटका , और एक मशाल दिया –उन्हों ने छावनी की घेराबंदी की जहाँ मिद्यानी सिपाही सो रहे थे –जिदौन के 300 सिपाहियों के पास मटकों के अन्दर मशालें थीं ताकि मिद्यानी मशालों की रौशनी को न देख सके -

---

16:13

फिर जिदौन के तमाम सिपाहियों ने एक ही वक़्त में अपने-अपने मटके फोड़े ताकि उनकी मशालें रोशन होजाए फिर उन सब ने एक साथ नरसिंगा फूँका और चिल्लाए “यह्वे की तलवार और गिदोन की तलवार “

जिदौन और उसके लोगों ने मिद्यानियों पर किस तरह हमला किया ?

उन्होंने मिद्यानियों की छावनी का मुहासरा किया , मटकों को फोड़ा , मशालें निकालीं , अपनी क़रनें बजाईं और चिल्लाए “यह वह की तलवार और जिदौन की तलवार -

---

16:14

खुदा ने मिद्यानियों को इस तरह मुताज्जुब और परेशान कर दिया कि वह एक दुसरे पर हमला करने और उन्हें हलाक करने लगे जिदौन ने फ़ौरन पैग़ाम देने वालों को भेजकर दीगर इस्राईलियों बुलवा भेजा कि वह अपने –अपने घरों से निकलें और मिद्यानियों का पीछा करके उनको क़त्ल करें –सो उनहोंने उनका पीछा किया और इस्राईल के मुल्क से बाहर ले जाकर उन्हें क़त्ल किया –उस दिन 1,20,000 मिद्यानी मारे गए – इस तरह खुदा ने बनी इस्राईल को मिद्यानियों से छुटकारा दिलाया -

मिद्यानियों को शिकस्त देने के लिए ख़ुदा ने जिदौन की कैसे मदद की ?

ख़ुदा ने मिद्यानियों को उलझन में डाल दिया कि वह आपस में ही एक दुसरे को हलाक करने लगे -

---

16:15

लोग जिदौन को अपना बादशाह बनाना चाहते थे –मगर जिदौन ने ऐसा होने नहीं दिया मगर उसने उनसे कुछ सोने की अंगूठी मांगी जो उनहोंने मिद्यानियों से लूटा था –मगर मिद्यानियों ने जिदौन को बहुत सारा सोना दिया -

---

16:16

फिर जिदौन ने उन सोने के जेवरात से सरदार काहिनों के पहनने के लिए ख़ास चोगे बनवाए –मगर बाद में लोगों ने उन चोगों को मूरत बतौर पूजना शुरू कर दिया –सो खुदा ने बनी इस्राईल को इस बात के लिए फिर से सज़ा दी –क्यूंकि उनहोंने उन कपड़ों की परस्तिश बुत बतौर की –वह सज़ा यह थी कि उन के दुश्मनों से उनको शिकस्त मिली – आखिरकार उनहोंने खुदा से फिर से मदद मांगी –और खुदा ने उनको बचाने के लिए एक दूसरा छुड़ाने वाला भेजा -

जंग की कामयाबी के बाद जिदौन ने ऐसा क्या किया कि लोग वापस बुत परस्ती की तरफ़ लौट आए ?

उसने सोने की पोशाक बनवाईं जिनकी लोगों ने पूजा करनी शुरू कर दी -

---

16:17

इसी तरह एक ही चीज़ कई बार वाक़े हुआ –बनी इस्राईल गुनाह करते थे,खुदा उन को सज़ा देता था ,फिर वह तौबा करते थे और खुदा उनको बचाने के लिए किसी न किसी को भेजता था – बहुत सालों तक खुदा ने कई एक छुड़ाने वाले भेजे जिन्होंने बनी इस्राईल को उनके दुशमनों से छुड़ाया -

वह कौनसी मिसाल थी जो बनी इस्राईल में कई बार दुहराई गई थी ?

बनी इस्राईल गुनाह करते , ख़ुदा उनको सज़ा देता , फिर वह तौबा करते और ख़ुदा उन्हें बचाने के लिए एक छुडाने वाला भेज देता था -

---

16:18

आखिर कार लोगों ने खुदा से एक बादशाह की मांग की जिस तरह दीगर कौमों के हुआ करते थे –उन्हों ने एक ऐसा बादशाह चाहा जो लम्बा और क़द आवर और ताक़तवर हो जो जंग में उनकी रहनुमाई कर सके – मगर खुदा ने उनकी दरखास्त कबूल नहीं की – मगर जैसा उन्हों ने एक बादशाह माँगा था वैसा उनको दे दिया -

लोगों ने ख़ुदा से एक बादशाह की मांग क्यूँ की ?

दीगर तमाम क़ौमों के पास बादशाह थे और वह चाहते थे कि कोई हो जो उनको जंग में रहनुमाई करे -

ख़ुदा ने किस तरह उनकी दरख़ास्त का जवाब दिया ?

जिस तरह से उन्होंने माँगा था वैसे ही उन के लिए उसने एक बादशाह दे दिया -

17. खुदा का अहद दाउद के साथ

17:01

साउल बनी इस्राईल का पहला बादशाह था –वह लम्बा चौड़ा और हसीन था जिसतरह लोग चाहते थे – शुरू के कुछ सालों तक साउल एक अच्छा बादशाह बतोर बनी इस्राईल पर हुकूमत की – मगर बाद में वह एक बुरा बादशाह बनगया जिस ने खुदा का हुक्म नहीं बजा लाया इसलिए खुदा ने एक फरक आदमी को चुना कि एक दिन उसकी जगह पर बादशाह बने -

साऊल जो इस्राईल का पहला बादशाह था , वह एक अच्छा बादशाह था या एक ख़राब बादशाह ?

पहले कुछ सालों तक वह एक अच्छा बादशाह साबित हुआ मगर बाद में वह ख़राब बन गया -

---

17:02

खुदा ने दाउद नाम के एक जवान इस्राईली को चुना और उसको तय्यार करना शुरू कियाकि वह शाऊल के बाद बादशाह बने – दाऊद बेथलेहम शहर का एक चरवाहा था –फ़रक फ़रक औक़ात में दाऊद ने एक बब्बर शेर और एक रींच को मारा था जो उसके बाप की भेड़ों पर हमला किए थे जब वह उन्की निगहबानी कर रहा था –दाऊद एक हलीम और रास्त्बाज़ शख्स था –उसने खुदा पर भरोसा किया और उसका हुक्म बजा लाया -

दाऊद के बादशाह बनने से पहले उसका पेशा क्या था ?

वह चरवाहा था जो भेड़ों की रखवाली किया करता था -

17:03

जब दाऊद अभी एक जवान ही था उसने एक पहलवान से लड़ाई की जिसका नाम जाती जूलियत था – जुलियत एक अच्छा सिपाही था –वह बहुत ही ताक़तवर और तीन मीटर ऊँचा था ! मगर खुदा जुलियत को मारने और बनी इस्राईल को बचाने में दाऊद की मदद की –उसके बाद दाऊद बनी इस्राईल के दुशमनों पर फ़तेह हासिल करता गया –फिर दाऊद एक बहुत बड़ा सिपाही बन गया –और उसने कई एक जंगों में इस्राईली फ़ौज की रहनुमाई की –लोग उसकी बहुत ज़ियादा तारीफ़ करने लगे थे -

यह क्यूँ ताज्जुब लगता है कि दाऊद जूलियत को मार सकता था ?

इसलिए कि जूलियत तरबियत शुदा ,बहुत ही ताक़तवर और लगभग तीन मीटर लम्बा था -

बनी इस्राईल दाऊद की तारीफ़ क्यूँ करते थे ?

उसने बनी इस्राईल के दुशमनों के ख़िलाफ में कई एक लड़ाइयाँ जीती थीं -

---

17:04

लोग दाऊद से इतना ज़ियादा प्यार करने लगे थे कि साउल बादशाह उससे हसद रखने लगा था –आख़िर कार वह उसको हलाक करना चाहता था – इसलिए दाऊद उससे और उसकी फ़ौज से छिपने के लिए बयाबान को भाग गया - एक दिन जब शाऊल और उसके सिपाही उसकी राह देख रहे थे तो शाऊल एक ग़ार के अन्दर गया –और वह वही ग़ार था जिस के अन्दर दाऊद छिपा हुआ था - मगर शाऊल ने उसे नहीं देखा था –दाऊद बहुत करीब उसके पीछे गया और उसके कपड़े का एक किनारा काट लिया –बाद में शाऊल जब ग़ार से बाहर निकला तो दाऊद ने शाऊल को आवाज़ लगाई कि उसके कपड़े को देखे जिसे अपनी मुट्ठी में दबाए हुए था –इस तरीके से शाऊल जानता था कि दाऊद बादशाह बन्ने के लिए उसको मारना नहीं चाहता था -

जब दाऊद को एक मौक़ा मिला था कि साऊल को एक ग़ार में हलाक करदे तो दाऊद ने क्या किया ?

उसने साऊल को छोड़ दिया था और उसके कपड़े का एक किनारा काट लिया था -

---

17:05

कुछ अरसा बाद शाऊल जंग में मारा गया और दाऊद इस्राईल का बादशाह बन गया - वह एक अच्छा बादशाह था और लोग उससे प्यार करते थे – खुदा ने दाऊद को बरकत दी और उसको कामयाब बनाया –दाऊद ने कई एक जंगें लड़ीं और खुदा ने उसकी मदद की कि बनी इस्राईल के दुशमनों को शिकस्त दे –दाऊद ने यरूशलेम शेहर पर फ़तेह हासिल की और उसको अपना अहम् शहर (दारुलखिलाफा) बनाया जहाँ उसने रहकर हुकूमत की –दाऊद चालीस साल तक इस्राईल का बादशाह रहा –इस दौरान इस्राईल एक ज़बरदस्त और दौलतमंद सल्तनत थी

वह कौनसा शहर था जिस पर दाऊद ने फ़तह हासिल की थी और फिर उसको पाएतख़्त बना दिया गया था ?

येरूशलेम

17:06

दाऊद एक मंदिर बनाना चाहता था जहाँ तमाम इसरा ईली मिलकर खुदा की इबादत करते और उसके लिए कुर्बानियां चढ़ाते - 400 साल तक दाऊद के बनाए हुए मंदिर में लोग खुदा की इबादत करते रहे और उस मज़बह पर कुर्बानियां चढ़ाते थे जिसे मूसा ने बनाया था -

दाऊद ख़ुदा के लिए क्या बनाना चाहता था?

दाऊद ख़ुदा के लिए एक मंदिर बनाना चाहता था जहां तमाम इस्राईली एक जगह मिलकर ख़ुदा की इबादत करें और उसके लिए क़ुर्बानियां चढ़ाएँ -

---

17:07

मगर उन दिनों नातन नाम का एक नबी रहता था –खुदा ने उसको दाऊद के पास यह कहने के लिए भेजा कि: तुमने बहुत सी लड़ाइयाँ लड़ी हैं – इसलिए तू मेरे लिए मंदिर नहीं बनाएगा ,बल्कि तेरा बेटा बनाएगा –मगर इसके बावजूद भी मैं तुमको बहुत ज़ियादा बरकत दूंगा –तेरी नसल में से एक हमेशा के लिए मेरे लोगों पर हुकूमत करेगा ! दाउद की नसल में से जो हमेशा के लिए हुकूमत कर सकता था वह सिर्फ़ मसीहा था –मसीहा खुदा का चुना हुआ था –जोकि दुनिया के लोगों के गुनाहों से बचा सकता था -

ख़ुदा ने दाऊद को मंदिर बनाने क्यूँ नहीं दिया ?

इसलिए कि दाऊद एक जंगी मर्द था -

ख़ुदा ने दाऊद से क्या कहा कि मंदिर कौन बनाएगा?

दाऊद का बेटा उसे बनाएगा -

वह कौनसा बड़ा वायदा था जो ख़ुदा ने दाऊद से किया था ?

ख़ुदा ने वायदा किया था कि उस की औलाद में से एक बनी इस्राईल पर हमेशा के लिए बादशाही करेगा -

कौनसा बड़ा काम मसीहा अंजाम देने वाला था ?

वह दुनिया के लोगों को उनके गुनाहों से बचाएगा -

17:08

जब दाऊद ने नातन का पैग़ाम सुना तो उसने ख़ुदा का शुक्रिया अदा किया और उसकी हम्द ओ तारीफ़ की – खुदा उसकी ताज़ीम कर रहा था और उसको बहुत सी बरकतें दे रहा था –हाँ ,यह बात दाऊद नहीं जानता था कि यह काम खुदा कब पूरा करेगा –अब हम जानते हैं कि इसराईलियों को एक लम्बे अर्से तक इंतज़ार करने की ज़रूरत थी इससे पहले कि मसीहा आए ,तक़रीबन 1000 साल बाद -

---

17:09

कई सालों तक दाऊद ने अपने लोगों पर इन्साफ़ के साथ हुकूमत की –उसने खुदा का हुक्म बजा लाया और खुदा ने उसे बहुत बरकत दी –मगर किसी तरह अपनी जिंदगी के आखरी अय्याम में उसने खुदा के ख़िलाफ़ निहायत शदीद गुनाह किया -

---

17:10

एक दिन दाऊद अपने महल से एक ख़ूबसूरत औरत को नहाते हुए देखा – वह उस औरत को नहीं जानता था –मगर उसने किसी तरह मालूम कर लिया कि उसका नाम बेथसबा था -

वह कौनसा हौल्नाक गुनाह था जो दाऊद ने आगे चलकर अपनी ज़िन्दगी में किया ?

वह ऊरियाह की बीवी बैतसबा के साथ सोया और ऊरियाह का क़त्ल कराया -

---

17:11

बजाए इसके कि उसको नज़र अंदाज़ करे दाऊद ने किसी को भेजकर उसे अपने घर बुला लिया – कुछ ही अर्से में बेथसबा ने दाऊद को पैग़ाम भिज्वाया कि वह हमल से है -

वह कौनसा हौल्नाक गुनाह था जो दाऊद ने आगे चलकर अपनी ज़िन्दगी में किया ?

वह ऊरियाह की बीवी बैतसबा के साथ सोया और ऊरियाह का क़त्ल कराया -

---

17:12

बेथसबा के शोहर का नाम ऊरियाह था – वह दाऊद के सब से अच्छे सिपाहियों में से एक था उस वक़्त वह बहुत दूर लड़ाई के मैदान में था –दाऊद ने ऊरियाह को जंग से वापस बुलाया और उसको कुछ दिन अपनी बीवी के साथ रहने को कहा – मगर ऊरियाह ने घर जाने से इंकार किया जबकि बाक़ी सिपाही लड़ाई के मैदान में थे – सो दाऊद ने ऊरियाह को वापस जंग में भेज दिया –और सिपहसालार को हुक्म दिया कि ऊरियाह को एक ताक़तवर दुशमन के पास रखा ताकि वह मारा जाए - यह वाक़िया हुआ : ऊरियाह जंग में मारा गया -

वह कौनसा हौल्नाक गुनाह था जो दाऊद ने आगे चलकर अपनी ज़िन्दगी में किया ?

वह ऊरियाह की बीवी बैतसबा के साथ सोया और ऊरियाह का क़त्ल कराया -

---

17:13

ऊरियाह के मरने के बाद दाऊद ने बेथसबा से शादी करली –उसने दाऊद के बेटे को जन्म दिया – दाऊद ने जो कुछ किया उस से खुदा बहुत नाराज़ था – सो उसने नातन नबी को दाऊद के पास यह कहने के लिए भेजा कि उसका गुनाह कितना शदीद था – दाऊद ने अपने गुनाहों से तौबा की और खुदा ने उसको मुआफ़ कर दिया ज़िनदगी के बाक़ी दिनों में दाऊद खुदा के पीछे हो लिया और खुदा का हुक्म बजा लाया यहाँ तक कि मुश्किल औक़ात में भी -

जब नातन ने दाऊद का गुनाह ज़ाहिर कर दिया तो दाऊद ने क्या किया ?

दाऊद ने अपना गुनाह क़बूल किया , तौबा की और ख़ुदा ने उसे मुआफ़ कर दिया -

---

17:14

मगर दाऊद का बच्चा मर गया – इस तरह से खुदा ने दाऊद को सज़ा दी – इसके अलावा दाऊद के मरने तक उस के खानदान वालों ने उस्के खिलाफ लड़ाई की और अपनी सल्तनत की ताक़त खो बैठा – मगर खुदा उसके लिए वफादार था –तब भी उसने दाऊद के साथ वैसा ही किया जैसा उसने उससे वादा किया था – बाद में बेथसबा से एक और बेटा पैदा हुआ और उसने उसका नाम सुलेमान्न रखा -

ख़ुदा ने दाऊद को उसके गुनाह की सज़ा कैसे दी ?

दाऊद का नौज़ाद बेटा मरगया , उस की ज़िन्दगी के बाक़ी अय्याम में उसके ख़ानदान में लड़ाइयाँ चलती रहीं और दाऊद की सल्तनती ताक़त दिन ब दिन कमज़ोर होती चली गयी -

दाऊद की ग़ैर वफ़ादारी के बावजूद भी क्या ख़ुदा अपने वायदे पर अटल रहा ?

जी हाँ -

उस बेटे का क्या नाम था जो बाद में दाऊद और बैतसबा से हुआ था ?

सुलेमान

18 , तक़सीम शुदा हुकूमत

18:01

दाऊद बादशाह ने चालीस साल तक हुकूमत की –फिर वह मर गया और उसका बेटा सुलेमान इस्राईल पर हुकूमत करने लगा – खुदा ने सुलेमान से बात की और उससे पूछा,वह क्या चाहता है कि वह उस के लिए करे –सुलेमान ने हिकमत की मांग की – इस बात ने खुदा को ख़ुश किया – सो खुदा ने सुलेमान को दुनिया का का सब से ज़ियादा अक्लमंद बनाया – सुलेमान बहुत सी सी बातें अपने तजुर्बे से सीखीं और एक नियायत ही अक्ल्मंद हु कूमत करने वाला बतोर साबित हुआ -

सुलेमान ने ख़ुदा से किस चीज़ कि मांग कि थी कि वह उसको दे ?

हिकमत , अक़्ल , दानाई

18:02

येरूशलेम में सुलेमान ने मंदिर बनाया जिसके लिए उसके बाप दाऊद ने पहले से ही मंसूबा कर रखा था और ता'मीर की चीज़ें इकटठी कर रखी थी – अब उस पुराने ख़ेमे के बदले लोग इस नए मंदिर में खुदा की इबादत किया करते थे और कुर्बानियां गुज़रानते थे - अब खुदा की मौजूदगी उसके लोगों के साथ मंदिर में थी जिस तरह से मूसा के दिनों में रहा करती थी-

मंदिर का क्या मक़सद था जिसे सुलेमान ने बनवाया ?

यह एक मक़ाम था जहाँ लोग इबादत करते थे और क़ुर्बानियाँ गुज़रानते थे -

---

18:03

मगर सुलेमान ने दुसरे मुल्क की औरतों से प्यार किया –कई एक औरतों से शादी करने के ज़रिये उसने खुदा के हुक्म की नाफ़रमानी की – यानि कि पूरे 1000 औरतों को रखने के ज़रिए – इन में से बहुत सी और्ते बाहरी मुल्क की थीं जो अपने देवताओं को अपने साथ लेकर आईं थीं और उन्हें पूजना जारी रखा – जब सुलेमान बूढ़ा होने लगा था तो उसने भी उनके इन देवताओं की पूजा की -

वह कौनसा संजीदा गुनाह था जो सुलेमान ने अंजाम दिया ?

उसने कसीर तादाद में ग़ैर मुल्की औरतों से शादी की और बुज़ुर्गी के अय्याम में उनके ग़ैर माबूदों की परस्तिश की --

---

18:04

खुदा सुलेमान से इस बात से ग़ुस्सा था कि उसने कहा मैं उसको इस तरह से सज़ा दूंगा कि उसकी सल्तनत दो हिस्सों में तक़सीम होकर रह जाएगी -

ख़ुदा ने सुलेमान के गुनाहों की सज़ा कैसे दी ?

ख़ुदा ने आगाह किया था कि सुलेमान के मरने के बाद बनी इस्राईल क़ौम की सल्तनत दो हिस्सों में बट कर रह जाएगी -

---

18:05

सुलेमान के मरने के बाद उसका बेटा रहुबेआम बादशाह बना – तमाम इस्राईली कौम के लोग़ जमा होकर उसको बादशाह बतोर कबूल किया - उनहोंने रेहुबेआम से शिकायत की कि सुलेमान ने उनपर बड़ी मेहनत का काम सोंपा था और बहुत ज़ियादा लगान मुक़र्रर किया था –उनहोंने रेहुबेआम से दरखास्त की कि उनकी मेहनत के काम को कम की जाए -

---

18:06

मगर रेहुबेआम ने उन्हें बेवकूफ़ाना अन्दाज़ में जवाब दिया कि ,"मेरे बाप सुलेमान ने तुमसे ज़ियादा मेह्नत के काम कराए थे मगर मैं तुमसे और ज़िआदा मेहनत कराऊंगा –जितना उसने कराया था उससे भी ज़ियादा -

कैसा अहमक़ाना जवाब रेहुबोआम ने लोगों को दिया ?

मैं तुमको और ज़ियादा मशक़्क़त का काम दूंगा और मैं अपने बाप सुलेमान से ज़ियादा तुमको सज़ा दूंगा -

---

18:07

जब लोगों ने यह सुना तो उन में से बहुत से लोगों ने उसके ख़िलाफ़ बग़ावत की – दस क़बीलों ने उसे छोड़ दिया – सिर्फ़ दो क़बीले उस के पास रह गए – यह दो क़बीले ही खुद से यहूदा की सल्तनत कहलाई -

रेहुबोआम के साथ जो दो क़बीले इस्राईल के जुनूब में पाए गए थे उस सल्तनत का क्या नाम था ?

यहूदा की सल्तनत

18:08

दीगर दस क़बीलों ने येरुबेआम नाम के एक शख्स को अपना बादशाह बनाया –यह क़बीले मुल्क के शुमाली हिस्से में रहते थे –उन्होंने खुद को इस्राईल की सल्तनत कहा -

कितने क़बीलों ने रेहुबोआम के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई , ग़द्दारी की और शिमाली सल्तनत क़ायम की ?

पूरे दस क़बीले मिलकर शिमाली इस्राएल की सल्तनत बनी -

18:09

मगर येरुबेआम ने खुदा के ख़िलाफ़ बग़ावत की और लोगों को गुनाह करने का सबब बनाया –उसने अपने लोगों की परस्तिश के लिए दो बड़े बुत (मूरत) बनवाए –अब वह येरूशलेम में जो यहूदा की सल्तनत के मातहत थी मंदिर में खुदा की इबादत के किए नहीं जाते थे -

येरुबोआम ने अपने लोगों को यहूदा के मंदिर में इबादत के लिए जाने से रोकने के लिए क्या किया ?

उस ने लोगों को परस्तिश के लिए दो बुत (मूर्तियाँ) बनवा दी -

18:10

यहूदा की सल्तनत और इस्राईल की सल्तनत आपस में दुश्मन बन गए और अक्सर वह एक दुसरे से लड़ाई करने लगे -

---

18:11

इस्राईल की नई सल्तनत में तमाम बादशाह ख़राब थे –इन बादशाहों में से कई एक बादशाह दीगर इस्राईलियों के ज़रिये क़त्ल किए जाते थे जो उनकी जगह बादशाह बनना चाहता था -

बनी इस्राईल के कितने बादशाह ख़ुदा के वफ़ादार रहे ?

कोई नहीं -

18:12

इस्राईल की सलतनत में तमाम बादशाह और उनके लोग बुतों की पूजा करते थे – जब वह ऐसा करने लगे तो गुनाह बढ़ने लगा , वह कस्बियों के साथ सोने लगे और यहाँ तक कि बुतों के आगे बचचों की क़ुर्बानी देने लगे -

मूर्ती पूजा में जो अक्सर दस्तूर के मुवाफ़िक़ बुरी बातें शामिल की जाती थी वह क्या थीं ?

जिन्सी बद इखलाक़ी और बच्चों की क़ुर्बानी -

18:13

यहूदा की सल्तनत दाऊद की नसल थी – इन के कुछ बादशाह नेक थे जो इन्साफ से हुकूमत करते और खुदा की इबादत करते थे – मगर यहूदा के कई बादशाह बुरे थे – वह बुरी तरह से हुकूमत करते और बुत की पूजा करते थे – इनमें से कुछ बादशाह झूटे देवताओं के लिए बचचों की क़ुर्बानी देते थे – यहूदा के बहुत से लोगों ने खुदा के ख़िलाफ़ बग़ावत की और ग़ैर माबूदों की पूजा की -

यहूदा के बादशाहों का अज्दाद् कौन था ?

दाऊद बादशाह -

क्या यहूदा के बादशाहों में से कोई ख़ुदा का वफ़ादार था ?

जी हां - कुछ थे जो वफ़ादार थे मगर अक्सर बुरे थे -

19. अंबिया

19:01

खुदा हमेशा से बनी इस्राईल के बीच नबियों को भेजता आरहा था – नबी लोग खुदा से पैग़ाम सुनते थे ,और लोगों को सुनाया करते थे -

नबी लोग कहाँ से पैग़ाम हासिल करते थे जब वह लोगों से बोलते थे ?

वह ख़ुदा से पैग़ामात सुनते थे -

19:02

इस्राईल कि हुकूमत में जब अखीअब बादशाह था तो उन दिनों एलियाह नाम का एक नबी था – अखीअब एक बुरा शख्स था – वह लोगों को बाल नाम झूटे देवता की पूजा करने पर उकसाता था – गुमराह करता था –सो एलियाह
ने अखीअब बादशाह से कहा ,खुदा लोगों को सज़ा देने जा रहा है – उसने उससे कहा “जब तक मैं दोबारा इस बात को लेकर न कहूं इस्राईल में आगे को कोई बारिश नहीं होगी और न ओस पड़ेगी – इस बात को लेकर अखीअब एलियाह से बहुत ग़ुस्सा हुआ -

वह कौनसी नबुव्वत थी जो एलियाह ने अख़िअब बादशाह से कही ?

जब तक मैं न कहूँ इस्राईल कि सल्तनत में ना तो बारिश होगी न शबनम कि बूंदें -

---

19:03

सो खुदा ने एलियाह से कहा बयाबान में जाकर छिप जा ताकि अखीअब तुझे देख न पाए – एलियाह बयाबान में एक नाले के पास गया जहां के लिए खुदा ने उसकी रहनुमाई की थी – हर सुबह और शाम कव्वे उसके लिए रोटी और गोश्त लाया करते थे – इस दौरान अखीअब और उसकी फ़ौज एलियाह की तलाश करते थे मगर वह उसको ढूंढ न पाए थे -

बयाबान में एलियाह के लिए ख़ुदा ने कौनसी चीज़ मुहय्या की जहां वह छिपा हुआ था ?

ख़ुदा ने हर सुबह और शाम कव्वों के ज़रिये से गोश्त और रोटी खिलाई -

---

19:04

बारिश नहीं हो रही थी – कुछ दिनों बाद नाले का पानी भी सूखने लगा था – सो एलियाह नज़दीक के एक मुल्क में जाकर रहने लगा – उस मुल्क में एक ग़रीब बेवा रहती थी – एलियाह उस बेवा के पास जाकर रहने लगा -उसका एक बेटा था – फ़सल न होने के सबब से उन के पास खाने के लिए खाना नहीं था – मगर वह औरत एलिया का ख़याल रखती थी – सो खुदा ने भी उन दोनों के लिए खाने का इंतज़ाम किया – उनका आटा तेल कभी ख़त्म नहीं हुआ – क़हत के दौरान भी उन के पास भरपूरी से ख़ुराक थी – एलियाह वहां पर कई साल तक रहा -

ख़ुदा ने एलियाह के लिए कैसा इंतज़ाम किया जब वह बेवा और उसके बेटे के साथ रहता था ?

ख़ुदा ने उनके आटे के बर्तन और तेल की बोतल को कभी खाली नहीं होने दिया -

---

19:05

साढ़े तीन साल बाद ,खुदा ने एलियाह से कहा कि वह फिर से बारिश होने देगा –उसने एलियाह से कहा इस्राईल की सल्तन्त में जाओ और अखीअब से बात करो – सो एलियाह अखीअब के पास गया –जब अखीअब ने उसे देखा तो एलियाह ने उससे कहा “तो तुम यहाँ हो परेशान करने वाले ! एलियाह ने जवाब दिया “तुम हो परेशान करने वाले ! तुम ने यह्वे को जो सच्चा खुदा है छोड़ दिया है और तुम बा”ल की पूजा करने लगे हो – तुम ऐसा करो कि अपनी सलत्नत के तमाम लोगों को जो बा’ल के पुजारी हैं करमेल की पहाड़ी पर ले आओ -

कौनसी ऐसी बुरी बात थी जो एलियाह ने अख़िअब से कहा कि तूने इसे अंजाम दिया है ?

अख़िअब ने यह वह को जो सच्चा ख़ुदा है छोड़ दिया था और बाल कि परस्तिश करने लगा था -

---

19:06

सो इस्राएल के तमाम लोग करमेल की पहाड़ी पर आए पर आए – एलियाह ने बाल के पुजारी से कहा ,बा’ल को पैग़ाम भेजो कि वह भी यहाँ आए - वहाँ पर 450 बा’ल के नबी थे – एलियाह ने उन बा’ल के नबियों से कहा –“तुम कब तक दो ख़यालों में लटके रहोगे ?, कब तक डांवां डोल रहोगे ? अगर यह्वे सच्चा खुदा है तो उसकी परस्तिश करो और अगर बाल खुदा है तो उसकी पूजा करो !”

एलियाह ने कौनसा चुनाव लोगों के सामने रखा कि तुम्हें इसे करना है ?

अगर यह वह ख़ुदा है तो तुम उसकी ख़िदमत करो ,पर अगर बाल तुम्हारा देवता है तो तुम उसकी ख़िदमत करो -

---

19:07

फिर एलियाह ने बाल के नबियों से कहा ,"एक बैल को ज़बह करो और उसके टुकड़े करके मज़बह पर रखो , मगर उसको जलाना नहीं – मैं भी एक बैल ज़बह करके दुसरे मज़बह पर वैसा ही रखूँगा – अगर मेरा खुदा ऊपर से मज़बह पर आग भेजता है तो तुम जान लोगे कि वह सच्चा खुदा है- सो बाल् देवताओं ने एक मजबह तय्यार किया मगर उसको नहीं जलाया -

---

19:08

फिर बाल के नबी बाल से फ़रयाद करने लगे, " ऐ बाल हमारी सुनो "-दिन भर वह फ़रयाद करते रहे और चिल्लाते रहे , यहाँ तक कि उनहोंने अपने आप को भी ज़ख़्मी किया , लहू लुहान हुए मगर बाल ने कोई जवाब् नहीं दिया , न ही कोई आग भेजी-

---

19:09

बाल के नबियों ने सारा दिन बाल से फ़रयाद करने में लगा दिए – आखिर कार जब थक हार गए तो फ़रयाद करना बन्द किया – फिर एलिया ने एक और बैल खुदा के लिए ज़बह करके मज़बह पर रखा – उस के बाद उसने लोगों से कहा कि बारह मटके पानी उस मज़बह पर उंडेल दो ताकि मज़ब की सारी चीज़ें पूरी तरह से तर हो जाए-

---

19:10

फिर एलियाह ने दुआ की , "ऐ यह्वे , अब्रहाम , इज़हाक़ और याक़ूब के ख़ुदा , आज तू बता दे कि तू इस्राईल का ख़ुदा है और मैं तेरा खादिम हूँ – मुझे जवाब दे ताकि यह लोग जान लें कि तू ही सच्चा खुदा है –"

19:11

फ़ौरन ही आसमान से आग नाज़िल हुई – उसने गोश्त, लकड़ी ,पत्थरों और मिटटी को जला डाला ,यहां तक कि आसपास के पानी को भी पूरी तरह से सुखा डाला – जब लोगों ने इसे देखा तो खुद को ज़मीन पर झुका दिया और कहा ,"यह्वे ही खुदा है ! यह्वे ही खुदा है !

ख़ुदा ने किस तरह अपना मज़ाहिरा किया कि वह हकीकी ख़ुदा है ?

ख़ुदा ने आसमान से आग नाज़िल की कि मज़बह पर रखी सारी चीज़ें : गोश्त , लकड़ी , पत्थर , गंदगी और पानी सब को जलाकर राख कर दिया -

ख़ुदा के इस मज़ाहिरे की क़ुव्वत को देखकर लोगों ने क्या रद्देअमल पेश किया ?

वह ज़मीन पर गिरे और कहा ," यह वह ख़ुदा है ! यह वह ख़ुदा है !"

19:12

फिर एलियाह ने कहा ,"कोई भी बाल के नबी बचने न पाएं , उन सबको क़त्ल कर डालो "सो लोगों ने बाल के तमाम नबियों को पकड़ा और उन्हें दूर लेजाकर क़त्ल किया -

बाल के नबियों का क्या हाल हुआ ?

उनको शहर के बाहर लेजाकर क़त्ल किया गया -

19:13

फिर एलियाह ने अखीअब बादशाह से कहा, " फ़ौरन अपने घर वापस चला जा क्यूंकि बारिश शुरू होने वाली है " तभी आसमान काला हो गया और सख्त बारिश शुरू हो गई – यह्वे क़हत को बन्द करने वाला था जो यह ज़ाहिर करता है कि वह सच्चा खुदा है -

---

19:14

जब एलियाह ने अपना काम ख़त्म किया तो खुदा ने एलिशा नाम एक शख्स को नबी होने के लिए चुना – खुदा एलिशा के ज़रिये कई एक मोजिज़े कराए – उनमें से एक मोजिज़ा नामान की जिंदगी में वाक़े हुआ – वह दुमन की फ़ौज का एक सिपहसालार था मगर उसको चमड़ी की बिमारी थी –(वह एक कोढ़ी था) - नामान ने एलिशा की बाबत सुना और वह एलिशा के पास जाकर कहा कि वह उसे शिफ़ा दे- एलिशा ने नामान से कहा कि यरदन में जाकर सात बार गोता लगा -

अपनी खाल कि बिमारी से शिफ़ा देने के लिए एलिशा ने नामान से क्या कहा ?

यर्दन नदी में जाकर सात बार ग़ोता लगाए -

19:15

नामान ग़ुस्सा हुआ , उसने ऐसा करने से इनकार किया क्यूंकि यह उसे बेवकूफ़ी लगती थी – मगर बाद में उसका ख़याल बदल गया – वह यरदन नदी में जाकर सात बार गोता लगाया – जब वह आखरी बार पानी से ऊपर आया तो खुदा ने उसे शिफा दी -

एलिशा कि हिदायत को सुनकर नामान ने क्या किया ?

पहले तो वह नाराज़ था वह इसे नहीं करेगा क्यूंकि वह उसको बेवकूफ़ी लगती थी , मगर बाद में उस ने अपना ख़याल बदल दिया , उसपर अमल किया और वह पूरी तरह से शिफ़ायाब हो गया -

---

19:16

खुदा ने कई और नबियों को बनी इस्राईल के पास भेजा उन सब ने ही लोगों से कहा कि बुतपरस्ती से बाज़ आओ और लोगों के साथ इन्साफ से पेश आओ और लोगों पर रहम का बर्ताव करो – नबियों ने उन्हें खबरदार किया कि वह बुराई से फिरें और खुदा का हुक्म बजा लाएं नहीं तो खुदा खुद उन्हें मुजरिम ठहराएगा , और वह उन्हें सज़ाएं देगा -

नबियों का पैग़ाम लोगों के लिए आम तौर पर क्या होता था ?

बुत परस्ती मत करो , दूसरों के साथ इंसाफ़ और रहम का बर्ताव करो , नहीं तो ख़ुदा तुमको सज़ा देगा -

---

19:17

अक्सर औक़ात में लोगों ने खुदा का हुक्म नहीं बजा लाया – बार-बार उनहोंने नबियों के साथ बुरा सुलूक किया- यहाँ तक कि उन्हों ने उनको हालाक भी कर डाला एक बार उन्हों ने नबी यर्म्याह को सूखे कुँए में डाल दिया था और उसे मरने के लिए छोड़ दिया था – वह कुँए के नीचे कीचड़ में डूब गया था मगर बादशाह ने उसपर तरस खाई और अपने नौकरों को हुक्म दिया कि उसको कुँए से खींच कर बाहर निकाले इस से पहले कि वह मर जाए -

आम तौर पर लोगों ने नबियों के साथ किस तरह का बर्ताव किया ?

आम तोर पर लोगों ने नबियों के साथ बुरा सुलूक किया और यहाँ तक कि उन्हें क़त्ल भी किया -

लोगों ने यिर्मयाह नबी के साथ कैसा बुरा बर्ताव किया ?

यिर्मयाह को लोगों ने एक सूखे कुएं में डाल दिया और वहीँ पर उन्होंने उसको मरने के लिए छोड़ दिया -

क्या यिर्मयाह उसी कुएं में मरगया था ?

नहीं – बादशाह ने उसपर तरस खाया और अपने नौकरों को हुक्म दिया कि "यिर्मयाह को कुएं से बाहर निकालो"-

---

19:18

नाबियों ने खुदा का पैग़ाम देना जारी रखा इस के बावजूद भी कि बनी इस्राईल ने उनसे नफ़रत की –उनहोंने लोगों को खबरदार किया कि अगर वह अपने गुनाहों से तौबा नहीं करते हैं तो खुदा उन सबको बर्बाद कर देगा - उन्हों ने लोगों को यह भी याद दिलाया कि खुदा उनके लिए मसीहा को भेजने का वादा किया है -

नबियों ने लोगों को याद दिलाया कि ख़ुदा एक ख़ास शख़्स को उनके लिए भेजेगा -वह शख़्स कौन था ?

वह शख़्स जिस को ख़ुदा भेजने वाला था वह मसीहा था -

20. जिलावतनी और वापसी

20:01

इस्राईल की सल्तनत और यहूदा की सल्तनत दोनों ने खुदा के ख़िलाफ़ गुनाह किया उन्हों ने खुदा के उस अहद को तोड़ा जो खुदा ने उनके साथ सीना पहाड़ में बाँधा था – खुदा ने अपने नबियों को भेजा कि उन्हें तौबा करने और फिर से उसकी इबादत करने के लिए ख़बरदार करे –मगर उन्हों ने बजा लाने से इनकार किया -

ख़बरदार करने वाली वह कौनसी बात थी जो नबियों ने लोगों से कही ?

उन्हों ने उन से कहा तौबा करो और ख़ुदा कि इबादत करो

लोगों ने नबियों के पैग़ाम का किस तरह से रद्देअमल पेश किया ?

लोगों ने हुक्म बजा लाने से इनकार किया -

20:02

सो खुदा ने दोनों सल्तनतों को इस तरह से सज़ा दी कि उनके दुशमनों के हाथों बर्बाद होने दिया – असीरिया की एक दूसरी कौम थी जो बहुत ही ज़ोरावर साबित हुई – वह भी दीगर क़ौमों के लिए बेहद ज़ालिम थे – उन्हों ने आकर इस्राईल की सल्तनत को बर्बाद किया – इस्राईल की सल्तनत में उनहोंने बहुतों को हलाक किया –जो चीज़ें वह चाहते थे उन्हें लूटा और मुल्क के कई हिस्सों में आगज़नी फैलाई -

वह कौन दुशमन थे जिन्होंने इस्राईल की हुकूमत को बर्बाद किया ?

असीरिया की सल्तनत -

20:03

असीरिया के लोगों ने इस्राईल के तमाम रहनुमाओं , अमीर लोगों , और उन तमाम माहिरों को जो कीमती चीज़ें बनाते थे उन सबको असीरिया ले गए – सिर्फ़ कुछ ग़रीब इसराईली इस्राईल में बचे रह गए थे-

---

20:04

फिर असीरिया के लोगों ने परदेसियों को भी मुल्क में रहने के लिए ले आए – उन परदेसियों ने दोबरा से शेहरें तामीर कीं –उनहोंने छोड़े हुए इसराईलियों से शादी की –इनकी नसल के लोगों को सामरी कहा गया -

सामरी लोग कौन थे ?

यह बनी इस्राईल की औलाद थी जिन्होंने ग़ैर मुल्की औरतों से शादी की और असीरिया के लोगों के ज़रिये मुल्क में लाया गया -

---

20:05

यहूदा सल्तनत के लोगों ने देखा कि किस तरह खुदा ने इस्राईल की सल्तनत के लोगों को ईमान न लाने और उसका हुक्म बजा न लाने के सबब से उन्हें सज़ा दी थी-इस के बावजूद भी यहुदा बुतपरस्ती से बाज़ नहीं आया –उन्होंने कनानियों के देवताओं को भी शरीक किया – खुदा ने उन्हें ख़बरदार करने के लिए नबियों को भेजा मगर उन्होंने सुन्ने से इनकार किया –

क्या यहूदा के लोग ख़ुदा का हुक्म बजा लाए थे जब उन्होंने देखा कि किस तरह इस्राईली हुकूमत के लोगों को सज़ा दी गई ?

नहीं , बल्कि वह लगातार बुत परस्ती में मसरूफ़ रहे -

20:06

असीरिया ने पूरी तरह से इसराईली सल्तनत को ख़त्म कर दिया था उसके 100 साल बाद् खुदा ने यहूदा पर हमला करने नबुकदनेज़र को भेजा जो बाबुल का बादशाह था - बाबुल एक ज़ोरावर क़ौमे थी – यहूदा का बादशाह नबुकदनेज़र का ख़ादिम (नौकर) होने के लिए राज़ी होगया और हर साल बहुत सा पैसा महसूल बतोर देना मंज़ूर किया -

शाहे यहूदा किसकी ख़िदमत करने को राज़ी हुआ ?

बाबुल का बादशाह नबूकदनज़र -

20:07

मगर कुछ साल बाद यहूदा के बादशाह ने बाबुल के ख़िलाफ़ बग़ावत की – सो बाबुल के लोगों ने यहूदा की सल्तनत पर हम्ला किया और यरूशलेम शहर पर क़ब्ज़ा किया , मंदिर को बर्बाद किया और शहर और मंदिर का सारा खजाना लूट कर ले गए -

---

20:08

यहूदा के बादशाह को बग़ावत की सज़ा देने के लिए नबुकदनेज़र के सिपाहियों ने उसके बेटे को बादशाह के सामने क़त्ल किया और बादशाह को अँधा कर दिया फिर इसके बाद बादशाह को मरने के लिए बाबुल के कैदखाने में डाल दिया -

जब यहूदा के बादशाह ने बग़ावत की तो नबूकदनज़र के सिपाहियों ने क्या किया ?

उन्होंने बादशाह के बेटों को मार दिया और उसको अँधा कर दिया और बाबुल ले जा कर क़ैद में मरने के लिए डाल दिया -

---

20:09

नबुकदनेज़र की फ़ौज ने यहूदा की सल्तनत के तमाम लोगों को बाबुल में ले गए – जो बहुत ही ज़ियादा गरीब थे उन्हें खेत की नशोनुमा के लिए पीछे छोड़ दिया – वह ज़माना था जब खुदा के लोगों को मजबूरन वादा किए हुए मुल्क को छोड़ना पड़ा था उसे जिलावतन कहा जाता है -

जब ख़ुदा के लोगों को वायदा किया हुआ मुल्क ज़बर दस्ती से छोड़ने पर मजबूर किया गया तो उस मुद्दत को हम क्या कहते हैं ?

जिलावतन -

20:10

हालाँकि खुदा ने अपने लोगों को जिलावतनी में लेजाने के ज़रिये से उनके गुनाहों की सज़ा दी ,मगर वह उन्को या फिर अपने वादों को नहीं भूला – खुदा लगातार अपने लोगों पर नज़र रखे हुए था और नबियों के ज़रिये बात करता था –उसने उनसे वादा किया कि सत्तर साल बाद वह उन्हें वादा किए हुए मुल्क में फिर से वापस लेकर जाएगा –

जिलावतनी के दौरान ख़ुदा ने लोगों के लिए क्या वायदा किया ?

ख़ुदा ने वायदा किया कि सत्तर साल बाद वह वायदा किये हुये मुल्क में लौटेंगे -

---

20:11

सत्तर साल बाद साइरस जो फ़ारस का बादशाह था उसने बाबुल को शिकस्त दी – सो फ़ारस की सल्तनत ने बाबुल के मुक़ाबले में कई एक क़ोम पर हुकूमत की –अब इसरा ईली लोग यहूदी कहलाने लगे – इनमें से बहुत से यहूदी बाबुल में अपनी जिंदगी बसर की - सिर्फ़ कुछ पुराने यहूदी थे जो यहूदा के मुल्क को याद करते थे –

वह कौनसा बादशाह था जिसने बाबुल के बादशाह को शिकस्त दी थी ?

फ़ारस कि सल्तनत का बादशाह साइरस ने -

20:12

फ़ारस के लोग बहुत ही मज़बूत थे मगर जिन पर उन्हों ने फ़तेह हासिल की थी उनकी बाबत रहमदिल थे –मुख़्तसर तौर से साइरस जब फ़ारस का बादशाह बन चुका तो उसने एक हुक्म जारी किया कि जो भी यहूदी अपने मुल्क यहूदा को वापस जाना चाहे वह फ़ारस छोड़ सकता है – यहां तक कि उसने उन्हें पैसे भी दिए कि वह जाकर दोबारा मंदिर की तामीर करे – सो जिलावतनी के 70 साल बाद यहूदियों की एक छोटी सी जमाअत यहूदिया में यरूशलेम शहर को वापस हुई -

साइरस बादशाह ने यहूदियों से मुताल्लिक क्या हुक्म जारी किया था ?

जो भी कोई यहूदी यहूदा जाना चाहे वह जा सकता है -

20:13

जब इस्राईली यरूशलेम पहुंचे तो उन्हों ने मंदिर को और शेहरपनाह की दीवार को दुबारा से तामीर किया – फ़ारस के लोग अभी भी उन पर हुकूमत करते थे – मगर एक बार फिर वह वादा किए हुए मुल्क में रहने और मंदिर में इबादत करने लगे थे -

जब यहूदी वापस येरूशलेम आए तो उन्हों ने क्या किया ?

उन्होंने येरूशलेम के मंदिर को और उसकी शहरपनाह की दीवार को दोबारा से तामीर किया -

21. खुदा मसीहा का वादा करता है

21:01

यहाँ तक कि खुदा ने जब दुनिया को बनाया वह जानता था कि एक ज़माने के बाद मसीहा को भेजेगा –उसने आदम और हव्वा से वादा क्या था कि वह ऐसा करेगा –उसने कहा था कि हव्वा की नसल से एक शख्स पैदा होगा जो सांप के सिर को कुचलेगा – जी हाँ वह सांप जिस ने हव्वा से फरेब किया था वह शैतान था –खुदा का यही मतलब था कि मसीहा शैतान को पूरी तरह से शिकस्त देगा -

सब से पहले ख़ुदा ने मसीहा को भेजने का फ़ैसला कब किया ?

बिलकुल इब्तिदा से -

मसीहा शैतान को क्या करेगा ?

मसीहा शैतान को मुकम्मल तौर से शिकस्त देगा -

21:02

खुदा ने अब्रहाम से वादा किया था कि उसके वसीले से तामाम दुनिया की क़ौमें बरकत पाएंगी – खुदा इस वादे को कुछ अरसा बाद ही मसीहा को दुनिया में भेजने के ज़रिये से ही पूरा कर सकता था – मसीहा दुनिया के तमाम कौमों को उनके गुनाहों से बचाने वाला था -

ख़ुदा के उस वायदे को कौन पूरा करेगा जो कहा गया था कि दुनिया की तमाम क़ौमें अब्रहाम के वसीले से बरकत पाएंगीं ?

मसीहा

21:03

खुदा ने मूसा से वादा किया था कि वह मुसतक़बिल में मूसा की तरह एक दुसरे नबी को भेजेगा – यह नबी मसीहा था – इस बतौर खुदा ने फिर से वादा किया कि वह मसीहा को भेजेगा -

किस नज़रिए से मसीहा मूसा जैसा होगा ?

मसीहा मूसा जैसा एक नबी होगा -

21:04

खुदा ने दाऊद बादशाह से वादा किया था कि उसकी अपनी नसल से मसीहा होगा जो एक बादशाह होगा और खुदा लोगों पर हमेशा के लिए हुकूमत करेगा -

मसीहा का रिश्ता दाऊद बादशाह के साथ किस तरह होने वाला था ?

मसीहा दाऊद की नस्ल में से एक होगा -

21:05

खुदा ने यर्म्याह नबी से बातें की और उस से कहा था कि एक दिन वह एक नया अहद बांधेगा – वह नया अहद परं जैसा नहीं होगा जो खुदा ने बनी इस्राईल के साथ सीना पहाड़ में बाँधा था - जब वह इस नए अहद को लोगों के साथ बांधेगा तो वह ऐसा होने देगा कि लोग मसीहा को शख्सि तोर से जानें – हर एक शखस उस से महब्बत रखेगा और उसकी शरीयत को बजा लाना चाहेगा – खुदा ने कहा ,मैं अपनी शरीयत को उनके दिलों में लिखूंगा और वह मेरे लोग होंगे और मैं उनका खुदा होंगा , और वह उनके गुनाह मुआफ़ करेगा –वह मसीहा होगा जो उनसे नया अहद बांधेगा -

21:06

खुदा के नबियों ने भी कहा कि मसीहा एक नबी, एक काहिन, एक बादशाह होगा – एक नबी वह है जो खुदा के कलाम को सुनता है और उसे एक पैग़ाम बतोर लोगों के सामने उसका एलान करता है ख़ुदा ने जिस मसीहा को भेजने का वादा किया था वह एक कामिल नबी था – इसी लिए मसीहा ख़ुदा के पैग़ाम को कामिल तोर से सुनेगा,उन्हें कामिल तौर से समझेगा और कामिल तोर से लोगों को तालीम देगा-

21:07

इस्राईली काहिन लोगों के लिए खुदा को क़ुर्बानी देना जारी रखे हुए थे – यह क़ुर्बानियाँ उन के गुनाहों के लिए खुदा की सज़ा के बदले में थी – काहिन लोग भी लोगों के लिए खुदा से दुआ किया करते थे –मगर यह ज़रूरी था कि मसीहा एक्कमिल सरदार काहिन हो जो खुद को खुदा के लिए एक कामिल क़ुर्बानी को अदा करे – इसके बाद गुनाहों के लिए कोई और क़ुर्बानी की ज़रुरत नहीं है -

मसीहा किस तरह से एक कामिल सरदार काहिनं होगा ?

वह खुद को एक कामिल क़ुर्बानी के तौर पर लोगों की ख़ातिर ख़ुदा के लिए नज़्र करेगा -

---

21:08

बादशाह और हुक्मरान लोगों की जमाअत पर हुकूमत करते हैं और कभी कभी गलतियां भी करते हैं – दाऊद बादशाह ने सिर्फ़ बनी इस्राईल पर हुकूमत की – मगर मसीहा जो दाऊद की नसल से है वह सारी दुनया पर हुकूमत करेगा और हमेशा के लिए करेगा – इस के अलावा वह हमेशा रास्ती से हुकूमत करेगा और सही फ़ैसले लेगा -

किस तरह मसीहा एक कामिल बादशाह होगा ?

वह सारी दुनिया पर हमेशा के लिए बादशाही करेगा और हमेशा ईमानदारी से इंसाफ़ करेगा -

---

21:09

खुदा के नबियों ने दीगर कई बातें मसीहा की बाबत कहीं मिसाल के तोर पर मलाकी ने कहा कि मसीहा के आने से पहले एक दूसरा नबी आएगा – उस नबी का आना बहुत ज़रूरी है – यसायाह नबी ने भी लिखा कि मसीहा एक कुंवारी से जन्म लेगा – और मीका नबी ने कहा कि मसीहा बेथलेहम के कस्बे में पैदा होगा -

मसीहा की पैदाइश की बाबत यसायाह ने कौन सी ख़ास बात कही ?

कि मसीहा एक कुंवारी से पैदा होगा -

21:10

यसायाह नबी ने कहा कि मसीहा गलील के इलाक़े में गुज़र बसर करेगा –

मसीहा उन लोगों को जो बहुत ज़ियादा मायूस हैं उन्हें दिलासा देगा जो क़ैद में हैं उन्हें आज़ाद करेगा – मसीहा बीमारों को शिफा देगा और जो बहरे, अंधे , गूंगे ,टुंडे ,लूले और लंगड़ों को ठीक करेगा -

---

21:11

यसायाह नबी ने यह भी कहा कि लोग मसीहा से नफ़रत करेंगे और उसे कबूल करने से इनकार करेंगे – दीगर नबियों ने कहा कि मसीहा का दोस्त उस के ख़िलाफ़ ग़द्दारी करेगा – नबी ज़करयाह ने कहा कि ऐसा करने के लिए वह मसीहा के दुशमनों से तीस सिक्के लेगा –कुछ नबियों ने कहा कि लोग मसीहा को क़त्ल कर देंगे और उसके कपड़ों पर क़ुरअ डालेंगे -

---

21:12

नबियों ने यह भी कहा कि मसीहा कैसे मरेगा – यासयाह ने नबुवत की कि लोग मसीहा पर थूकेंगे ,उसका मज़ाक़ उड़ाएंगे और उस पर कोड़े बरसाएंगे –वह उसके पेट में भाला छेदेंगे और वह अज़ीय्यत और जिस्मानी तकलीफ़ में होकर मरेगा जबकि उसने कोई गलती या गुनाह नहीं किया था -

नाबियों के नाविश्तों के मुताबिक़ मसीहा कैसे मरेगा ?

मसीहा के साथ बुरा सुलूक किया जाएगा , वह भाले से छेदा जाएगा वह बड़ी अज़ीयतनाक मौत मरेगा -

---

21:13

नबियों ने यह भी कहा कि मसीहा कोई गुनाह नहीं करेगा – वह कामिल होगा – मगर वह मरेगा –क्यूंकि दुसरे लोगों के गुनाहों की ख़ातिर खुदा उसको सज़ा देगा वह जब मरेगा तब लोग खुदा के साथ सुलह कर पाएंगे –यही सबब है कि खुदा मसीहा को मरने देगा -

यह ख़ुदा की मर्ज़ी क्यूँ थी कि मसीहा को कुचले ?

क्यूंकि मसीहा कामिल होने के नाते लोगों के गुनाहों की सज़ा अपने ऊपर लेगा और ख़ुदा और लोगों के बीच सुलह लेकर आएगा -

---

21:14

नबियों ने यह भी कहा है कि खुदा मसीहा को मुर्दों में से जिलाएगा – यह बताता है कि ये सारे खुदा के मनसूबे थे जिसके तहत खुदा ने एक नया अहद बांधा था जिससे लोगों को बचाए जिन्हों ने खुदा के ख़िलाफ़ गुनाह किया था -

मसीहा की मौत और जी उठने के वसीले से ख़ुदा किस बात को पूरा करेगा ?

ख़ुदा गुनाहगारों को बचाएगा और नए अहद को शुरू करेगा -

21:15

खुदा ने मसीहा की बाबत नबियों को कई एक मुकाशफ़े दिए थे मगर मसीहा उनबियों के ज़माने के दौरान नहीं आया –आखरी नबुवत के दिए जाने तक 400 से ज़ियादा बरस गुज़र गए थे मगर बजा तोर से वह उसका सही वक़्त था कि मसीहा को दुनिया में भेजे -

मसीहा की बाबत आख़री नबुव्वत और दुनिया में उसकी आमद के बीच कितना अरसा गुज़रा था ?

22 . यूहन्ना की पैदाइश

22:01

अगले ज़माने में खुदा ने अपने नबियों से बात की थी ताकि वह उसके लोगों से बातें करे – मगर फिर 400 साल गुज़र गए जब उसने उनसे बात नहीं की – फिर खुदा ने ज़करिया नाम काहिन के पास एक फ़रिश्ते को भेजा – ज़करिया और उसकी बीवी एलिज़बेथ खुदा के उस फ़रिश्ते की इज़्ज़त की – वह बहुत उमर रसीदा थे और एलिज़बेथ ने कभी किसी बचे को जन्म नहीं दिया था -

कितने साल गुज़र गए थे ख़ुदा को अपने लोगों से बात किये हुये ?

22:02

फ़रिश्ते ने ज़करिया से कहा तुम्हारी बीवी के एक बेटा होगा और तुम उसका नाम यूहन्ना रखना – खुदा उसको रूहुलक़ुदुस से मा'मूर करेगा और यूहन्ना एक ज़रीया बनेगा कि लोग मसीहा को हासिल करें – ज़करिया ने जवाब दिया "मैं और मेरी बीवी उमर रसीदा हैं तो फिर मैं कैसे जानूंगा कि तुम सच कह रहे हो "?

फ़रिश्ते ने ज़करियाह से अपने बेटे का नाम क्या रखने के लिए कहा ?

उसे युहन्ना नाम रखना था -

फ़रिश्ते ने क्या कहा कि युहन्ना अपनी ज़िन्दगी में क्या करेगा ?

वह मसीहा ले लिए लोगों का रास्ता तैयार करेगा -

ज़करियाह ने क्यूँ यक़ीन नहीं किया कि एलिशिबा के बेटा होगा ?

क्यूंकि वह दोनों उम्र रसीदा थे -

22:03

फ़रिश्ते ने ज़करिया को जवाब दिया मैं खुदा की तरफ़ से इस ख़ुशख़बरी को देने के लिए भेजा गया हूँ – इसलिए कि तूने एतक़ाद नहीं किया,जब तक बच्चा पैदा नहीं होजाता तू गूंगा बना रहेगा – फ़ौरन ज़करिया बोलने से महरूम होगया –फिर फ़रिश्ते ने ज़करिया को छोड़कर चला गया – इसके बाद ज़करियाह घर वापस लौटा और उस की बीवी हामला हुई -

फ़रिश्ते ने ज़करिया को उसकी बात का यक़ीन न करने के लिए किस तरह से सज़ा दी ?

जब तक युहन्ना पैदा न हो ज़करिया बोल नहीं पाएगा

22:04

जब एलिज़बेथ छे महीने की हमल से थी वही फ़रिश्ता अचानक एलिज़बेथ के रिश्तेदार के हाँ ज़ाहिर हुआ जि सका नाम मरयम था – वह कुंवारी थी और यूसुफ़ नाम के एक आदमी से उसकी मंगनी हो रखी थी - फ़रिश्ते ने कहा “तुम हमिला होगी और तेरे एक बेटा पैदा होगा – तू उसका नाम येसु रखना ,क्यूंकि वह ख़ुदा तआला का बेटा कहलाएगा और हमेशा के लिए हुकूमत करेगा -

एलिशिबा कितने अरसे की हामिला थी जब फ़रिश्ता मरयम पर ज़ाहिर हुआ था ?

छः महीने की -

फ़रिश्ते ने मरयम से क्या कहा कि उसके साथ क्या होने वाला था ?

वह हामिला होगी औए उसके बेटा होगा -

फ़रिशते ने क्या कहा कि येसु क्या होने जा रहा था ?

ख़ुदा तआला का बेटा -

22:05

मरयम ने जवाब दिया ,यह कैसे हो सकता है जबकि मै एक कुंवारी हू - “फ़रिश्ते ने जवाब दिया ,” रूहुलक़ुदुस तुझ पर नाज़िल होगा और खुदा की क़ुदरत तुझ पर साया करेगी – सो वह बच्चा बहुत ही पाक होगा और वह खुदा का बेटा कहलाएगा – जो कुछ फ़रिश्ते ने कहा था मरयम उस पर ईमान ले आई -

येसु की पैदाइश क्यूँ एक मोजिज़ा था ?

क्यूंकि मरयम कुंवारी थी

येसु किस का बेटा है ?

येसु ख़ुदा का बेटा है

22:06

इसके वाक़े होने के फ़ौरन बाद एलिज़बेथ से मुलाक़ात करने गई .जैसे ही मरयम ने एलिज्बेथ को सलाम किया एलिज़बेथ के पेट में उसका बच्चा उछल पड़ा – जो कुछ खुदा ने उन औरतों के लिए किया था उसकी बाबत वह बहुत ख़ुश हुईं तीन महीने तक मरयम एलिज़बेथ के यहाँ रहने के बाद वह अपने घर वापस गई -

फ़रिश्ते के जाने के बाद मरयम किस से मुलाक़ात करने को गई ?

वह एलिशिबा से मुलाक़ात करने को गई -

22:07

इसके बाद एलिज़बेथ ने अपने बेटे को जन्म दिया –ज़करिया और एलिज़बेथ ने अपने बेटे का नाम यूहन्ना रखा जैसा कि फ़रिश्ते ने उन्हें हुक्म दिया था - फिर खुदा ने ज़करिया को दुबारा बोलने लायक़ कर दिया –ज़करिया ने कहा ,” खुदा की हम्द हो क्यूंकि उसने अपने लोगों को याद रखा ! ऐ मरे बेटे ,तू खुदा तआला का नबी होगा –यौम लोगों से कहोगे कि किस तरह अपने गुनाहों से मुआफ़ी हासिल की जाती है ” !

ज़करियाह ने युहन्ना कि बाबत क्या कहा ?

युहन्ना ख़ुदा तआला का नबी होगा और वह लोगों से कहेगा कि वह किस तरह अपने गुनाहों से मुआफ़ी हासिल कर सकते हैं -

23. येसु का जन्म

23:01

मरयम की मंगनी युसुफ़ नाम एक रास्त्बाज़ शख्स के साथ हुई थी -जब उस ने सुना कि मरयम हमल से है तो वोह जानता था कि वोह उस का बच्चा नहीं है -किसी तरह वोह मरयम को बदनाम करना नहीं चाहता था -इसलिए उसने फ़ैसला किया कि उस पर रहम करे और चुपके से उसे छोड़ दे -मगर इस से पहले कि वोह ऐसा कर सकता था एक फ़रिश्ता उस के ख़ाब में आया और उससे बातें कीं -

यूसुफ़ किस तरह का शख़्स था ?

वह एक रास्तबाज़ शख़्स था -

जब मरयम हम्ल से थी तो यूसुफ़ ने क्या करने का मंसूबा किया ?

उसने मंसूबा किया कि वह मरयम को चुप चाप से छोड़ देगा -

23:02

फ़रिश्ते ने कहा , " यूसुफ़ तू मरयम को अपनी बीवी बतोर घर ले आने से मत डर,वोह जो बच्चा उस के पेट में है रूहल क़ुदुस से है -वोह एक बेटा जनेगी , तू उस का नाम येसु रखना , (जिसके मायने हैं याह्वे बचाता है) क्यूंकि वोह अपने लोगों को उनके गुनाहों से बचायेगा –"

क्या वजह थी कि यूसुफ़ मरयम से शादी करने को राज़ी हुआ ?

एक फ़रिश्ते ने ख़्वाब में आकर उस से कहा कि मरयम को अपनी बीवी बनाकर घर ले आने से मत डर -

"येसु" के नाम के क्या मायने हैं ?

इस के मायने हैं "यह वह बचाता है"-

23:03

सो यूसुफ़ ने मरयम से शादी की और अपनी बीवी को अपने घर ले आया ,और जब तक अपने बच्चे को जन्म नहीं दिया तब तक वोह मरयम के साथ नहीं सोया -

---

23:04

जब मरयम के वज़ा -इ-हमल का वक़्त नज़दीक था तो वोह और यूसुफ़ ने बेथलेहम शहर के लिए एक लम्बे सफ़र को अंजाम दिया - उनको वहाँ इसलिए जाना था क्यूंकि रोमी सरकार इस्राईल के मुल्क में तमाम लोगों कि इस्म नवीसी कराना चाहती थी -सरकार चाहती थी कि हर एक ख़ानदान वहाँ जाए जहां उनके बाप -दादा रहते थे -दा ऊद बादशाह बेथलेहम में पैदा हुआ था ,और वोह मरयम और यूसुफ़ दोनों का अजदाद था -

मरयम और यूसुफ़ ने बैतलहम का एक लम्बा सफ़र क्यूँ तै किया ?

क्यूंकि रोमी सरकार कि तरफ़ से यह हुक्म जारी हुआ कि हर एक को उनके बाप दादा जहां रहते थे उस के मुताबिक उन्हें इस्म नवीसी कराने वहाँ जाना था -

---

23:05

मरयम और यूसुफ़ बैथलेहम को गए ,मगर सराय में उनके टिकने के लिए कोई जगह नहीं थी सिरफ़ कुछ जानवरों के लिए जो वहां बंधे हुए थे -वहीँ पर मरयम ने अपने बच्चे को जन्म दिया और उस बच्चे को चरनी में रखा -क्यूंकि उस बच्चे के लिए बिस्तर भी नसीब नहीं था -उनहोंने उसका नाम येसु रखा -

येसु कैसी जगह में पैदा हुआ था ?

वह एक ऐसी जगह में पैदा हुआ जहां जानवर बंधे हुए थे

23:06

उस रात कुछ चरवाहे पास वाले मैदान में अपने गल्ले कि रखवाली कर रहे थे -अचानक एक चमकीला फ़रिश्ता उनपर ज़ाहिर हुआ - और वोह उसे देखकर डर गए , तब फ़रिश्ते ने उनसे कहा , " मत डरो ,क्यूंकि मैं तुमको एक ख़ुशी की ख़बर देता हूँ कि तुम्हारे लिए बेथलेहम में मसीहा (मालिक)का जन्म हुआ है –"

चरवाहों के लिए फ़रिश्ते का क्या पैग़ाम था ?

उस ने कहा "मैं तुम्हें बशारत देता हूँ कि मसीहा जो मालिक है वह बैतलहम में पैदा हुआ है –"

23:07

जाओ ,उस बच्चे कि तलाश करो ,तुम को कपड़े में लिपटा और एक चरनी पड़ा हुआ पाओगे -तब अचानक आसमान फरिशतों से भर गया ,वोह खुदा कि हमद करते हुए कहते थे कि " आलम -इ – बाला पर खुदा कि तम्जीद हो-औरज़मीन पर उन आदमियों में जिन से वोह राज़ी है सुलह "

23:08

फिर फ़रिश्ते चले गए ,चरवाहे भी अपने भेरों को छोड़ कर बच्चे की तलाश में निकल पड़े -बहुत जल्द वोह उस मक़ाम पर पहुंचे जहां येसु था और वोह उसको कपड़े में लिपटा चरनी में पड़ा हुआ पाया जिस तरह फ़रिश्ते ने उन से कहा था -वोह उसे देखकर बहुत खुश हुए -फिर वोह मैदानों में लौट गए जहां उनकी भेड़ें थीं -उन्हों ने उन सब बातों के लिए खुदा का शुक्रिया अदा किया और उसकी तारीफ़ की जो उन्होंने देखा और सुना था -

वह कैसे मालूम करेंगे कि वह जिस बच्चे को देखने जा रहे थे वह वही बच्चा है ?

फ़रिश्ते ने कहा था कि तुम उस बच्चे को कपड़े में लिपटा चरनी में पड़ा पाओगे -

बच्चे को देखने के बाद चरवाहों ने क्या किया ?

उन्होंने जो कुछ सुना और देखा उस के लिए ख़ुदा की हम्द करते हुए अपने मैदानों को लौटे -

---

23:09

पूरब में कुछ लोग थे जो सितारों का इल्म रखते थे ,वोह मजूसी थे और बड़े अक़लमंद थे -उन्होंने आसमान में एक ग़ैर मामूल सितारा देखा -उनहोंने कहा " इस का मतलब यह है कि एक नए बादशाह का जन्म हुआ है सो उन्हों ने उस बच्चे को देखने के लिए अपने मुल्क से दूर सफ़र करने का फ़ैसला किया -एक लम्बा सफ़र अंजाम देने के बाद वोह बेथलहम आये और उस घर को पाया जहां येसु और उसके मांबाप रहते थे -

बाद में मशरिक़ से मजूसियों ने कैसे मालूम किया कि यहूदियों का एक नया बादशाह पैदा हुआ है ?

उन्होंने आसमान में एक ग़ैर मामूली तारा देखा था -

23:10

जब इन लोगों ने येसु को उसकी मान के साथ देखा तो उनहोंने उसके आगे सर झुका कर सिजदा किया -उन्हों ने येसु को कीमती तोहफ़े दिए फिर वोह अपने घर लौट गए जहाँ से वोह आए थे -

मजूसियों ने जब येसु को देखा तो उन्होंने क्या किया ?

उन्होंने ज़मीन पर गिर कर उसे सजदा किया और येसु को क़ीमती तोहफ़े दिए -

24 .युहन्ना येसु को बपतिस्मा देता है -

24:01

युहन्ना जो ज़करयाह और एलिज़बेथ का बेटा था , बड़ा हुआ और एक नबी बन गया -वह बयाबान में रहता था , और जंगली शहद और टिड्डियाँ उसकी खुराक थी और ऊँट के बालों की पोशाक पहनता था -

जब युहन्ना बड़ा हुआ तो वह कहां रहता था ?

वह बयाबान में रहता था -

24:02

बहुत से लोग युहन्ना की बातें सुनने के लिए बयाबान से निकलकर आए और उसने उनको यह कहकर मनादी की कि " तौबा करो क्यूंकि खुदा की बादशाही नज़दीक है -

युहन्ना ने लोगों को क्या पैग़ाम दिया

उसने कहा "तौबा करो क्यूंकि ख़ुदा की बादशाही नज़दीक आ गई है -

24:03

जब लोगों ने युहन्ना के पैग़ाम को सुना तो बहुतों ने अपने गुनाहों से तौबा की और युहन्ना ने उन्हें बपतिस्मा दिया - कई एक मज़हबी रहनुमा भी युहन्ना को देखने के लिए आए मगर उन्हों ने अपने गुनाहों से न तो तौबा करी और न उनका इक़रार किया -

जो लोग युहन्ना की मनादी सुनकर तौबा करते थे उनको युहन्ना क्या करता था ?

वह उन्हें बपतिस्मा देता था -

24:04

युहन्ना ने उन मज़हबी रहनुमाओं से कहा “ऐ सांप के बच्चो तौबा करो और तौबा के मुआफ़िक़ फल लाओ -ख़ुदा हर उस दरख़्त को काट डालेगा जो तौबा के मुआफ़िक़ फल नहीं लाता और वोह उन्हें आग में झोंक देगा “- नबियों ने जो जो बातें युहन्ना कि मारीफ़त कहे थे उन सब को पूरा किया ,” देखो बहुत जल्द मैं अपना पैग़म्बर तुम्हारे आगे भेजूंगा जो तुम्हारी राह तैयार करेगा -

येसु ने किन् लोगों की जमाअत को ज़हरीले सांप से मुवाज़िना किया ?

उसने मज़हबी रहनुमाओं की तरफ़ इशारा किया जिन्हों ने तौबा करने से इनकार किया -

---

24:05

कुछ मज़हबी रहनुमाओं ने युहन्ना से पूछा कि क्या तू मसीह है ? युहन्ना ने जवाब दिया कि वह मसीह नहीं है मगर उस के बाद जो आने वाला है वह मसीह है - वह मुझसे बड़ा है कि मैं उसकी जूती का तस्मा खोलने के भी लायक़ नहीं हूँ “-

युहन्ना का क्या जवाब था जब यहूदियों ने उस से पूछा कि अगर वह मसीहा था ?

उस ने कहा कि वह मसीहा नहीं था -

24:06

दुसरे दिन येसु युहन्ना से बपतिस्मा लेने को आया -जब युहन्ना ने उसको देखा तो उसने कहा ,” देखो ! यह खुदा का बर्रा है जो दुनया के गुनाह उठा ले जाता है –“

युहन्ना ने जब येसु को बपतिस्मा लेने के लिये अपने पास आते देखा तो उस ने उसे क्या कहकर पुकारा ?

उसने कहा , “ख़ुदा का बर्रा जो दुनिया के गुनाह उठा ले जाता है “-

---

24:07

युहन्ना ने येसु से कहा ,”मैं इस लायक़ नहीं कि तू मुझे बपतिस्मा दे बल्कि मुझे तुझसे बपतिस्मा लेनी चाहिए “-मगर येसु ने कहा “मुनासिब है कि तू मुझे बपतिस्मा दे” इस पर युहन्ना ने येसु को बपतिस्मा दिया हालांकि येसु ने कभी कोई गुनाह नहीं किया था -

इस से पहले कि युहन्ना येसु को बपतिस्मा दे येसु को क्यूँ तौबा करने की ज़रुरत नहीं थी ?

क्यूंकि येसु ने कभी कोई गुनाह नहीं किया था -

येसु ने युहन्ना से क्यूँ कहा कि वह उसे बपतिस्मा दे ?

युहन्ना ने येसु को इस लिए बपतिस्मा दिया क्यूंकि ऐसा करना उस के लिए मुनासिब था -

---

24:08

जब येसु बपतिस्मा लेने के बाद पानी से बाहर आया तो खुदा का रूह एक कबूतर कि शक्ल में ज़ाहिर हुआ – वह नीचे आकर उसपर ठहर गया - उसी वक़्त खुदा कि आवाज़ आसमान से सुनाई दी कि “तू मेरा प्यारा बीटा है ,मैं तुझ से प्यार करता हूँ , और मैं तुझ से बहुत खुश हूँ –“

जब येसु बपतिस्मा ले चुका तो कौन उस पर ठहरने के लिए आया ?

ख़ुदा का रूह कबूतर की शक्ल में ज़ाहिर हुआ -

येसु जब बपतिस्मा ले चुका तो ख़ुदा ने क्या कहा ?

“तू मेरा प्यारा बेटा है जिस से मैं ख़ुश हूँ”-

24:09

खुदा ने युहन्ना से कह रखा था कि “जिस शख्स को तुम बपतिस्मा दोगे और रूहुल क़ुदुस उसपर उतर आए वही खुदा का बेटा है “- खुदा एक ही है - मगर युहन्ना ने जब येसु को बपतिस्मा दिया तो उस ने खुदा बाप को बोलते हुए सुना , उसने खुदा बेटे को देखा जो येसु है , और उसने रुहुल क़ुदुस को कबूतर कि शक्ल में देखा -

ख़ुदा ने किस के लिए कहा कि रूहुल क़ुदुस उतरेगा और उसपर ठहर जाएगा ?

वह ख़ुदा के बेटे पर ठहरेगा -

25 . शैतान येसु की आज़माइश करता है -

25:01

येसु के बपतिस्मा लेने के फ़ौरन बाद रूहुल क़ुदुस उसको जंगल में ले गया - वहाँ येसु चालीस दिन चालीस रात रहा - उस दौरान उसने फ़ाक़े किये और शैतान येसु के पास आया और गुनाह के लिए आज़माया -

बपतिस्मे के बाद येसु कहां गया ?

वह बयाबान में गया

येसु को बयाबान में कौन ले गया

रूहुल क़ुदुस उसको लेकर गया -

बयाबान में येसु ने क्या किया ?

उसने चालीस दिन चालीस रात रोज़ा रखा -

25:02

सब से पहले शैतान ने येसु से कहा ,"अगर तू खुदा का बेटा है तो कह कि यह पत्थर रोटियाँ बन जाए –"

शैतान ने पत्थरों के साथ येसु को क्या करने की आज़माइश की ?

उसने येसु से कहा कि उन्हें रोटियाँ बना दे ताकि वह खा सके -

25:03

मगर यीशु ने शैतान से कहा ,"खुदा के कलाम में लिखा है कि लोगों को ज़िन्दगी जीने के लिए सिर्फ़ रोटी ही की ज़रुरत नहीं होती ,मगर हर एक बात जो ख़ुदा उन से कहता है उसकी ज़रुरत होती है –"

येसु ने क्या कहा कि हमको जितना ज़ियादा रोटी की ज़रूरत है उतना ही ज़ियादा और किसकी ज़रूरत है ?

हम को हर कलाम की जो ख़ुदा के मुंह से निकलता है

25:04

फिर शैतान यीशु को मंदिर के कंगूरे पर ले गया और उस से कहा ,"अगर तू खुदा का बेटा है तो ज़मीन पर छलांग लगा दे ,क्यूंकि लिखा है कि खुदा अपने फरिश्तों को हुक्म देगा कि तुझको हाथों हाथ उठालें और तेरे पांव को पत्थर से ठेस न लगने पाएं -"

इस के बाद शैतान ने येसु से क्या कराने की आज़माइश की ?

उसने येसु से कहा मंदिर के कंगूरे से अपने आपसे छलांग लगा दे -

शैतान ने क्या कहा कि कौन येसु की हिफ़ाज़त करेगा ?

ख़ुदा अपने फरिश्तों को हुक्म देगा कि येसु कि हिफ़ाज़त करें -

25:05

मगर येसु ने वह नहीं किया जो शैतान उस से कराना चाहता था - बल्कि उस ने उस से कहा ,"खुदा हर एक से कहता है कि तू अपने खुदावंद खुदा की आज़माइश न कर"

येसु ने शैतान के जवाब में क्या कहा ?

ख़ुदा का कलाम कहता है कि "तू अपने खुदावंद ख़ुदा की आज़माइश न कर"-

---

25:06

फिर शैतान ने दुनया की तमाम सलतनतें और उनकी शान ओ शौकत दिखाई कि वह कितने ज़ोरावर और दौ लत्मंद थे - उस ने यीशु से कहा "अगर तुम झुक कर मुझे सिजदा करोगे तो यह सारी चीजें मैं तुम्हें दे दूंगा –"

आख़री आज़माइश में शैतान येसु को क्या देना चाहता था ?

शैतान येसु को दुनिया की तमाम हुकूमतें और उन का जाह ओ जलाल देना चाहता था -

शैतान ने येसु से क्या कहा कि उन हुकूमतों को हासिल करने के लिए वह क्या करे ?

येसु को शैतान के आगे झुक कर सिजदा करना था -

25:07

यीशु ने उसको जवाब दिया ,"ऐ शैतान मुझ से दूर हो, क्यूंकि खुदा के कलाम में वह अपने लोगों को हुक्म देता है कि सिरफ़ अपने खुदावंद खुदा को सिजदा कर और उसको खुदा बतोर इज़्ज़त कर "-

क्या येसु शैतान के आगे सिजदा करने को राज़ी हुआ ?

नहीं - वह सिर्फ़ ख़ुदा के आगे सिजदा करेगा और सिर्फ़ उसी की ख़िदमत करेगा -

---

25:08

यीशु शैतान के किसी भी आज़माइश में नहीं पड़ा ,सो शैतान उसे छोड़कर चला गया - फिर फ़रिश्ते आकर उसकी ख़िदमत करने लगे -

क्या शैतान येसु को गुनाह करने आमादा कर सका ?

नहीं -

जब शैतान ने येसु को छोड़ दिया तब क्या हुआ ?

फ़रिश्ते आकर येसु की ख़िदमत करने लगे -

26. यीशु अपनी ख़िदमत शुरू करता है

26:01

शैतान कि तमाम आज़्माइशों को इनकार करने के बाद वह गलील के इलाके में आया – यह वो इलाका था जहां वह रहता था - रूहुल क़ुदुस उसको बहुत ज़ियादा क़ुवत देता रहा , और यीशु जगह जगह जाकर लोगों को तालीम देता रहा - हर कोई उसके बारे में अच्छा ही कहा -

शैतान की आज़माइशों पर ग़ालिब आने के बाद येसु कहां गया ?

येसु गलील के इलाक़े में गया जहां वह रहता था -

26:02

यीशु नासरत शहर में आया यह वह गाँव था जब वह बचपन में यहाँ रहा करता था - साबत के दिन वह इबादत खाने में गया - इबादतखाने के सरदार ने यीशु के हाथ में यसायाह नबी का मक्तूब थमाया - वह चाहते थे कि वह उसे पढ़े - सो यीशु ने उसे खोला और लोगों के लिए एक हिस्सा पढ़ कर सुनाया -

उस शहर का क्या नाम था जहां येसु बचपन से रहता था ?

नासरत

सबत के दिन येसु कहाँ गया ?

वह एक इबादतख़ाने में गया -

इबादतख़ाने में लोगों ने येसु के हाथ में यसायाह का नुस्खा क्यूँ पकड़ाया ?

वह चाहते थे कि येसु उस में से पढ़े -

26:03

यीशु ने इस तरह पढ़ा कि खुदा का रूह मुझे दिया गया है कि मैं गरीबों को खुशखबरी सुनाऊं , खुदा ने मुझे भेजा है कि मैं कैदियों को रिहाई बख्शूं , अंधों को बीनाई अता करूँ और कुचले हुओं को आज़ाद करूँ - और ख़ुदावंद के साल -ए -मकबूल कि मनादी करूं - यह वोह वक़्त है कि जब खुदा हम पर फ़ज़ल करेगा और हमारी मदद करेगा -

26:04

फिर यीशु बैठ गया और सब कि आँखें संजीदा और नज़ दीकी तौर से उस की तरफ़ लगी हुई थीं - वह नविश्ते की इस इबारत से वाकिफ़ थे कि जो पढ़ा गया था वह मसीहा की बाबत था - यीशु ने कहा "जो नविश्ता मैं ने तुम्हारे लिए पढ़ा वह अभी वाक़े हो रही हैं –" इस पर सब लोग ताज्जुब करके कहने लगे ,"क्या यह युसुफ़ का बेटा नहीं ?

नविश्ता में से जो इबारत येसु ने पढ़ी वह कौन सी शख़्सियत की तरफ़ इशारा करता था ?

मसीहा की तरफ़ -

उस नविश्ते की बाबत जो येसू ने अभी पढ़ा था येसु ने क्या कहा ?

उस ने कहा कि जो यहाँ लिखा है वह आज पूरा हुआ -

उसके वतन के लोगों ने उसके मनादी के कलाम का किस तरह रद्देअमल पेश किया ?

वह बहुत ताज्जुब करके पूछने लगे , क्या यह यूसुफ़ का बेटा नहीं है ?

26:05

फिर यीशु ने कहा ," यह सच है कि लोग कभी भी एक नबी को क़बूल नहीं करते जो उनके अपने ही वतन में पला बढ़ा हो - नबी एलियाह के दिनों में इस्राईल में कई एक बेवाएं थीं - मगर जब साढ़े तीन साल तक बारिश नहीं हुई तो खुदा ने सारपत में ग़ैर क़ाउम की एक बेवा को छोड़ किसी और के पास एलियाह को मदद के लिए नहीं भेजा –"

दूसरी क़ौमों में ख़ुदा के नबियों ने जो लोगों की मदद की थीं उन में से येसु ने किस की मिसाल पेश की ?

एलियाह के दिनों में ख़ुदा ने क़हत के दौरान एक बेवा की मदद की और एलिशा के दिनों में उस ने नामान की मदद की जो बनी इस्राईल के दुश्मनों की फ़ौज का सिपहसालार था -

---

26:06

यीशु ने कहना जारी रखा ,और नबी एलिशा के दिनों में इस्राईल में कई लोग खाल कि बीमारी में मुब्तला थे -मगर एलिशा ने उन में से नामान कोढ़ी को छोड़ किसी और को शिफ़ा नहीं दी जो इस्राईल के दुश्मनों का सिपह सालार था - मगर जो लोग उसकी सुन रहे थे वे यहूदी थे सो जब उन्हों ने यह बातें सुनीं तो वह उसपर भड़क उठे -

दूसरी क़ौमों में ख़ुदा के नबियों ने जो लोगों की मदद की थीं उन में से येसु ने किस की मिसाल पेश की ?

एलियाह के दिनों में ख़ुदा ने क़हत के दौरान एक बेवा की मदद की और एलिशा के दिनों में उस ने नामान की मदद की जो बनी इस्राईल के दुश्मनों की फ़ौज का सिपहसालार था -

जब येसु ने इन कहानियों को बताया तो लोगों ने इसका कैसे रद्दे अमल पेश किया ?

वह भड़क गए थे और येसु को हलाक करना चाहते थे -

26:07

नासरत के लोगों ने यीशु को पकड़ लिया और इबादतखाने के बाहर तक खींच कर ले गए और शहर से बाहर निकालकर उस पहाड़ की चोटी पर ले गये जिस पर उनका शहर आबाद था ताकि उसे सर के बल गिरा दे - मगर यीशु उन के बीच में से निकलकर चला गया और नासरत शहर को छोड़ दिया -

जब येसु ने इन कहानियों को बताया तो लोगों ने इसका कैसे रद्दे अमल पेश किया ?

वह भड़क गए थे और येसु को हलाक करना चाहते थे -

येसु भीड़ से किस तरह बच गया ?

येसु भीड़ में से निकल गया और अपने वतन को छोड़ दिया -

26:08

फिर यीशु गलील के तमाम इलाकों में गया और एक बड़ी भीड़ उस के पीछे हो ली - वह सब लोग जिनके हाँ तरह तरह कि बीमारियों के मरीज़ थे उन्हें उसके पास ले आए , जिन में अंधे , लूले , लंगड़े , बहरे और गूंगे शामिल थे और यीशु ने उनमें से हर एक पर हाथ रखकर उन्हें अच्छा किया -

गलील में भीड़ के लोगों ने येसु के कामों का किस तरह रद्दे अमल पेश किया ?

कई एक वह लोगों को जो बीमार थे , माज़ूर और लाचार थे ले आए ताकि वह उन्हें शिफ़ा दे सके -

---

26:09

कुछ लोग जिन में बदरूहें थीं उन्हें भी यीशु के पास लाया गया - यीशु उन्हें उन में से निकल जाने का हुक्म देता था और वह चिल्लाते हुए उन में से निकल जाती थीं - वह अक्सर चिल्लाती थीं कि तू खुदा का बेटा है -लोगों की भीड़ ताज्जुब करती थीं और वह खुदा की तारीफ़ करते थे -

येसु जब बदरूहों को लोगों में से बाहर निकलने को हुक्म देता था तो बदरूहें येसु को क्या कहकर पह्चानती थीं ?

वह कहती थीं कि येसु ख़ुदा का बेटा है -

26:10

फिर यीशु ने बारह लोगों को चुना जिन्हें उस ने रसूल कहा - रसूलों ने यीशु के साथ कई एक इलाकों का सफ़र किया और मनादी करते हुए कई एक बातें सीखीं -

येसु ने कितने लोगों को अपना रसूल होने के लिए चुना ?

उसने बारह रसूलों को चुना -

27 . अच्छे सामरी की कहानी

27:01

एक दिन यहूदियों में से एक शरियत का आलिम यीशु के पास आया - वह लोगों को जताना चाहता था कि यीशु गलत तरीके से तालीम देता है , सो उसने यीशु से पूछा कि “मैं क्या करूं कि हमेशा की ज़िन्दगी पाऊं ? यीशु ने जवाब दिया , खुदा कि शरियत में क्या लिखा है ?”

यहूदी शरा’ के आलिम ने येसू से क्या सवाल पूछा ?

“उस्ताद हमेशा की ज़िन्दगी पाने के किये मैं क्या करूं” ?

उसके जवाब में येसू ने आलिम से क्या सवाल पूछा ?

उस ने पूछा “ख़ुदा की शरियत में क्या लिखा है ?”

27:02

उस शख्स ने जवाब दिया , यही कि तू अपने खुदावंद खुदा से अपने सारे दिल ,सारी जान , सारी ताक़त और सारी अक्ल से महब्बत रख ,और अपने पड़ौसी से अपनी मानिंद महब्बत रख “ यीशु ने उस से कहा , तुमने ठीक कहा , अगर तुम यह करोगे तो हमेशा कि ज़िन्दगी तुम को मिलेगी “-

ख़ुदा कि शरियत किस से मोहब्बत रखने को कहती है ?

खुदावंद अपने ख़ुदा से और अपने पड़ौसी से -

27:03

मगर शरीयत का आलिम लोगों को यह जताना चाहता थ कि उसकी ज़िन्दगी जीने का तरीका सही था - सो उसने यीशु से फिर पूछा कि मेरा पड़ौसी कौन है ?

यहूदी शरियत के आलिम ने यह सवाल क्यूँ पूछा कि उसका पड़ौसी कौन था ?

वह साबित करना चाहता था कि वह एक रास्तबाज़ शख़्त था -

27:04

यीशु ने शरीयत के आलिम को एक कहानी सुनाते हुए जवाब दिया कि , एक यहूदी येरूशलेम से यरीहो की तरफ़ सफ़र कर रहा था -

---

27:05

मगर कुछ लुटेरों ने उसे देख लियौर उस पर हमला कर दिया -उस के पास जो कुछ था लूट लिया और अध्मुआ कर के छोड़ कर चले गए-

येसू की कहानी में उस यहूदी शख़्त को क्या हो गया था जो सफ़र कर रहा था ?

उस पर डाकुओं का हमला हुआ था जिन्होंने उस का सब कुछ छीन लिया था जो उसका था ,और उसको मारा पीटा भी था जब तक कि वह अध्मुआ न हो गया था -

---

27:06

इसके फ़ौरन बाद एक यहूदी काहिन् उसी रास्ते से होकर गुज़रा - उस काहिन् ने इस शख्स को सड़क पर पड़ा देखा और कतराकर चला गया - उसने पूरी तरह से उस शख्स को नज़र अंदाज़ कर दिया –

वह पहला शख़्त कौन था जिसने उस ज़ख़्मी आदमी को देखा था ?

एक यहूदी काहिन -

काहिन ने क्या किया जब उसने ज़ख़्मी शख़्त को देखा ?

वह उससे कतराकर ,नज़र अंदाज़ करते हुए सड़क कि दूसरी तरफ़ चल दिया -

---

27:07

अभी थोड़ी ही देर हुई कि एक लावी उसी रास्ते से गुज़रा –(लावी यहूदियों का एक फ़िरक़ा था जो मंदिर में काहिनं कि मदद करते थे) - सो लावी ने भी उसे देखकर दुसरे रास्ते पर होलिया - इसने भी उस शख्स को नज़र अंदाज़ कर दिया-

वह दूसरा शख़्त कौन था जो उस ज़ख़्मी आदमी को देखकर कतराकर चला गया था ?

एक लावी था -

लावी ने क्या किया जब उसने उस ज़ख़्मी आदमी को देखा ?

वह भी नज़र अंदाज़ करके कतराकर सड़क की दूसरी तरफ़ चल दिया -

27:08

अगला शख्स जो उस रास्ते से गुज़र रहा था वह एक सामरी था (सामरी लोग यहूदियों से नफ़रत करते थे) स सामरी ने उस शख्स को सड़क पर पड़ा देखा , उस ने देखा कि वह यहूदी था - इस के बावजूद भी उस के दिल में उस के लिए बड़ी तरस थी - सो वह उसके पास गया और उसके ज़ख्मों पर मरहम पट्टी की –“

वह तीसरा शख़्त कौन था जिस ने उस ज़ख़्मी आदमी को देखा था ?

एक सामरी

यहूदियों और सामरियों का रिश्ता क्या था ?

वह एक दुसरे से नफ़रत करते थे -

27:09

फिर उस सामरी ने अपने गधे पर बैठाकर सड़क के एक होटल में ले गया , वहां उस ने उसकी अच्छी तरह से देखभाल की -

सामरी ने ज़ख़्मी आदमी की किस तरह से मदद की?

उसने ज़ख़्मों पर मरहम पट्टी की और सड़क की एक सराय में ले गया और उसकी देख रेख करी -

---

27:10

दुसरे दिन उस सामरी को अपना सफ़र जारी रखना था -उसने कुछ पैसे होटल के मालिक को देकर कहा ,इस शख्स की देखभाल करना , इस से ज़ियादा अगर पैसे लगे तो मैं लौट कर अदा करदूंगा-

सामरी ने ज़ख़्मी आदमी की किस तरह से मदद की?

उसने ज़ख़्मों पर मरहम पट्टी की और सड़क की एक सराय में ले गया और उसकी देख रेख की -

---

27:11

तब यीशु ने शरीयत के आलिम से पूछा ,"तुम क्या समझते हो ? इन तीनो में से कौन उस शख्स का पड़ौसी था जिसको मारा पीटा और लूट लिया था - उस ने जवाब दिया ,वही जिस ने उसपर तरस खाया -यीशु ने उससे कहा ",जा तू भी यही कर-"

तीन आदमियों में से किस ने उस ज़ख़्मी आदमी की मदद करके एक अच्छा पड़ौसी होने का किरदार निभाया ?

वह सामरी जिस ने उस पर तरस खाया -

28 . दौलतमंद जवान हाकिम

28:01

एक दिन एक दौलतमंद जवान हाकिम यीशु के पास आया और उस से पूछा कि “ऐ नेक उस्ताद , हमेशा की ज़िन्दगी हासिल करने के लिए मैं क्या करूं ? ”यीशु ने उस से कहा “तू मुझे नेक क्यूँ कहता है ? खुदा के अलावा और कोई भी नेक नहीं है - पर अगर तू हमेशा की ज़िन्दगी पाना चाहता है तो खुदा की शरीयत के अहकाम पर अमल कर –“

येसु से जवान दौलतमंद हाकिम ने क्या सवाल पूछा ?

हमेशा की ज़िन्दगी हासिल करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ?

येसू ने उस जवान शख़्त से क्या कहा हमेशा कि ज़िन्दगी हासिल करने के लिए उसे क्या करना है ?

उसने उस से कहा कि ख़ुदा की शरियत पर अमल कर -

28:02

उसने पूछा कौनसे अहकाम पर मैं अमल करूं ? यीशु ने जवाब में कहा “यही कि किसी का खून न करना ,ज़िना न करना ,चोरी न करना , झूट न बोलना ,अपने मांबाप की इज़्ज़त करना और अपने पडोसी से अपनी मानिंद महब्बत रखना वगैरह -

---

28:03

मगर उस जवान शख्स ने कहा ,”मैं तो बचपन से ही इन अहकाम पर अमल करता आया हूँ -अब मुझे हमेशा की ज़िन्दगी के लिए किस चीज़ कि ज़रुरत है ?”यीशु ने उसको प्यार भरी नज़रों से देखा -

जवान हाकिम ने शरियत की बाबत जो येसु ने फेहरिस्त पेश की क्या कहा ?

उस ने कहा कि वह बचपन से ही उन पर अमल करता आया है -

28:04

यीशु ने जवाब दिया " अगर तू कामिल होना चाहे तो जा ,जो कुछ तेरे पास है उसे ग़रीबों में बाँट दे और युझे आसमान में ख़ज़ाना मिलेगा ,फिर आकर मेरे पीछे होले –"

येसू ने उस जवान शख़्त को इस के अलावा क्या करने को कहा ?

उसने उस से कहा कि जो भी माल ओ दौलत उस के पास है उसे बेचकर ग़रीबों को देदे और फिर येसू के पीछे होले -

येसू ने उस जवान दौलतमंद को कौनसा अज्र देने का वायदा किया अगर वह उसे करता है?

कि उस को आसमान में ख़ज़ाना मिलेगा -

28:05

उस जवान ने जब यीशु की बातें सुनी तो वह बहुत मायूस हो गया क्यूंकि वह बहुत ज़ियादा मालदार था और जो उस के पास था उसको किसी भी हालत में छोड़ना नहीं चाहता था -वह यीशु के पास से चला गया -

जवान दौलतमंद क्यूँ मायूस होकर येसू के पास से चला गया ?

क्यूंकि वह उन सारी चीज़ों को जिन का वह मालिक था ,ग़रीबों में बांटना नहीं चाहता था -

---

28:06

तब यीशु ने अपने शागिरदों से कहा कि "दौलतमंद लोगों का खुदा की बादशाही में दाख़िल होना कितना मुश्किल है !जबकि एक ऊँट का सूई के नाके से निकल जाना आसान है –"

एक दौलतमंद शख़्त के लिए ख़ुदा की बादशाही में दाख़िल होना कितना मुश्किल है ?

एक ऊँट के लिए सूंई के नाके में से होकर गुज़र जाना आसान है -

28:07

जब शागिर्दों ने यीशु की बातें सुनीं तो उन्हें बहुत धक्का लगा , उन्हों ने कहा,"अगर ऐसी बात है तो खुदा किसको बचाएगा ?"

28:08

यीशु ने शागिरदों की तरफ़ देखकर कहा ,खुद को बचाना इंसानों कि बस कि बात नहीं मगर ख़ुदा से कोई बात ना मुमकिन नहीं है –"

क्या एक दौलतमंद के लिए बच पाना मुमकिन है ?

जी हां , ख़ुदा के लिए सब कुछ मुमकिन है -

28:09

पतरस ने यीशु से कहा ,"हम शागिरदों ने अपना सब कुछ छोड़ कर तेरे पीछे होलिये हैं ,हम को क्या मिलेगा ?"

येसू के पीछे चलने के लिए शागिर्दों ने क्या छोड़ा ?

उन्होंने सब कुछ छोड़ दिया -

28:10

यीशु ने जवाब दिया ,"तुम में से हरेक जिन्होंने मेरी खातिर अपने घरों, भाइयों, बहनों ,बाप ,मां, बच्चों और जाएदाद को छोड़ा है , उनको सौ गुना मिलेगा और साथ में हमेशा की ज़िन्दगी-"मगर जो अव्वल हैं वह आख़िर हो जाएंगे और जो आख़िर हैं वह अव्वल –"

येसू ने क्या कहा कि उनको क्या अज्र मिलेगा ?

उनको आने वाली दुनिया में सौ गुना ज़ियादा मिलेगा और साथ ही हमेशा की ज़िन्दगी भी मिलेगी -

इन के अलावा और कौन अज्र हासिल कर सकते हैं ?

हर वह शख़्त जिसने येसू की ख़ातिर अपने घरों , भाइयों , बहिनों , बाप , मां , बच्चों और जाएदाद को छोड़ दिया हो -

29 .बे-रहम नौकर की कहानी

29:01

एक दिन पतरस ने यीशु से पूछा मैं अपने भाई को जब वह मेरे ख़िलाफ़ गुनाह करे तो मैं उसे कितनी दफ़ा मुआफ़ करूं ? क्या सात दफ़ा ?“ यीशु ने कहा ,”मैं नहीं कहता कि सात दफ़ा ,बल्कि सात के सत्तर दफ़ा “- यहाँ यीशु का कहना था कि हम को हमेशा मुआफ़ करनी चाहिए – फिर यीशु ने यह कहानी सुनाई :

येसू से पतरस ने क्या सवाल किया ?

“जब मेरा भाई मेरे खिलाफ़ में गुनाह करता है तो मैं अपने भाई को कितनी बार मुआफ़ करूं ?”

पतरस ने क्या सोचा कि उसे अपने भाई को कितनी बार मुआफ़ करना चाहिए ?

सात बार -

येसू ने क्या कहा कि अपने भाई को कितनी बार मुआफ़ करना चाहिए ?

सात के सत्तर बार -

जब येसू ने कहा कि सात के सत्तर बार तो इस के क्या मायने हुए ?

उसका मतलब यह था कि हमेशा ही मुआफ़ करना चाहिए -

29:02

यीशु ने कहा ,खुदा की बादशाही ऐसी है जैसी कि एक बादशाह अपने मुलाज़िमों से अपना हिसाब चुकता करना चाहता था – उसके मुलाज़िमों में से एक पर बहुत भारी क़र्ज़ा था जिस की क़ीमत 200,000 साल की मजदूरी थी

29:03

मगर नौकर इस बड़े कर्ज़े को अदा नहीं कर सकता था -सो बादशाह ने कहा , “इस शख्स को और इसके खानदान को गुलाम बतोर बेच दो ताकि क़र्ज़ की थोड़ी भरपाई हो “

क्या नौकर बादशाह के उस बड़े क़र्ज़े की रक़म को चुकाने के काबिल था ?

नहीं -

बादशाह ने नौकर के उस बड़े क़र्ज़े को चुकाने के लिए क्या सज़ा दी ?

बादशाह ने हुक्म दिया कि उस नौकर और उसके पूरे ख़ानदान को गुलाम बतौर बेचा जाए -

---

29:04

नौकर ने बादशाह के आगे घुटने टेक कर कहा, “मुझ पर तरस खा ,मैं तेरा सारा क़र्ज़ा अदा कर दूंगा ,” तब बादशाह ने उस नौकर पर तरस खाया और उसका सारा क़र्ज़ा मुआफ़ करके उसे जाने दिया -

बादशाह ने क्या किया जब नौकर ने मोहलत की दरख़ास्त की ?

बादशाह ने नौकर पर तरस खाया और उसका क़र्ज़ा मुआफ़ कर दिया -

29:05

मगर जब वह नौकर बाहर आया तो उसने अपने एक साथी नौकर से मिला जिसपर चार महीने की मजदूरी के बराबर क़र्ज़ा आता था - उसने अपने साथी नकार को पकड़ा और कहा “मेरा क़र्ज़ा लौटा दे ,वरना अच्छा नहीं होगा -

नौकर ने अपने दुसरे साथी नौकर के साथ कैसा बर्ताव किया जिस का थोड़ा क़र्ज़ा था ?

उसने उसका गला पकड़ कर कहा कि उसके पैसे वापस करदे जो उस ने क़र्ज़ा लिया था -

---

29:06

उस साथी नौकर ने घुटने के बल गिर कर कहा ,”मुझ पर तरस खा ,मैं तेरा सारा क़र्ज़ा लोटा दूंगा ,पर उसने तरस नहीं खाया बल्कि उस को जेल भेज दिया जब तक कि वह क़र्ज़ा अदा नहीं करता -

उस नौकर ने क्या किया जब उसके साथी नौकर ने अपने घुटनों पर गिर कर मोहलत की दरख़ास्त की ?

उसने अपने साथी नौकर को क़ैद ख़ाने में डलवा दिया -

29:07

दीगर नौकरों ने देखा कि क्या कुछ हुआ था और वह उस से बहुत गुस्सा हुए - और उन्हों ने जाकर बादशाह को सारी बातें बताईं -

जब उसने अपने साथी नौकर को क़ैद में डाल दिया तो दीगर नौकरों ने कैसा रद्दे्अमल पेश किया ?

वह बहुत ज़ियादा परेशान हुए और जाकर बादशाह से उसकी शिकायत की -

---

29:08

बादशाह ने उस नौकर को बुलाया और कहा ,"ऐ शारीर नौकर , मैं ने तेरा सारा क़र्ज़ा इस लिए मुआफ किया था क्यूंकि तूने मुझ से गिड़गिड़ाया था - सो युझे भी वैसा ही करना चाहिए था - बादशाह बहुत गुस्सा हुआ और उसको क़ैद में डाल दिया जब तक कि वह सारा क़र्ज़ा अदा न करे -

बादशाह ने उस नौकर को कैसी सज़ा दी जिसने अपने साथी नौ को मुआफ़ नहीं किया था ?

उस ने उसको क़ैद ख़ाने में डलवा दिया -

29:09

फिर यीशु ने कहा ,"मेरा आसमानी बाप तुम में से हर एक से ऐसा ही सुलूक करेगा अगर तुम अपने भाई को दिल से मुआफ नहीं करोगे –"

क्या ख़ुदा हम को मुआफ़ कर देगा अगर हम दूसरों को दिल से मुआफ़ नहीं करते ?

नहीं -

30 . यीशु पांच हज़ार लोगों को खिलाता है

30:01

यीशु ने अपने रसूलों को फ़रक़ फ़रक़ गाँव में भेजा ताकि मनादी करे और लोगों को खुशखबरी की तालीम दे -जब वह वापस आए तो जो कुछ उन्होंने किया थ्वह यीशु से कहा -फिर यीशु उनके साथ एक वीरान जगह पर ले गया ताकि वह झील के उस पार कुछ देर के लिए आराम करे -सो उनहोंने एक कश्ती ली और झील के उस पार गए -

येसू ने अपने रसूलों को गाँव देहात में किस लिए भेजा ?

उसने उन्हें भेजा कि मनादी करें और उन्हें कलाम सिखाएं

येसू अपने रसूलों को झील के उस पार क्यूँ ले गया ?

उसने उन्हें तन्हा मक़ाम में थोड़ी देर आराम करने की दावत दी -

30:02

मगर वहां पर बहुत से लोग थे जिन्हों ने यीशु और उसके शागिदों को कश्ती से उतरते देखा -यह लोग झील के किनारे किनारे से भागे ताकि उनके सामने पहुँच सकें -सो जब यीशु और उस के शागिरद वहां पहुंचे तो लोगों की एक बड़ी भीड़ पहले से ही उनका इंतज़ार कर रही थी

क्या येसु और उसके रसूल तन्हा रहने और आराम करने पाए थे ?

नहीं - बल्कि बहुत से लोग उन से मिलने को दूसरे रस्ते से दौड़े चले आए -

---

30:03

यह बड़ी भीड़ 5000 आदमियों की थी जिन में औरतें और बच्चे शामिल नहीं थे -यीशु को लोगों पर बड़ा तरस आया -यह लोग यीशु के लिए वैसे थे जैसे बिन चरवाहे की भेड़ें -सो उस ने उन्हें खुदा की बादशाही की तालीम दी और उन के बीच जो बीमार थे उन्हें शिफ़ा बख्शी -

उस बड़ी भीड़ के लिए येसू का क्या बर्ताव था जो उसका इंतज़ार करती थी ?

उसने उनपर तरस का इज़हार किया -

येसू ने लोगों पर तरस का इज़हार कैसे किया ?

उसने उन्हें कलाम सिखाया और बीमारों को शिफ़ा बख़्शी

कितने लोग उसके खिलाए हुए खाने से आसूदा हुए ?

पांच हज़ार मर्द , औरतों और बच्चों की गिनती इस में शामिल नहीं है -

---

30:04

शाम के वक़्त शागिर्दों ने यीशु से कहा ,अभी देर होगई है ,लोगों को विदा कर कि वह पास के शहरों में जाकर अपने लिए खाना मोल लें –“

शागिर्द लोग लोगों को क्यूँ जल्दी वापस भेजना चाहते थे ?

क्यूंकि बहुत शाम हो चुकी थी और उन्हें खाना ख़रीदने के लिए जाना ज़रूरी था -

---

30:05

मगर यीशु ने शागिर्दों से कहा ,तुम ही इन्हें खाने को दो उन्हों ने यीशु से कहा ,”हम ऐसा कैसे कर सकते हैं ?हमारे पास तो सिर्फ पांच रोटी और दो छोटी मछलियाँ हैं –“

शागिर्द लोग लोगों को क्यूँ नहीं खिला सकते थे ?

क्यूंकि उनके पास सिर्फ़ पांच रोटी और दो छोटी मछली थीं -

30:06

यीशु ने अपने शागिर्दों से कहा लोगों से कहो कि वे पचास पचास कि क़तार में घास पर बैठ जाएं -

---

30:07

तब यीशु ने उन पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया और आसमां की तरफ़ देखकर खुदा का शुक्रिया अदा किया -

येसू ने उन पांच रोटी और दो मछलियों के साथ क्या किया ?

उसने खाने पर ख़ुदा से बरकत मांगी , रोटी और मछली को तोड़ा और शागिर्दों से कहा कि वह लोगों में बाँट दे -

---

30:08

फिर यीशु ने रोटियों और मछलियों को तोड़ा -उन टुकड़ों को शागिर्दों को दिया कि लोगों में बाँट दे -शागिर्द लोगों में खाना बांटते गए और वह कभी ख़त्म नहीं हुआ ! तमाम लोगों ने अच्छी तरह से भर पेट खाया और सेर हो गए -

येसू ने उन पांच रोटी और दो मछलियों के साथ क्या किया ?

उसने खाने पर ख़ुदा से बरकत मांगी , रोटी और मछली को तोड़ा और शागिर्दों से कहा कि वह लोगों में बाँट दे -

---

30:09

उस के बाद शागिर्दों ने उन खानों को जमा किया और बचे हुए खाने की बारह टोकरियाँ उठाई गयीं ! यह सारा खाना उन पांच रोटियों और दो मछलियों से आईं थीं -

जब सब लोग खाना खा चुके तो कितना खाना बच गया था ?

भरी हुई बारह टोकरियाँ -

31. यीशु पानी पर चलता है

31:01

पांच हज़ार लोगों को खिलाने के बाद यीशु ने अपने शागिर्दों से कहा कि कश्ती में सवार होजाएं - उस ने उन से कहा कि झील के उस पार चले जाएं - और यीशु पीछे कुछ देर के लिए रुका रहा ताकि भीड़ को विदा कर सके -सो शागिर्द जब चले गए तो यीशु ने भीड़ को उनके घर विदा किया उसके बाद यीशु दुआ करने पहाड़ी की तरफ़ चला गया - वह वहां पर तनहा था और उसने वहां देर रात तक दुआ की -

येसु ने अपने शागिर्दों से क्या करने को कहा जब उसने भीड़ को विदा किया ?

उसने उनसे कहा कि नाव पर सवार होकर झील के उस पार चले जाएं -

येसु जब शागिर्दों को उनके नाँवों पर सवार कर चुका तो क्या किया ?

वह दुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया -

31:02

इस दौरान शागिर्द अपनी कश्ती ढो रहे थे , मगर हवा उन के मुख़ालिफ़ चल रही थी - देर रात होने तक वह सिरफ़ झील के बीच में ही पहुँच पाए थे

रात के वक़्त में नावों पर शागिर्दों को किस बात की परेशानी थी ?

हवा उन के ख़िलाफ़ थी , इसलिए वह झील का आधा रास्ता ही पार कर पाए थे -

---

31:03

उस वक़्त यीशु ने दुआ ख़त्म कर ली थी और वापस अपने शागिर्दों से मिलने जा रहा था - वह कश्ती की तरफ़ जाने के लिए पानी के ऊपर चलने लगा -

येसु उनकी नाव तक कैसे पहुंचा ?

वह पानी के ऊपर चल कर गया -

31:04

फिर शागिदों ने उसे देखा - वह यह समझकर डर गए कि किसी भूत को देख रहे हैं - यीशु ने मालूम कर लिया था कि वह डरे हुए हैं सो उस ने उन्हें पुकारा और कहा “डरो मत मैं हूँ –“

जब शागिर्दों ने पहली बार येसु को देखा तो उन्होंने कैसा रद्देअमल पेश किया ?

वह डर गए थे क्यूंकि उन्होंने सोचा कि वह एक भूत था -

येसु ने उनके डर को सुकून देने के लिए क्या कहा ?

उसने कहा “डरो मत , वह मैं हूँ ” -

31:05

फिर पतरस ने यीशु से कहा ,”अगर तू है तो मुझे हुक्म दे कि मैं पानी पर चलकर तेरे पास आऊँ “-यीशु ने पतरस से कहा ,”चले आओ “

येसु ने पतरस से क्यूँ कहा कि वह पानी पर चलकर उसके पास उसके पास आए ?

क्यूंकि ऐसा करने के लिए पतरस ने उससे अर्ज़ किया था -

31:06

सो पतरस पानी से बहार आकर पानी के ऊपर चलने लगा - मगर थोड़ी दूर चलने के बाद उसने अपनी नज़रें यीशु कि तरफ़ से हटा कर मौजों की तरफ़ लगाया और अपने में शदीद हवा का एहसास किया -

जब उसने अपनी निगाहें येसु से हटालीं तो पतरस ने क्या ग़ौर करना शुरू किया ?

उसने लहरों को देखना शुरू किया और तेज़ हवा का एहसास किया -

31:07

फिर पतरस खौफ़ज़दा होकर पानी में डूबने लगा , वह चिल्लाया ,खुदावंद मुझे बचा ! यीशु उसके पास पहुंचकर उसका हाथ थाम लिया और कहा ऐ कम एतक़ाद ! तू ने मुझ पर भरोसा क्यूँ नहीं किया कि तू महफूज़ रहे ?”

पतरस को क्या हुआ जब वह हवा और लहरों से डर गया था ?

वह पानी में डूबने लगा था -

जब पतरस ने येसु को मदद के लिए पुकारा तो येसु ने क्या किया ?

येसु ने फ़ौरन पतरस को थाम लिया -

पतरस को मलामत करते हुए येसु ने उस से क्या कहा ?

उसने कहा “ऐ कम एत्क़ाद ,तू ने क्यूँ शक किया ?”

31:08

फिर पतरस और यीशु जैसे ही कश्ती पर सवार हुए तो हवा थम गयी – शागिर्द ताज्जुब करने लगे और यीशु को सिजदा किया - उन्होंने कहा कि “तू सच मुच खुदा का बेटा है –“

जब येसु नाव पर सवार हुआ तो क्या हुआ ?

तेज़ आंधी चलना बंद हो गई और समुन्दर बिलकुल पुर सुकून होगया -

इस मोजिज़े का शागिर्दों ने किस तरह से रद्देअमल पेश किया ?

उन्होंने येसु को सिजदा किया और कहा ,”फ़िल्हक़ीक़त तू ख़ुदा का बेटा है “

32 . यीशु एक बदरुह के मारे शख्स को और एक बीमार औरत को शिफ़ा देता है -

32:01

यीशु और उसके शागिर्द कश्ती में बैठ कर उस इलाक़े को गए जहां गरासीनियों के लोग रहते थे - वह वहां पहुंचकर कश्ती से उतरे -

---

32:02

वहाँ एक शख्स रहता था जिस में बदरुहें थीं -

येसु जब गरासीनियों के इलाक़े में पहुंचा तो वहां पर क्या हुआ था ?

बदरूह से समाया हुआ एक शख़्स दौड़ता हुआ येसु के पास चला आया -

32:03

यह शख्स इतना ताक़तवर था कि कोई उस को क़ाबू में नहीं कर सकता था - कुछ लोगों ने यहाँ तक कि उसको ज़ंजीरों से बाँध दिया था मगर वह उन्हें तोड़ देता था -

बदरूह से समाया हुआ शख़्स क्या करता था ?

बदरूह उसकी ज़नजीरों को तोड़ डालता था ,क़ब्रों में रहता था , दिन रात चिल्लाया करता था , कपड़े नहीं पहनता था , पत्थरों से अपने आप को ज़ख़्मी कर लेता था -

---

32:04

वह शख़स उस इलाक़े के क़ब्रों में रहा करता था , दिन रात वह बड़े ज़ोरों से चिल्लाया करता था - वह कपड़े नहीं पहनता था और अक्सर पत्थरों से खुद को ज़ख़्मी कर लेता था -

बदरूह से समाया हुआ शख़्स क्या करता था ?

बदरूह उसकी ज़नजीरों को तोड़ डालता था ,क़ब्रों में रहता था , दिन रात चिल्लाया करता था , कपड़े नहीं पहनता था , पत्थरों से अपने आप को ज़ख़्मी कर लेता था

32:05

यह शख़स दौड़ कर यीशु के पास गया और उस के आगे घुटने टेक दिए - यीशु ने उस बदरूह समाए हुए शख्स से कहा ,"इस शख्स में से निकल आ ! "

32:06

बदरूह ऊँची आवाज़ से चिल्लाया ,"ऐ यीशु ,खुदा तआला के बेटे ,मुझे तुझ से क्या काम ? तू मुझे अज़ाब में न डाल ! " फिर यीशु ने बदरूह से पूछा ,"तुम्हारा क्या नाम है ? उस ने जवाब दिया ,मेरा नाम लश्कर है क्यूंकि हम बहुत हैं (एक लश्कर में कई हज़ार रोमी सिपाही होते हैं) -

उस बदरूह का नाम क्या था ?

उस का नाम लश्कर था

"लश्कर" के मायने क्या थे ?

इस के मायने यह हैं कि उस शख़्स में बहुत सी बदरूहें थीं

32:07

बदरूह समाए हुए शख्स ने यीशु से इल्तिजा की कि "हमको इस इलाक़े से बाहर न भेज "वहाँ क़रीब में पहाड़ी पर सूअरों का ग़ओल चर रहा था - बदरूह ने कहा कि हमको उन सूअरों में भेज दे - यीशु ने उससे कहा ,"ठीक है चले जाओ –"

जब बदरूहों ने उस शख़्स को छोड़ दिया तो उन्होंने उन्हें कहां भेजने की मिन्नत की ?

उन्हों ने 2000 सुअरों के एक ग़ोल में भेजने की मिन्नत की -

32:08

सो बदरूह उस शख्स में से निकलकर सूअरों में चला गया - वह सारे सूअर किनारे से झपट कर झील में कूद पड़े और डूब कर मर गए - उस ग़ओल में तक़रीबन 2000 सूअर थे -

जब बदरूहों ने उस शख़्स को छोड़ दिया तो उन्होंने उन्हें कहां भेजने की मिन्नत की ?

उन्हों ने 2000 सुअरों के एक ग़ोल में भेजने की मिन्नत की -

उन सुअरों का क्या हाल हुआ जब बदरूहें उनमें दाख़िल हुईं ?

वह करारे पर से झपट कर झील में कूद पड़ीं और डूब मरीं -

32:09

सूअर चराने वालों ने इस माजरे को देखा , वह दौड़ कर शहर में गए और सारा माजरा कह सुनाया कि यीशु ने क्या कुछ किया - लोग उस का यकीन करके उस शख्स से मिलने आए जिस पर बदरूह समाया हुआ था मगर अब वह आज़ाद था - वह कपड़े पहने आम आदमियों की तरह ख़ामोशी से बैठे हुए था -

जब बदरूहों ने उस शख़्स को छोड़ दिया था तो उसका बर्ताव कैसा था ?

वह चुप चाप बैठा करता था , कपड़े पहने हुए एक हस्बे मामूल शख़्स कि तरह -

---

32:10

वहां के लोग डरे हुए थे और यीशु से कहने लगे कि उन के इलाक़े से निकल जाए - सो यीशु कश्ती में सवार हुआ ,और उस शख्स ने दरखास्त की कि यीशु के साथ रहे -

लोगों ने उस शिफ़ा पाए हुए शख़्स और मरे हुए सुअरों कि बाबत कैसा रद्दे अमल पेश किया ?

वह बहुत डर गए और येसु से मिन्नत की कि वह वहां से चला जाए -

32:11

मगर यीशु ने उस से कहा ,"मैं चाहता हूँ कि तुम अपने घर जाओ और हर एक से कहो कि खुदा ने तुम्हारे लिए क्या कुछ किया - उनसे कहना कि खुदा ने तुम पर किस तरह रहम किया –"

येसु ने उस शिफ़ा पाए शख़्स से उस के साथ चलने के बजाए क्या कहा ?

येसु ने उस से कहा कि वह अपने घर जाए ,अपने दोस्तों और ख़ानदान के लोगों से वह सारी बातें कहे जो ख़ुदा ने उस के लिए कीं -

---

32:12

यीशु की बात मानकर उस शख्स ने जाकर हर एक को बताया कि यीशु ने उसके लिए क्या कुछ किया - हर एक ने जो उसकी गवाही सुनी ताज्जुब किया -

---

32:13

यीशु अपने शागिर्दों के साथ झील की दूसरी तरफ़ पहुंचा -उसके वहां पहुंचने के बाद एक बड़ी भीड़ उस के चारों तरफ़ जमा हो गई और उसे दबाने लगी - उस भीड़ में एक औरत थी जिसको खून जारी था - वह जरयान के मर्ज़ में मुब्तला थी - उसने इलाज में बहुत से पैसे खर्च किये थे मगर मर्ज़ बढ़ता ही जा रहा था -

---

32:14

उसने सुन रखा था कि यीशु ने बहुत से बीमारों को शिफ़ा दी थी और सोचा कि अगर मैं सिर्फ यीशु के पोशाक ही को छू लूंगी तो ठीक हो जाउंगी ! सो वह यीशु के पीछे आई और उसने उसके पोशाक को छुआ -जैसे ही उसने उसके पोशाक को छुआ खून बहना बंद हो गया -

वह औरत जिसे ख़ून जारी रहने की परेशानी थी येसु के पास क्यूँ आई ?

उसने सोचा कि अगर मैं येसु के कपड़ों को ही छू लूंगी तो मैं शिफ़ा पा जाऊंगी -

जैसे ही औरत ने येसु के कपड़े छुए तो क्या हो गया था ?

उसका खून बहना बंद होगया -

32:15

फ़ौरन ही यीशु ने अपने में महसूस किया कि उस में से क़ुवत निकली , सो उसने मुड़कर पूछा कि किसने मुझे छुआ ? शागिर्दों ने जवाब दिया कि तेरे आसपास इतनी भीड़ हो रही है और तुझे धक्के दे रहे हैं और तू पूछता है कि किसने तुझे छुआ ?

येसु ने कैसे मालूम किया कि किसी ने उसको छुआ था ?

उसने महसूस किया था कि उसमें से क़ुव्वत निकली थी -

32:16

उस औरत ने घुटने टेके और कांपते हुए घबराकर कहा कि उस ने क्या किया , और क्यों किया और कैसे अपनी बिमारी से ठीक हुई - तब यीशु ने उस औरत से कहा ,"तेरे ईमान ने तुझे अच्छा किया ,सलामत चली जा -

जब औरत ने येसु के सामने गिर कर सिजदा किया तो उसने औरत से क्या कहा ?

उसने उससे कहा "तेरे ईमान ने तुझे अच्छा किया , ,सलामत चली जा -

33 . किसान की कहानी

33:01

एक दिन यीशु झील के किनारे था - वह एक बड़ी भीड़ को तालीम दे रहा था – उस कि तालीम सुनने के लिए भीड़ की तादाद इतनी ज़ियादा थी कि यीशु को बैठने तक की जगह नहीं थी - इस लिए वह पानी में एक कश्ती पर चढ़ कर बैठ गया -और वहां से तालीम देने लगा -

---

33:02

यीशु ने यह तालीम दी : “एक किसान बीज बोने निकला - बोते वक़्त कुछ दाने राह के किनारे गिरे , मगर हवा के परिन्दों ने आकर उन्हें चुग लिया “

उस बीज को क्या हुआ जो रास्ते में गिरा था ?

परिंदों ने आकर उन सब को चुग लिया -

33:03

कुछ दाने पथरीली ज़मीन पर गिरे - पथरीली ज़मीन में गिरे हुए दाने गहरी मिटटी न मिलने के सबब सेसे बहुत जल्द उग आए - जब सूरज कि रौशनी उन पर पड़ी तो वह जल गए और सूख गए -

उस बीज का क्या हुआ जो पथरीली ज़मीन पर गिरा ?

वह बहुत जल्द उगा मगर जैसे ही उस पर सूरज की गर्मी पड़ी वह मुरझा गया और सूख गया -

---

33:04

फिर भी कुछ दाने कटीले झाड़ियों में गिरीं मगर झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा दिया - सो कटीले झाड़ियों में गिरे दानों से कोई फल पैदा नहीं हुआ -

उस बीज का क्या हुआ जो कटीले झाड़ियों के बीच गिरा ?

वह उगा तो सही मगर झाड़ियों ने बढ़ कर उसे दबा दिया -

33:05

बाक़ी दाने अच्छी ज़मीन पर गिरे - यह बीजें बढ़ कर बहुत सा फल ले आए ,कोई 30 गुना ,कोई 60 गुना, यहां तक कि 100 गुना जितना ज़ियादा हो सके उतना ज़ियादा जो बोया गया था - जो कोई खुदा के पीछे चलना चाहे वह इन बातों को सुने जो मैं कह रहा हूँ -

उस बीज का क्या हुआ जो अच्छी ज़मीन पर गिरा ?

वह उगा और खूब बढ़ने लगा , और जिस तरह से बीज बोया गया था उससे कोई तीस गुना , कोई साठ गुना और कोई सौ गुना फल लाया -

---

33:06

इस कहानी ने शागिर्दों को परेशान कर दिया था सो यीशु ने उन्हें समझाया कि बीज खुदा का कलाम है ,रास्ते में गिरे हुए दाने वह हैं जो कलाम को सुनता है मगर उसे नहीं समझता -फिर शैतान उस कलाम को उस से छीन लेता है कि वह न समझे -

क्या शागिर्द इस बीज की कहानी को समझ पाए थे ?

नहीं – बल्कि वह उलझन में पड़ गए थे -

कहानी में बीज किस की तरफ़ इशारा करता है ?

ख़ुदा के कलाम की तरफ़ -

रास्ता किस की तरफ़ इशारा करता है ?

उस शख़्स की तरफ़ जो कलाम को सुनता तो है मगर समझता नहीं और शैतान आकर उसे लेजाता है -

---

33:07

जो बीज पथरीली ज़मीन पर गिरे ये वह लोग हैं जो कलाम सुनकर ख़ुशी से क़बूल तो कर लेते हैं मगर कलाम के सबब से मुसीबतें आती हैं या दीगर लोगों की तरफ से ज़ुल्म बरपा होता है तो वह खुदा से फिर जाता है और उस पर का भरोसा टूट जाता है -

पथरीली ज़मीन किस की तरफ़ इशारा करती है ?

वह शख़्स जो कलाम को सुनता और ख़ुशी से कबूल तो कर लेता है मगर मुसीबत और सताव के आने पर वह गिर जाता या भटक जाता है -

---

33:08

कटीली झाड़ियाँ उस शख्स की मिसाल है जो ख़ुदा के कलाम को सुनता तो है मगर दुनया की फ़ीकरों में उलझा हुआ रहता है , पैसा कमाना चाहता है और दुनया की बहुत सी चीजें

हासिल करना चाहता है ,कुछ दिनों बाद खुदा की महब्बत उस में क़ायम नहीं रहती -और वह खुदा को खुश नहीं कर पाता - वह गेहूं के जौ की तरह होता है जो कोई फल नहीं लाता -

कटीली झाड़ियों की ज़मीन किस की तरफ़ इशारा करती है ?

वह शख़्स जो कलाम को सुनता है मगर वक़्त के गुज़रते दुनिया की फिक्रें , दौलत का फ़रेब (ज़िन्दगी की ख़ुशियाँ) कलाम को और ख़ुदा कि महब्बत को दबा देते हैं -

---

33:09

मगर अच्छी ज़मीन उस शख्स कि मानिंद है जो खुदा के कलाम को सुनता , उस ईमान लाता और बहुत सा फल लाता है -

अच्छी ज़मीन किस की तरफ़ इशारा करती है ?

वह शख़्स जो कलाम को सुनता है और उस पर ईमान लाता है और वह बहुत सा फल लाता है -

34 . यीशु दूसरी कहानियां सिखाता है

34:01

यीशु ने खुदा की बादशाही की बाबत कुछ और कहानियाँ सुनाईं ,मिसाल के तोर पर उस ने कहा “खुदा की बादशाही एक राई के बीज की तरह है जिसको किसी ने अपने खेत में बोया - आप जानते हैं कि राई का बीज सब बीजों में से छोटा होता है –“

राई के दाने का दूसरे बीजों से किस तरह मुवाज़िना किया जा सकता है ?

यह सब बीजों में छोटा होता है -

हर वह शख़्स जो घमंडी हैं उनको ख़ुदा क्या करेगा ?

वह उन्हें हलीम करेगा -

34:02

“मगर जब वह राई का बीज बढ़ता है तो खेत के सब दरख्तों से बड़ा हो जाता है यहाँ तक कि उस की डालियों पर हवा के परिंदे आकर बसेरा करने लगते हैं –“

जब एक राई का दाना उगता है तो क्या होता है ?

वह बाग के तमाम पौदों से बड़ा हो जाता है -

34:03

यीशु ने एक दूसरी कहानी सुनाई “खुदा की बादशाही ख़मीर की मानिंद है जिसको एक औरत ने तीन पैमाने आटे में लेकर मिला दिया और वह सारे गुंधे हुए आटे को ख़मीरा कर दिया ”-

थोड़ा सा ख़मीर जब आटे में मिलाया जाता है तो क्या होता है ?

वह सारे आटे को ख़मीर कर देता है -

34:04

“खुदा कि बादशाही एक खेत में छिपे हुए ख़ज़ाने की मानिंद भी है – एक आदमी ने उसे पाया और उसे बहुत ज़ियादा चाहने लगा - सो उसने उसे फिर से गाड़ दिया वह उस ख़ज़ाने से इतना खुश था कि अपना सब कुछ बेच कर उस खेत को मोल ले लिया जिस में वह खज़ाना गड़ा हुआ था –“

खेत में जो ख़ज़ाना छिपा हुआ था उसको पाकर उस शख़्स ने क्या किया ?

उसने अपनी सारी चीज़ें बेच दीं और उस खेत को ख़रीद लिया -

34:05

“ख़ुदा की बादशाही एक बड़ी कीमती मोती की भी मानिंद है - जब मोती के सौदागर ने उसे पाया तो अपना सब कुछ बेच डाला ताकि उस मोती को खरीद सके” -

मोतियों के सौदागर को जब एक नायाब मोती मिल गया तो उस ने क्या किया ?

जो कुछ उस के पास था वह सब कुछ बेचकर उस मोती को ख़रीद लिया -

34:06

कुछ लोग थे जो सोचते थे कि खुदा उनको कबूल करेगा क्यूंकि वह अच्छे काम करते थे - यह लोग दूसरों को हक़ीर समझते थे जो उनकी तरह अच्छे काम नहीं करते थे - सो यीशु ने उन्हें एक कहानी सुनाई : “दो शख्स थे जो मंदिर में दुआ करने गए , उनमें से एक महसूल लेने वाला और दूसरा एक मज़हबी रहनुमा था –“

जो दो शख़्स मंदिर में खड़े होकर दुआ कर रहे थे उस कहानी को येसु ने किसको सुनाया था ?

उन लोगों को जो अपने नेक कामों पर भरोसा करते थे और दुसरे लोगों को नीचा समझते थे -

---

34:07

उस मज़हबी रहनुमा ने इस तरह दुआ की ,ऐ खुदा “मैं तेरा शुकर करता हूँ कि मैं किसी दुसरे शख्स की मानिंद नहीं हूँ --- जैसे लुटेरे , बे इंसाफ़ , ज़िनाकार ,या इस महसूल लेने वाले की मानिंद जो वहाँ खड़ा है –“

मज़हबी रहनुमा ने ख़ुदा का शुक्र क्यूँ किया ?

उसने ख़ुदा का शुक्र इस लिए किया क्यूंकि वह दूसरे शख़्स की तरह गुनाहगार नहीं था -

---

34:08

इसके अलावा मैं हफ्ते में दो बार रोज़ा रखता हूँ और मैं अपनी तमाम आमदनी का दसवां हिस्सा देता हूँ –“

मज़हबी रहनुमा ने ऐसा क्यूँ सोचा कि वह एक रास्तबाज़ था ?

क्यूंकि वह हफ़्ते में दो मरतबा रोज़ा रखता था और अपनी आमदनी और माल ओ असबाब का दसवां हिस्सा देता था -

---

34:09

मगर महसूल लेने वाला उस मज़हबी रहनुमा से दूर खड़ा रहा - वह यहाँ तक कि आसमां कि तरफ नज़र उठा कर भी नहीं देखा बल्कि अपनी छाती पीटते हुए दुआ की कि ऐ खुदा मुझ पर रहम कर क्यूंकि मैं एक गुनाहगार हूँ –“

महसूल लेने वाले ने ख़ुदा से किस बात की दरख़ास्त की ?

उसने ख़ुदा से रहम की दरख़ास्त की क्यूंकि उस ने खुद को एक गुनाहगार महसूस किया -

---

34:10

फिर यीशु ने कहा ,”मैं तुम से सच कहता हूँ कि खुदा ने उस महसूल लेने वाले की दुआ सुनी और उस को रास्त्बाज़ क़रार दिया - उस ने मज़हबी रहनुमा की दुआ को ना पसन्द किया - खुदा हर उस शख्स को हक़ीर जानेगा जो घमंडी हैं मगर वह उनकी इज़्ज़त करेगा जो अपने आप को हलीम करते हैं “-

इन दोनों में से किस शख़्स ने ख़ुद को रास्तबाज़ होने का दावा नहीं किया ?

महसूल लेने वाले ने -

जो ख़ुद को हलीम करते हैं उन में से हर एक को ख़ुदा क्या करेगा ?

वह उन्हें सरफ़राज़ करेगा -

35 .रहमदिल बाप की कहानी

35:01

एक दिन बहुत से लोगों को तालीम दे रहा था जो उस कि सुनने के लिए जमा हुए थे - यह लोग महसूल लेने वाले और दुसरे लोग थे जो मूसा की शरियत परअमल करने की कोशिश नहीं किये थे -

---

35:02

कुछ मज़हबी रहनुमाओं ने देखा कि येसु उन लोगों से दोस्तों जैसा बात कर रहा था – सो उनहोंने एक दुसरे से कहना शुरू किया कि वह बुरा कर रहा था – येसु ने उनकी बातें सुनकर यह कहानी उन्हें सुनाई -

मज़हबी रहनुमाओं ने येसु की क्यूँ नुक्ताचीनी की ?

क्यूंकि येसु महसूल लेने वालों और गुनाहगारों को अपना दोस्त बनाता था

35:03

एक शख्स के दो बेटे थे -छोटे बेटे ने अपने बाप से कहा ,"मैं अभी के अभी अपनी मीरास चाहता हूँ !" सो बाप ने अपनी जाएदाद को अपने दोनों बेटों में तक़सीम कर दिया -

छोटे बेटे ने अपने बाप से किस चीज़ की मांग की ?

उसने अभी के अभी अपनी मीरास का हिस्सा माँगा -

35:04

बहुत जल्द छोटे बेटे ने जो कुछ उसका था जमा किया और दूर दराज़ के मुल्क को चला गया और अपना सारा पैसा गुनाह के रास्ते में बर्बाद कर दिया -

छोटे बेटे ने अपनी मीरास के हिस्से का क्या किया ?

उसने सारा माल गुनहगारी में ख़र्च कर दिया -

35:05

उस के बाद उस मुल्क में जहाँ छोटा बीटा था सख्त अकाल पड़ा – और उसके पास खाना खरीद कर खाने के लिए पैसे नहीं थे -सो उसको एक ही नौकरी मिली जिसे वह कर सकता था सूअर चराना -इस के बावजूद भी वह बहुत तकलीफ में था और भूका था -वह चाहता था कि सूअर जो खाते हैं उन्हीं को खाएं -

छोटा बेटा जहां रहने गया था उस मुल्क में क्या हुआ ?

वहां सख़्त काल पड़ा

काल के दौरान जीने के लिए छोटे बेटे ने क्या किया ?

उसने सुअर चराने की नौकरी की -

35:06

आखिरकार छोटे बेटे ने खुद से कहा ,"यह मैं क्या कर रहा हूँ ? मेरे बाप के नाकारों को अफ़रात से खाना नसीब होता है ,और मैं यहाँ पर भूकों मर रहा हूँ – मैं अपने बाप के घर वापस जाऊंगा और उस से कहूँगा तू मुझे अपने नौकरों जैसा रख ले -

छोटे बेटे ने वापस घर लौटने का फ़ैसला क्यूँ किया ?

उस ने इस हक़ीक़त को जाना कि उस के बाप के नौकर उससे कहीं बेहतर ज़िन्दगी जीते और भर पेट खाना खाते हैं -

छोटा बेटा अपने बाप से क्या दरख़ास्त करने का मंसूबा कर रहा था ?

वह अपने बाप से दरख़ास्त करने को सोच रहा था कि उसे अपने नौकरों की तरह रख ले -

---

35:07

और छोटे बेटे ने अपने बाप के घर की तरफ़ रुख़ की – जब वह अभी दूर ही था उस के बाप ने उसे देख लिया और उसपर तरस खाया -और दौड़ कर उसको अपने गले लगाया और बहुत चूमा -

बाप ने अपने छोटे बेटे को उसके घर की तरफ़ आते देखकर क्या किया ?

वह उसकी तरफ़ दौड़ा , गले लगाया और बहुत चूमा -

35:08

बेटे ने बाप से कहा ,"ऐ बाप , मैं ने तेरे खिलाफ़ , और खुदा के ख़िलाफ़ गुनाह किया है ,मैं तेरा बीटा कहलाने के लायक़ नहीं हूँ –"

जब वह दोनों आपस में मिले तो छोटे बेटे ने बाप से क्या कहा ?

ऐ बाप , मैं ने ख़ुदा के ख़िलाफ़ और तेरे ख़िलाफ़ गुनाह किया है -

---

35:09

मगर उस के बाप ने नाकारों में से एक से कहा , जल्दी से जाओ उसे नहलाओ , उसको बहतरीन कपड़े पहनाओ !उसकी ऊँगली में अंगूठी पहनाओ उस के पर में जूते पहनाओ , और एक पला हुआ बछड़ा ज़बह करो , और जश्न मनाओ , क्यूंकि मेरा बेटा मारा हुआ था मगर अब जी गया है ! खो गया था अब वह मिल गया है -

बाप ने अपने छोटे बेटे के पछतावे और गुनाह के इक़रार का कैसा जवाब दिया

उसने अपने छोटे बेटे के वापस घर लौटने की ख़ुशी में उसको नये कपड़े पहनाए , एक अंगूठी पहनाई , नई जूतियां पहनाई और एक शानदार दावत करके जश्न मनाया -

---

35:10

सो लोगों ने जश्न मनाना शुरू किया , अभी थोड़ी देर हुई कि बड़ा बीटा खेत में काम करके वापस घर लौटा -उसने मौसिकी और नाच गाने की आवाज़ सुनी -और ताज्जुब किया कि वहाँ क्या हो रहा था -

---

35:11

जब बड़े बेटे ने देखा कि छोटे के घर वापस लौटने पर जश्न मनाई जा रही है तो वह बहुत गुस्सा हुआ , और वह घर के अन्दर नहिंजना चाहता था -उसका वाप बहार आया और बेटे को मनाने लगा कि उन के जश्न में शामिल हो मगर उस ने मन कर दिया -

बड़े बेटे ने यह जानकर कि उसका भाई वापस आ गया है किस तरह से रद्देअमल पेश किया ?

वह बहुत ग़ुस्से में था और घर के अन्दर जाने से इनकार किया -

35:12

बड़े बेटे ने अपने बाप से “कहा पिछले सारे दिनों में मैं ने वफ़ादारी से तेरी ख़िदमत की है , मैं ने कभी भी तेरा हुक्म नहीं टाला - इस के बावजूद भी तूने मेरे लिए एक बकरी का बच्चा भी नहीं दिया कि मैं अपने दोस्तों के साथ मिलकर ख़ुशी मनाता – मगर तेरा यह बेटा गुनहगारी में पैसा बर्बाद करके आया तो जश्न मनाने के लिए पला हुआ बछड़ा ज़बह किया” !

बड़े बेटे की शिकायत अपने बाप से किस बात की थी ?

उसने अपने बाप से कहा मैं ने बड़ी वफ़ादारी से तेरी ख़िदमत की और तूने एक बकरी का बच्चा भी अपने दोस्तों के साथ ज़ियाफ़त के लिए नहीं दिया - मगर तेरा यह बेटा जिस ने तेरे पैसे फ़ुज़ूल में ख़र्च किये उस के लिए तूने पला हुआ बछड़ा ज़बह कराया ?

35:13

बाप ने जवाब दिया ,”मेरे बेटे तू तो हमेशा मेरे साथ है , और जो कुछ मेरा है वह सब तेरा ही तो है - मगर हमारे लिए जश्न मनाना ज़रूरी था क्यूंकि तेरा यह भाई मर गया था अब जी गया है , खो गया था मगर अब हम ने उसे पालिया है !”

अब बाप कि जाएदाद का कितना हिस्सा बड़े बेटे के हक़ में जाता है ?

बाप के पास जितना कुछ है वह सब -

बाप ने छोटे बेटे की वापसी पर क्यूँ जश्न मनाया ? इसका क्या सबब था ? उसका बेटा मर गया था , मगर अब ज़िन्दा था - वह खो गया था मगर अब वह मिल गया था -

36 . यीशु की तब्दील -ए- हैयत

36:01

एक दिन यीशु अपने तीन शागिर्दों पतरस युहन्ना और याक़ूब को अपने साथ लिया – (युहन्ना वह युहन्ना नहीं जिस ने यीशु को बपतिस्मा दिया था)- वह तीनों दुआ करने के लिए एक ऊँची पहाड़ी पर गए-

पहाड़ पर येसु किनको अपने हमराह लिया ?

अपने तीन शागिर्दों , यानी पतरस , याक़ूब और युहन्ना को -

36:02

जब यीशु दुआ कर रहा था तो उसका चेहरा सूरज की तरह चमकने लगा था और उसके कपड़े इतने उजले कि दुनया का कोई धोबी उतना सफ़ेद नहीं धो सकता था -

जब वह दुआ कर रहा था तो क्या तबदीली वाक़े हुई ?

उसका चेहरा आफ़ताब की तरह चमकीला और उसके कपड़े नूर की तरह अज़हद उजले हो गये -

---

36:03

फिर वहीँ पर मूसा और नबी एलियाह ज़ाहिर हुए - यह लोग यीशु से हज़ारों साल पहले ज़मीन पर रहते थे - वह उसकी मौत की बाबत बातें कर रहे थे क्यूंकि वह बहुत जल्द येरूशलेम में मरने वाला था -

येसु के साथ और दो शख़्स कौन दिखाई दिए थे ?

मूसा और एलियाह नबी

येसु के साथ मूसा और एलियाह का ज़ाहिर होना क्यूँ एक मोजिज़ा था ?

क्यूंकि यह लोग इस वाक़िये के सदियों साल पहले दुनिया में रहा करते थे -

येसु के साथ मूसा और एलियाह किस से मुताल्लिक़ बात कर रहे थे ?

वह येसु से सलीबी मौत से मुताल्लिक़ बात कर रहे थे -

येसु कहां मरने वाला था ?

येरूशलेम में -

36:04

जब मूसा और एलियाह यीशु से बातें कर रहे थे ,तो पतरस ने यीशु से कहा ,यहाँ रहना हमारे लिए अच्छा है - हम यहां पर तीन ख़ेमे बनाते हैं - एक तेरे लिए ,एक मूसा के लिए और एक एलियाह के लिए - मगर पतरस नहीं जानता था कि वह क्या कह रहा था -

पतरस ने येसू , मूसा और एलियाह के लिए क्या कुछ करने की सलाह दी ?

वह तीन ख़ेमे बनाना चाहता था एक येसु के लिए , एक मूसा के लिए और एक एलियाह के लिए -

---

36:05

जब पतरस बात कर रहा था तो एक नूरानी बादल निचे उतरा और उनके चारों तरफ छागया - फिर उनहोंने बदल में से एक आवाज़ सुनी जो कह रहा था ,"यह मेरा प्यारा बेटा है जिसे मैं महब्बत रखता हूँ ,मैं उस से खुश हूँ ,उसकी सुनो –" तीनों शागिर्द दहशत के मारे ज़मीन पर गिर पड़े -

चमकीले बादल से शागिर्दों के लिए क्या आवाज़ सुनाई दी ?

यह मेरा प्यारा बेटा है जिस से मैं बहुत खुश हूँ , इसकी सुनो -

36:06

फिर यीशु ने उन्हें छूकर कहा ,"डरो मत ,उठो –"जब उनहोंने आसपास देखा तो वहां यीशु के अलावा किसी और को न देखा -

---

36:07

यीशु और उसके तीनों शागिर्द पहाड़ पर से नीचे उतरे -फिर यीशु ने उनसे कहा जो कुछ यहाँ पर हुआ किसी से भी ना कहना ,मैं बहुत जल्द मरकर जी उठूँगा - तब तुम लोगों से कहना -

शागिर्दों ने जो कुछ देखा और सुना उसकी बाबत येसु ने उनसे क्या करने को कहा ?

उसने उन से कहा जो कुछ तुम लोगों ने पहाड़ पर वाक़िया होते हुए देखा मेरे मर कर ज़िन्दा होने तक किसी से कुछ न कहना -

37 .यीशु लाज़र को मौत से जिलाता है

37:01

लाज़र नाम का एक शख्स था - उसकी दो बहिनें थीं जिन का नाम मरथा और मरयम था - वह सब के सब यीशु के करीबी दोस्त थे – जब यीशु उन से दूर था तो एक दिन किसी ने यीशु से कहा कि लाज़र बहुत बीमार था जब यीशु ने यह सुना तो उस ने कहा ,यह बिमारी लैज़र को मौत तक ले जाएगी ब्ल्कि यह लोगों को खुदा की ताज़ीम का सबब बनेगी -

येसु ने लाज़र की बीमारी के आख़री अंजाम की बाबत क्या कहा ?

उस ने कहा कि यह ख़ुदा के जलाल के लिए होगा -

लाज़र की बीमारी की बाबत सुनने के बाद येसु ने क्या किया ?

जहाँ पर वह था वहां उसने दो दिन और इंतज़ार किया -

37:02

यीशु अपने दोस्तों से महब्बत रखता था - मगर जहां पर वह था वहां दो दिन और लगाया - दो दिन बाद उसने अपने शागिरदों से कहा “आओ हम यहूदिया को वापस चलें” “मगर उस्ताद “शागिर्दों ने जवाब दिया “कुछी दिनों पहले वहां के लोग तुझे हलाक करना चाहते थे !” यीशु ने कहा ,हमारा दोस्त लाज़र सो गया है और मुझे उसे जगाना है

जब येसु ने यहूदिया जाने का फ़ैसला किया तो शागिर्द लोग क्यूँ फ़िक्रमंद हुए ?

क्यूंकि लोग वहां पर येसु को मार डालना चाहते थे -

37:03

यीशु के शागिर्दों ने जवाब में कहा ,”अगर लाज़र सो रहा है तो वह उठ जाएगा “फिर यीशु ने उनसे साफ़ कह दिया कि लाज़र मर चुका है और मैं खुश हूँ कि मैं वहां पर नहीं था ताकि तुम मुझ पर ईमान लाओ -

जब येसु ने कहा कि लाज़र सो गया है तो शागिर्दों ने क्या सोचा ?

उन्हों ने सोचा कि अगर वह सो गया है तो जाग जाएगा -

येसु ने साफ़ तौर से लाज़र की बाबत शागिर्दों से क्या कहा ?

येसु ने कहा कि लाज़र मर गया था

येसु क्यूँ खुश था कि लाज़र के मरते वक़्त वह वहाँ मौजूद नहीं था -

क्यूंकि ऐसा कुछ होने को था जिससे येसु में शागिर्दों का ईमान पुख़्ता हो -

---

37:04

जब यीशु ललाज़र के वतन में पहुंचा तो लाज़र को मरे हुए चार दिन हो चुके थे - मरथा यीशु से मिलने कों आई और उसने यीशु से कहा ,"उस्ताद अगर यु यहाँ पर होता तो मेरा भाई कभी न मरता ,मगर मेरा एत्काद है कि तू जो कुछ खुदा से मांगेगा खुदा तुझे देगा -

क्या मार्था का एत्क़ाद था कि येसु लाज़र को ज़िन्दा कर सकता था ?

जी हाँ -

कितने अरसे तक लाज़र मुर्दा पड़ा रहा ?

वह चार दिन तक मरा पड़ा रहा -

37:05

यीशु ने जवाब में कहा कि"क़यामत और ज़िन्दगी मैं हूँ जो कोई मुझ पर ईमान लायेगा वह मरने पर भी जियेगा जो कोई मुझ पर ईमान लाता है वह कभी भी न मरेगा ,क्या तू इस पर ईमान रखती है ? " मरथा ने जवाब में कहा ,मैं ईमान लाती हूँ कि तू खुदा का बेटा मसीहा है -

क्यूंकि येसु क़यामत और ज़िन्दगी है तो ईमानदारों का क्या होगा ?

जो कोई उस पर ईमान लाता है चाहे वह मर भी जाए तौ भी जिएगा ; और हर कोई जो उस पर ईमान लाता है वह कभी नहीं मरेगा -

मार्था येसू पर क्या ईमान रखती थी ?

ख़ुदा का बेटा मसीहा -

37:06

फिर मरयम यीशु के पास पहुंची ,उस ने भी यीशु के पांव पर गिर कर कहा ," अगर तू यहाँ होता तो मेरा भाई कभी न मरता ,यीशु ने उन से पूछा लाज़र को तुंम लोगों ने कहाँ रखा है ?" उन्हों ने उससे कहा,"क़ब्र में "चलो और देख लो ,यीशु ने जब उसे देखा तो उस के आंसू बहने लगे -

---

37:07

वह क़ब्र एक ग़ार था जिस के मुंह पर पत्थर धरा था -जब यीशु क़ब्र पर पहुंचा तो यीशु ने उनसे कहा "पत्थर को हटाओ ,पर मरथा ने कहा "उसको मरे हुए चार दिन हो चुके हैं ,अब उस में से बदबू आती है"-

लाज़र कितने दिन तक मुर्दा पड़ा रहा ?

वह चार दिन तक मरा पड़ा रहा -

37:08

यीशु ने जवाब में उससे कहा ,क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि अगर तू मुझ पर ईमान लाएगी तो खुदा की कुदरत को देखेगी ,तब उन्हों ने पत्थर को हटाया -

---

37:09

फिर यीशु ने आसमान की तरफ़ देखकर कहा ,"ऐ बाप मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तू मेरी सुनता है,मगर इन लोगों के बाइस जो आसपास खड़े हैं मैं ने यह कहा ताकि वह ईमान लाएं कि तू ही ने नुझे भेजा है ," फिर यीशु ने बुलंद आवाज़ से पुकारा कि "ऐ लाज़र निकल आ "

उसने ऊंची आवाज़ में ख़ुदा बाप का शुक्रिया क्यूँ अदा किया ?

उसने ऐसा इसलिए किया ताकि लोग ईमान लाए कि बाप ने उसे भेजा है -

येसु ने लाज़र को क्या हुक्म दिया ?

उसने लाज़र को हुक्म दिया कि क़ब्र से बाहर निकल आए -

37:10

सो लाज़र बाहर निकल आया ! उस के हाथ पांव अभी भी क़ब्र के कपड़ों से लिपटे हुए थे - यीशु ने उनसे कहा ,क़ब्र के कपड़े खोलने में उसकी मदद करो और उसे जाने दो" - इस मोजिज़े के सबब से बहुत से यहूदी यीशु पर ईमान लाए -

37:11

मगर यहूदियों के मजहबी रहनुमाओं ने यीशु से हसद रखा ,सो वे एक जगह जमा होकर यीशु और लाज़र को हलाक करने का मंसूबा बाँधने लगे -

यहूदियों के रहनुमाओं ने जब इस मोजिज़े को देखा तो उन्हों ने किस तरह रद्दे अमल पेश किया ?

वह उस पर हसद करने लगे और येसु और लाज़र को हलाक कर देना चाहते थे -

यीशु को फ़रेब दिया जाता है

38:01

हर साल यहूदी लोग फ़सह की ईद मनाते हैं - यह एक ईद थी कि किस तरह खुदा ने उनके बापदादा को सदियों साल पहले मिस्र की गुलामी से बचाया था - यीशु का खुले आम प्रचार करने और तालीम देने के तीन साल बाद यीशु ने अपने शागिर्दों से कहा कि वह फ़सह की ईद को येरूशलेम में उन के साथ मनाना चाहता है और यह भी कि वह वहां मारा भी जाएगा -

फ़सह के क्या मायने थे जिसे यहूदी हर साल मनाते थे ?

फ़सह इस याद में मनाया जाता है कि किस तरह ख़ुदा ने यहूदियों के बाप दादाओं को मिस्र की ग़ुलामी से बचाया

38:02

यीशु के शागिर्दों में से एक जिसका नाम यहूदा इस्कर्योती था जिस के पास पैसों की थैली रहती थी वह अक्सर उस थैली में से पैसे चुरा लिया करता था - यीशु और उसके शागिर्दों के येरूशलेम पहुँचने के बाद ,यहूदा चुपके से यहूदी रहनुमाओं के पास गया - उसने कुछ पैसों की खातिर यीशु को धोका देने यानी उसको पकड़वाने का फ़ैसला लिया ,वह जानता था कि यहूदी रहनुमा यीशु को मसिहा बतोर कबूल नहीं करते थे , और वह यह भी जानता था कि वह उसको मारना चाहते थे-

येसु को धोके से पकड़वा कर मज़हबी रहनुमाओं के हाथ सौंपने के इवज़ में यहूदा क्या चाहता था ?

इसके इवज़ में यहूदा को पैसे चाहिए थे -

38:03

यहूदी रहनुमा जो सरदार काहिन के चलाए चलते थे यहूदा को तीस चांदी के सिक्के दिए कि वह यीशु को उनके हाथ में सौंपेगा - यह बिलकुल वैसे ही हुआ जिस तरह नबियों के कलाम में लिखा हुआ था - यहूदा मान गया ,और पैसे लेकर चला गया - वह यीशु को गिरफ़तार करने का मोक़ा ढूँढने लगा ताकि उन की मदद कर सके

यहूदी रहनुमाओं ने येसू को धोके से पकड़वाने के लिए क्या क़ीमत दी ?

उन्होंने उसे पूरे तीस चांदी के सिक्के दिए -

38:04

येरूशलेम में यीशु ने अपने शागिर्दों के साथ फ़सह मनाया – फ़सह के खाने के दौरान यीशु ने रोटी ली और उसे तोड़ कर अपने शागिर्दों को दी और कहा ,'इसको लो और खाओ , मैं इसको तुम्हारे लिए दूंगा ,मेरी यादगारी के लिए यही किया करो – "यीशु ने कहा कि वह उनके लिए मरेगा कि अपना जिस्म उन के लिए क़ुर्बान करे -

फ़सह का खाना खाते वक़्त येसु ने रोटी के लिए क्या कहा ?

उस ने कहा "यह मेरा जिस्म है जो तुम्हारे लिए दिया जाता है -

38:05

फिर यीशु ने मए का का प्याला लिया और कहा "इसे पियो ,यह मेरे खून में नया अहद है इसको मैं तुम्हारे लिए उंडेलूंगा ताकि खुदा तुम्हारे गुनाह मुआफ़ करे - जो मैं अभी कर रहा हूँ आगे भी करते रहना - जब भी तुम इसे पीते हो मेरी यादगारी में ऐसा ही किया करो -

येसु ने प्याले की बाबत क्या कहा ?

उसने कहा यह मेरे ख़ून में नया अहद है जो गुनाहों की मुआफ़ी के लिए बहाया जाता है -

---

38:06

फिर यीशु ने शागिर्दों से कहा " तुम में से एक मुझे धोका देगा "- शागिर्दों को धक्का लगा और पूछा ,कौन ऐसी हरकत करेगा - यीशु ने कहा जिस को मैं रोटी का निवाला दूंगा वही फ़रेबी है - फिर उस ने वह निवाला यहूदा इस्कर्योती को दिया -

यहूदा को क्या हुआ जब उस ने येसु से रोटी का निवाला लिया ?

शैतान यहूदा में समा गया -

38:07

यहूदा ने जब वह निवाला यीशु के हाथ से लिया तो शैतान उस में समां गया - यहूदा शागिर्दों से अलग हुआ और यिशु को पकड़वाने में यहूदी रहनुमाओं की मदद के लिए चला गया - वह रात का वक़्त था -

यहूदा को क्या हुआ जब उसने येसु से रोटी का निवाला लिया ?

शैतान यहूदा में समा गया -

38:08

खाने के बाद यीशु अपने शागिर्दों के साथ जैतून पहाड़ को गया - वहां यीशु ने उनसे कहा “आज रात तुम सब मुझे छोड़ दोगे , लिखा है कि मैं चरवाहे को मारूंगा और भेड़ें तितर बितर हो जाएंगीं –“

येसु ने शागिर्दों की बाबत क्या पेशगोई की कि उन के साथ उस रात क्या होने वाला था ?

वह सब के सब येसु को छोड़ देंगे -

38:09

पतरस ने जवाब दिया ,”सब के सब चाहें छोड़ें तो छोड़ें मगर मैं तुझे नहीं छोडूंगा ! ”फिर यीशु ने पतरस से कहा “शैतान ने तुम सब को मांग लिया है कि वह तुम्हें गेहूं की तरह फटके पर मैं ने तुम्हारे लिए दुआ की है कि तेरा ईमान जाता न रहे ,यहाँ तक कि आज रात मुर्ग़ के बांग देंसे पहले तू तीन बार मेरा इंकार करेगा कि तू मुझे जानता तक नहीं –“

येसु ने पतरस से क्या कहा कि मुर्ग़ के बांग देने पहले वह क्या करेगा ?

पतरस तीन बार इनकार करेगा कि वह येसु को जानता है -

38:10

फिर पतरस ने कहा ,अगर तेरे साथ मुझे मरना भी पड़े तो भी मैं तेरा इंकार न करूंगा , और इसी तरह तमाम शागिर्दों ने भी कहा -

शागिर्दों ने उन से मुताल्लिक़ येसु की पेशगोई का क्या जवाब दिया ?

उन्होंने उससे कहा येसु का इंकार करने से अच्छा तो हम मर जाएंगे -

---

38:11

फिर यीशु अपने शागिर्दों के साथ उस मकाम पर गया जो गत्समनी कहलाता है -यिशु ने अपने शागिर्दों से कहा “दुआ करो ताकि तुम शैतान की आज़माइश में न पड़ो - फिर यीशु खुद ही दुआ करने के लिए आगे बढ़ गया -

---

38:12

यीशु ने गत्समनी में तीन बार दुआ की कि “ऐ बाप अगर हो सके तो यह मुसीबत का प्याला मुझ से टल जाए ,पर अगर लोगों के गुनाह मुआफ किये जाने का और कोई रास्ता नहीं है तो फिर तेरी मरज़ी पूरी हो ,यीशु इत्ना ज़ियादा बे - चैन और बे क़रार था कि उसका पसीना खून के क़तरे बन कर टपक रहा था - खुदा ने एक फरिश्ते को भेजा कि उसको कुव्वत दे -

येसु ने गतसमनी में ख़ुदा बाप से क्या दुआ की ?

येसु ने बाप से कहा अगर हो सके तो यह मुसीबत का प्याला टल जाए , पर अगर लोगों के गुनाहों कि मुआफ़ी का कोई और ज़रिया नहीं है तो तेरी ही मर्ज़ी पूरी हो -

---

38:13

हर दुआ के बाद यीशु अपने शागिर्दों के पास आया मगर वह उन्हें सोते पाया - जब वह तीसरी बार वापस गया तो यीशु ने उनसे कहा “जागो क्यूंकि मेरा पकडवाने वाला आ चुका है “-

जब येसु दुआ कर रहा था तो शागिर्द लोग क्या कर रहे थे ?

वह सो रहे थे -

38:14

यहूदा ,यहूदी रहनुमाओं ,सिपाहियों और एक बड़ी भीड़ को अपने साथ ले आया - वह तलवारें और लाठियां लिए हुए थे - यहूदा यीशु के पास आकर कहा " उस्ताद सलाम " और उसको चूमा -उस ने ऐसा इस लिए किया कि यहूदी रहनुमा को बताना था कि किस को गिरफ़्तार करना है - फिर यीशु ने कहा ,"यहूदा क्या तू चूमा लेने के ज़रिये मुझे पकड़वा रहा है ?"

सिपाहियों ने कैसे मालूम किया कि येसु कि क्या पहचान थी ?

येसु को गिरफ़्तार करने के लिए एक निशानी बतौर यहूदा ने येसु का बोसा लिया -

---

38:15

जब सिपाही यीशु को गिरफ़्तार कर रहे थे तो पतरस ने अपनी तलवार निकाली और सरदार काहिन के नौकर पर चला कर उस का दहना कान उड़ा दिया - यीशु ने पतरस से कहा ,"अपनी तलवार मियान में रख ! अगर मैं चाहूँ तो बाप से फरिश्तों की फ़ौज मंगवा सकता हूँ ताकि वह मुझे बचा सके ,मगर मुझे बाप का हुक्म मानना है "-फिर यीशु ने उस आदमी का कान ठीक कर दिया - फिर तमाम शागिर्द भाग गए -

येसु पर हमले को रोकने के लिए पतरस ने क्या किया ?

उसने तलवार खींची और सरदार काहिन के नौकर पर चलाकर उसका दहना कान उड़ा दिया -

येसु ने पतरस से कयूँ कहा कि उसे हमले से बचाने की कोई ज़रुरत नहीं है ?

क्यूंकि येसु ख़ुदा बाप से फ़रिश्तों की एक बहुत बड़ी फ़ौज बुला सकता था -

जब येसु गिरफ़्तार हुआ तो शागिर्दों ने क्या किया ?

वह सब के सब छोड़ कर भाग गए -

39 .यीशु का मुक़द्दमा किया जाना

39:01

अब आधी रात का वक़्त था - सिपाही यीशु को सरदार काहिन के घर ले गए क्यूंकि वह यीशु से सवाल करना चाहता था - पतरस उन के बहुत पीछे पीछे चल रहा था जब सिपाही यीशु को घर के अन्दर ले गए तो पतरस बाहर खड़े होकर खुद से आग तापने लगा -

वह कौनसा वक़्त था जब यहूदी रहनुमाओं ने येसु से सवालात पूछना शुरू किया था ?

वह आधी रात का वक़्त था -

39:02

घर के अन्दर यहूदी रहनुमा यीशु की अदालती तहकीकात करने लगे ,उन्होंने बहुत से झूठे गवाह खड़े किये जो उस की बाबत झूट बोलते थे - मगर किसी तरह उन के बयानात एक दुसरे से मुततफ़िक़ नहीं थे - इसलिए यहूदी रहनुमा साबित न कर सके कि यीशु मुजरिम है - यीशु चुप चाप रहा -

यहूदी रहनुमा क्यूँ इस बात को साबित न कर सके कि येसु में किसी तरह का जुर्म नहीं पाया जाता ?

झूठे गवाहों के बयानात एक दूसरे से मेल नहीं खाते थे -

39:03

Yiआखिरकार सरदार काहिन ने यीशु को बराहे रास्त देखा और कहा “क्या तू ज़िन्दा खुदा का बेटा मसीहा है “?

आख़िरकार सरदार काहिन ने येसु से क्या सवाल पूछा ?

“ हमको बता , क्या तू ज़िन्दा ख़ुदा का बेटा मसीहा है ?

39:04

यीशु ने कहा ,"मैं हूँ ,और इस के बाद तुम मुझे कादिर -ए- मुतलक़ के दाहिने तख़्त निशीं होते हुए और आसमांन के बादलों पर आते हुए देखोगे "इस पर सरदार काहिन ने अपने कपड़े फाड़े क्यूंकि वह यीशु की इस बात पर बहुत गुस्सा हुआ -

येसु ने सरदार काहिन को क्या जवाब दिया ?

उसने कहा ,"मैं हूँ और तुम मुझे ख़ुदा के दहनी तरफ़ उसके साथ तख़्तनशीन पाओगे और आसमान से आते हुए देखोगे -

सरदार काहिन कि नज़र में वह कौनसा जुर्म था जो येसु से सरज़द हुआ ?

येसु ने कहा कि वह ख़ुदा का बेटा है -

39:05

तमाम यहूदी रहनुमाओं ने जवाब में कहा "वह मौत की सज़ा के लायक़ है "फिर उन्हों ने यीशु की आँखों पर पट्टी बांधा , उसपर थूका , उसके मुक्के मारे और उसका मज़ाक़ उड़ाया -

---

39:06

पतरस जब घर के बाहर इंतज़ार कर रहा था तो एक लौंडी ने उसे देख कर कहा तू भी तो यीशु के साथ था , मगर पतरस ने साफ़ इंकार कर दिया , उसके बाद एक दूसरी लड़की ने भी यही बात कही ,पतरस दोबारा से मुकर गया – आखिरकार कुछ लोगों ने कहा "हम जानते हैं कि तुम यीशु के साथ थे क्यूंकि तुम दोनों गलील के हो "

जब येसु का मुक़द्दमा चल रहा था तो उस वक़्त पतरस कहां था ?

पतरस सरदार काहिन के घर के बाहर इंतज़ार कर रहा था -

लोगों ने क्यूँ सोचा कि पतरस येसु के साथ रहा करता था ?

क्यूंकि पतरस और येसु दोनों गलील से थे -

39:07

फिर पतरस ने कहा ,"अगर मैं इस शख्स को जानता तो खुदा मुझे लानत भेजे "जैसे ही पतरस ने क़सम खाई मुर्ग़ ने बांग दी , यीशु ने पतरस की तरफ़ मुड़ कर देखा

जब लोगों ने पतरस से पूछा कि क्या वह येसु को जानता है तो पतरस ने क्या जवाब दिया ?

पतरस ने तीन बार इंकार किया कि वह येसु को जानता था -

जब पतरस ने तीन बार येसु का इंकार किया तो अचानक क्या हुआ ?

एक मुर्ग़ ने बांग दी और येसु ने पतरस की तरफ़ मुड़ कर देखा -

39:08

पतरस को जब यीशु की बात याद आई तो वह बाहर जाकर ज़ार ज़ार रोया - उसी वक़्त यहूदा जिसने यीशु को पकड़वाया था देखा कि यहूदी रहनुमाओंने ने यीशु को मुजरिम क़रार दिया है तो उसे बहुत अफ़सोस हुआ और खुद को हालाक करने चला गया -

यहूदा ने क्या किया जब उस ने देखा कि यहूदी रहनुमाओं ने येसु को मुजरिम क़रार दिया ?

यहूदा बहुत ज़ियादा ग़मगीन हुआ और बाहर जाकर खुद को फांसी लगाई -

---

39:09

उस वक़्त मुल्क का हाकिम पिलातुस था – उसने रोम के लिए काम किया था -यहूदी रहनुमा यीशु को उसके पास ले आए – वह चाहते थे कि पिलातुस यीशु को मुजरिम करार दे और उसे हलाक करे - फिर पिलातुस ने यीशु से पूछा ,"क्या तू यहूदियों का बादशाह है ?"

यहूदी रहनुमाओं ने येसु को रोमी गवर्नर पिलातुस के यहाँ क्यूँ ले गए ?

उन्हें यह उम्मीद थी कि पिलातुस येसु को मुजरिम क़रार देगा और मौत की सज़ा सुनाएगा -

पिलातुस ने येसु से पहला सवाल क्या पूछा ?

"क्या तू यहूदियों का बादशाह है"

39:10

यीशु ने जवाब दिया ,"तूने सच कहा है "मगर मेरी बादशाही इस ज़मीन की नहीं है ,अगर ऐसा होता तो मेरे ख़ादिम मेरे हक़ में लड़ते - मैं दुनया में खुदा की बाबत सचाई की मनादी करने आया हूँ - हर कोई जो सच्चाई से प्यार करता है वह सुनता है –" पिलातुस ने कहा सचाई क्या है ?"

येसु ने क्या कहा कि उसके ज़मीन पर आने का क्या मक़सद था ?

ख़ुदा की बाबत सच्चाई का ऐलान करे -

39:11

यीशु से बात करने के बाद पिलातुस भीड़ के सामने जाकर कहा ,"मैं इस शख्स में कोई जुर्म नहीं पाता कि वह मौत कि सज़ा के लायक़ ठहरे-"मगर यहूदी रहनुमा और भीड़ चिल्लाई कि "उसको सलीब दे"! पिलातुस ने जवाब दिया कि वह किसी भी बात का ख़ुसूरवार नहीं है" मगर वह और जोर से चिल्लाने लगे -फिर तीसरी बार पिलातुस ने कहा कि वह क़सूरवार नहीं है -

कितनी मर्तबा पिलातुस ने भीड़ के लोगों से कहा कि येसु बे गुनाह है ?

तीन मर्तबा

39:12

पिलातुस को डर था कि भीड़ दंगे फ़साद में न उतर आए तब वह राज़ी हो गया कि उसके सिपाही यीशु को सलीब देंगे - रोमी सिपाहियों ने यीशु के कोड़े लगाए , किर्मज़ी चोग़ा पहनाया और काँटों का ताज बनाकर उस के सर पर रखा - फिर उनहोंने यह कहकर उसका मज़ाक़ उड़ाया ,"ऐ यहूदियों के बादशाह ,आदाब !"

फिर क्यूँ पिलातुस ने येसु को मस्लूब होने दिया ?

क्यूंकि पिलातुस को डर था कि भीड़ के लोग कहीं दंगा फ़साद न शुरू कर दें -

रोमी सिपाहियों ने येसु के साथ कैसा बर्ताव किया ?

उन्होंने येसु के कोड़े मारे , शाही पोशाक पहनाई ,काँटों का ताज उस के सर पर रखा और उसका मज़ाक़ उड़ाया -

40 . यीशु को सलीब दी गई

40:01

सिपाहियों के ज़रिये मज़ाक़ उड़ाए जाने बाद उसको सलीब देने की जगह पर ले जाया गया – उन्होंने उस सलीब को उठाकर ले जाने के लिए मजबूर किया जिस पर मस्लूब किया जाना था -

जब सिपाही येसु को मस्लूब करने शहर से बाहर ले जा रहे थे तो क्या चीज़ येसु को अपने साथ लेकर जाने के लिए मजबूर किया ?

उन्होंने एक भारी सलीब ले कर चलने के लिए मजबूर किया जिस पर उसको मरना था -

---

40:02

सिपाहियों ने यीशु को उस जगह पर ले आए जो “खोपड़ी की जगह” कहलाती थी और उसके हाथ और पांव सलीब पर ठोंक दिए - मगर यीशु ने कहा “ऐ बाप तू इन्हें मुआफ़ कर क्यूंकि यह नहीं जानते कि यह क्या करते हैं” उनहोंने सलीब के सिरे पर एक मक्तुबा भी लगाया जिस में लिखा था “यहूदियों का बादशाह”- इसे पिलातुस ने लिखने को कहा था -

येसु को जहां सलीब दी गयी थी उस जगह का नाम क्या था ?

खोपड़ी की जगह

सिपाहियों ने येसू को सलीब पर कैसे बांधा (जोड़ा) ?

उन्होंने येसु के हाथ और पांव में कीलें जड़ दीं -

जो लोग येसु को मस्लूब कर रहे थे उनके लिए उस ने क्या दुआ की ?

उसने इस तरह से दुआ की “ऐ बाप तू इन्हें मुआफ़ कर क्यूंकि यह नहीं जानते कि यह क्या कर रहे हैं -

येसु के सर के ऊपर सलीब के ऊपरी हिस्से में निशानी बतौर क्या लिखा हुआ था ?

यहूदियों का बादशाह

40:03

फिर सिपाहियों ने यीशु के कपड़ों पर क़ुरअ: डालकर उसके कपड़े बांट लिए जब वे यह कर चुके तो यह नबुवत पूरी हुई कि “वह मेरे कपड़े बांटते और उस पर कुरअ: डालते हैं –“

येसु के कपड़ों को सिपाहियों ने किस तरह बांटा ?

उन्होंने उसके कपड़ों पर क़ुरआ डाला जिस तरह से नबुव्वत हुई थी -

---

40:04

वहां पर दो और डाकू भी थे जो उसी वक़्त मस्लूब किये गए थे - उन्हें एक को दाएं और दुसरे को बाएँ तरफ़ मस्लूब किया था - उनमें से एक ने यीशु का मज़ाक़ उड़ाया मगर दुसरे ने उस से कहा “क्या तू खुदा से नहीं डरता कि वह तुझे सज़ा देगा ,हम तो अपने बुरे कामों की सज़ा भोग रहें हैं,मगर यह शख्स तो बे - गुनाह है “-और उस ने येशु से कहा ,”जब तू अपनी बादशाही में आए तो मुझे याद रखना”,यीशु ने उस से कहा “तू आज ही मेरे साथ फ़ीरदोस में होगा –“

उस डाकू ने जिस ने येसु का मज़ाक़ नहीं उड़ाया था येसु से क्या करने को कहा ?

उसने येसु से कहा कि जब तू अपनी बादशाही में आए तो मुझे याद करना -

डाकू की दरख़ास्त के लिए येसु का क्या जवाब था ?

उसका जवाब था “तू आज ही मेरे साथ जन्नतुल फ़िरदौस में होगा -

40:05

यहूदियों के रहनुमा और भीड़ के दीगर लोगों ने यीशु का मज़ाक़ उड़ाया , उन्हों ने उस से कहा ,”अगर तू खुदा का बेटा है तो सलीब से नीचे आकर दिखा और अपने आप को बचा ! तब हम तुझ पर एत्काद करेंगे -

ख़ुदा का बेटा होने को साबित करने के लिए भीड़ येसु से क्या चाहती थी ?

उन्होंने येसु से कहा सलीब से नीचे उतर आ और ख़ुद को बचा -

40:06

फिर उस पूरे इलाक़े में मुकम्मल तोर से अंधेरा छा गया जबकि वह दिन दोपहर का वक़्त था यानी दिन के 12 बजे से लेकर 3 बजे तक बिलकुल अंधेरा ही अंधेरा छाया रहा -

दोपहर के वक़्त में आसमान पर कौनसी ग़ैरमामूली बात वाक़े हुई ?

दोपहर से लेकर दोपहर के बाद तीन बजे तक सारे मुल्क में अँधेरा छाया रहा -

---

40:07

तब यीशु ने सलीब पर से चिल्लाया “पूरा हुआ ,ऐ बाप मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सोंपता हूँ “ तब उस ने सर झुका कर अपनी जान दे दी - जब वह मरा तो बड़ा भोंचाल आया तब मंदिर का बड़ा पर्दा जो लोगों को खुदा की हुज़ूरी से दूर रखता था वह ऊपर से नीचे तक फट गया -

येसु का आख़री कलिमा क्या था जो उस ने सलीब पर से चिल्लाकर कहा ?

“पूरा हुआ , ऐ बाप मैं अपनी रूह तेरे हाथों में सौंपता हूँ -

येसु के मरने के फ़ौरन बाद कौनसे मोजिज़ाना वाक़ियात वाक़े हुए ?

एक ज़लज़ला आया और मंदिर का जो बड़ा पर्दा था वह ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया -

---

40:08

उसकी मौत के वसीले से यीशु ने एक रस्ता खोला कि लोग खुदा के पास आएं - जब एक मुहाफ़िज़ सिपाही जो इन सब बातों को वाक़े होते देख रहा था तो उसने कहा “सच मुच यह शख्स बे गुनाह था और ख़ुदा का बेटा था

येसु ने अपनी मौत के वसीले से किस बात को पूरा किया ?

येसु ने लोगों को ख़ुदा के पास आने का एक रास्ता खोल दिया -

40:09

फिर दो यहूदियों के सरदार जिन का नाम यूसुफ़ और निकोदिमुस था वह आए - उनका एतक़ाद था कि यीशु मसीहा था , उन्हों ने पिलातुस से यीशु की लाश मांगी -उन्हों ने उसके जिस्म को कपड़े में लपेटा और एक नई क़ब्र के अन्दर रखा और एक बड़ा पत्थर उसके मद्ख़ल पर रखा -

येसु कि लाश को मांगने के लिए पिलातुस के पास कौन आया ?

यूसुफ़ और निकुदीमुस

उन्होंने लाश के साथ क्या किया ?

उन्होंने लाश को कपड़े में लपेटा और उसे पत्थरों से तराशी हुई एक क़ब्र में रखा और उसके मुंह पर यानि कि उसके मद्खल पर एक बड़ा गोल पत्थर रख दिया -

41 . खुदा यीशु को मुरदों में से जिलाता है

41:01

सिपाही यीशु को सलीब देने के बाद यहूदी रहनुमाओं ने पिलातुस से कहा “उस झूठे यीशु ने कहा था कि वह तिन दिन बाद जी उठेगा - सो किसी न किसी को क़ब्र की रखवाली करनी पड़ेगी ताकि उस के शागिर्द उसकी लाश को चुरा कर न ले जाएं - अगर वह ऐसा करते हैं तो वह कहेंगे कि यीशु मुरदों में से जी उठा है -

येसु ने क्या कहा था कि उसके मरने के तीन दिन बाद क्या होगा ?

वह मुर्दों में से ज़िन्दा होगा -

यहूदी रहनुमाओं ने येसु की पेश बीनी से मुताल्लिक क्या सोचा जो उसने कहा था कि वह फिर से जी उठेगा ?

उन्होंने सोचा कि वह एक झूठा है

यहूदी रहनुमाओं को किस बात का डर था येसु के शागिर्द क्या करेंगे ?

उन्हों ने सोचा कि वह येसु की लाश को चुरा ले जायेंगे और दावा कर देंगे कि वह जी उठा -

---

41:02

पिलातुस ने कहा ,”क़ब्र की रखवाली के लिए जितने सिपाही चाहो ले जाओ “ सो वे सिपाही ले गये और क़ब्र के मुंह पर जो पत्थर था उस पर रोमी सरकार की मोहर लगादी - उन्होंने सिपाहियों का भी पहरा बिठाया ताकि लाश को कोई चुरा कर न लेजा सके -

यहूदी रहनुमाओं ने येसु की क़ब्र की मुहफ़िज़त में क्या किया ?

उन्होंने सिपाहियों को मुक़र्रर किया कि क़ब्र की हिफ़ाज़त करें और मद्ख़ल वाले पत्थर पर मुहर लगवा दी -

---

41:03

यीशु के मरने के दुसरे दिन सबत का दिन था - सबत के दिन कोई भी काम नहीं कर सकता था - सो यीशु के दोस्तों में से कोई भी उसकी क़ब्र पर नहीं गया , मगर सबत के दुसरे दिन , सुबह सवेरे कुछ औरतें यीशु की क़ब्र पर जाने के लिए तय्यार हुईं - वह उसके जिस्म पर और ज़ियादा खुशबूदार मसाले डालना चाहती थीं -

किस वक़्त औरतें येसु की क़ब्र पर गयीं ?

सबत के दुसरे दिन सुबह के वक़्त बहुत सवेरे -

41:04

औरतों के पहुँचने से पहले क़ब्र पर एक भोंचाल आया था - एक फ़रिश्ता आसमांन से आया और क़ब्र के मुंह पर जो पत्थर था उस को लुढ़का कर उस पर बैठ गया था -यह फ़रिश्ता बिजली की तरह चमकीला था - सिपाहियों ने उसे देखा भी था वह उस से ऐसे दहशत खाए थे कि वह मुर्दा से ज़मीन पर गिर पड़े थे -

औरतों के पहुँचने से पहले क़ब्र पर कौनसा मोजिज़ाना वाक़िया हुआ ?

वहां पर एक भोंचाल आया ,और एक फ़रिश्ता ज़ाहिर हुआ और पत्थर को सरका कर उस पर बैठ गया -

सिपाहियों को क्या हुआ जब उन्होंने उस फ़रिश्ते को देखा ?

वह बहुत डर गए और ज़मीन पर मरे हुए शख़्स की तरह गिर पड़े -

41:05

जब औरतें क़ब्र पर आईं तो फ़रिश्ते ने उन से कहा “डरो मत , यीशु यहाँ नहीं है ,वह मुरदों में से जी उठा है ,जैसा उसने पहले से ही कह दिया था कि वह जी उठेगा ! फ़रिश्ते के कहने के मुताबिक़ औरतों ने देखा कि यीशु की लाश क़ब्र पर नहीं थी -

फ़रिश्तों ने औरतों से क्या कहा जब वह क़ब्र पर पहुँचीं ?

फ़रिश्ते ने औरतों से कहा , मत डरो , येसु मुर्दों में से ज़िन्दा हो गया है इस जगह को देखो जहाँ वह पड़ा था

41:06

फिर फ़रिश्ते ने औरतों से कहा ,”जाओ और शागिर्दों से कहदो कि यीशु मुरदों में से जी उठा है ,और वह तुम से पहले गलील को जाएगा “-

फ़रिश्ते ने औरतों से क्या कहा कि शागिर्दों को यह बात कहनी है ?

उसने उनसे कहा शागिर्दों से जाकर कहो कि येसु मुदों में से जी उठा है और वह तुम से पहले गलील को जाएगा -

41:07

औरतें बहुत ज़ियादा ताज्जुब करने लगीं और बहत खुश हुईं - वह शागिर्दों को यह खुशख़बरी देने के लिए दौड़ पड़ीं -

41:08

जब औरतें शागिर्दों को खुशखबरी देने के लिए जा रहीं थीं तो रास्ते में यीशु उन पर ज़ाहिर हुआ तब वे उस के क़दमों पर गिर कर उसे सिजदा करने लगीं ,यीशु ने उन्से कहा, मत डरो ,"जाओ और मेरे शागिर्दों से कहो कि वह गालील को जाएं ,वहां वह मुझे देखेंगे –"

जब वह औरतें शागिर्दों को बताने जारही थीं तो रास्ते में कौन ज़ाहिर हुआ ?

येसु उन पर ज़ाहिर हुआ -

जब औरतों ने येसु को देखा तो उन्होंने क्या किया ?

उन्हों ने उसको सिजदा किया

42 . यीशु आसमान पर सऊद फ़रमाता है

42:01

जिस दिन खुदा ने यिशु को मुरदों में से जिलाया ,उस के शागिर्दों में से दो पास वाले शहर की तरफ़ जा रहे थे -जब वह जा रहे थे तो यिशु के साथ जो वाक़े हुआ था उस की बाबत बातें करते जा रहे थे - उनको उम्मीद थी कि वह मसीहा था , मगर फिर वह मारा गया - अब कुछ औरतों ने कहा कि वह ज़िन्दा हो गया -- वह नहीं जानते थ कि क्या एत्काद करें -

दो शागिर्द रास्ते में चलते चलते किस मौज़ू पर बात करते जा रहे थे ?

जो कुछ येसु के साथ हुआ उसकी बाबत बात कर रहे थे

42:02

यीशु उन के पास् पहुंचा और उन के साथ चलने लगा मगर वह उसे नहीं पहचानते थे - यीशु ने उनसे पूछा कि क्या बातें करते जाते हो - उनहोंने वह सारी बातें कहीं जो पिछले कुछ दिनों में हुआ था - उनहोंने सोचा कि वह एक बाहर के श्ख्स से बातें कर रहे हैं जो येरूशलेम में क्या कुछ हुआ उसे नहीं जानता था -

दो शागिर्दों ने क्या सोचा कि हमारी जिस से बात चल रही थी वह कौन था ?

उन्होंने सोचा था कि वह कोई अजनबी होगा जो नहीं जानता था कि येरूशलेम में क्या कुछ हुआ था -

---

42:03

फिर यीशु ने उनको समझाया कि मसीहा के बारे में कलाम में क्या कहा गया है - बहुत पह्ले नाबियों ने कहा था कि शरीर और गुनाहगार लोगों की खातिर मसीहा दुःख उठाएगा और मरेगा ,मगर वह तीसरे दिन जी उठेगा -

नबियों ने क्या कहा था कि मसीहा का क्या हाल होगा ?

मसीहा दुःख उठाएगा और मरेगा मगर वह तीसरे दिन मुर्दों में से ज़िन्दा होगा -

---

42:04

जब वह शहर में पहुंचे जहां यह दो लोग रुकना चाहते थे वह तकरीबन शाम का वक्त था - उन्हों ने यीशु को दावत दी कि उनके साथ रुके - सो वह उन के साथ एक घर में गया - वह शाम का खाना खाने बैठे - यीशु ने एक रोटी ली और शुक्र कर के उन्हें देने लगा - अचानक से उनहोंने पहचाना कि वह यीशु था - क्यूंकि उसी पल वह उनकी नजरों से ग़ायब होचुका था -

जब दो शागिर्दों ने येसु को पहचान लिया तब वह क्या कर रहा था ?

वह रोटी तोड़ रहा था और उसके लिए ख़ुदा का शुक्रिया अदा कर रहा था -

---

42:05

उन दोनों ने एक दुसरे से कहा “वह यीशु था ! जब वह राह में हम से बातें करता और कलाम से हमें समझाता थ तो क्या हम जोश से भर नहीं गए थे ? सो वह फ़ौरन येरूशलेम वापस गए और जाकर शागिर्दों को ख़बर दी कि यीशु ज़िन्दा है और हम ने उसे देखा है “!

येसु ने जब उन दो शागिर्दों से विदा ली तो उस के जाने के बाद उन्होंने क्या किया ?

वह येरूशलेम लौटे और दीगर शागिर्दों को बताया कि येसु ज़िन्दा था और उन्हों ने उसे देखा था -

---

42:06

जब शागिर्द कमरे में बैठे आपस में बातें कर रहे थे तो अचानक यीशु उन के बीच में ज़ाहिर हुआ -उस ने कहा “ तुम पर सलामती हो “ - शागिर्दों ने सोचा कि वह भूत है - मगर यीशु ने कहा कि तुम क्यूँ डरते हो ? मेरे हाथ और पांव को देखो - भूत का कोइ जिस्म नहीं होता - यह् बताने के लिए कि वह कोई भूत नहीं है उसने खाने को कुछ माँगा - उन्होंने उस्को एक मछली का टुकड़ा दिया और उसने उसे खाया -

येसु ने शागिर्दों को कैसे साबित किया कि वह कोई भूत नहीं है ?

उसने एक भुनी हुई मछली का क़तला लेकर खाया -

42:07

यीशु ने उनसे कहा जो कुछ खुदा के कलाम में मेरी बाबत लिखा है वह पूरी होंगी मैं ने तुमसे कहा था कि उन का पूरा होना ज़रूरी है - फिर यीशु ने खुदा के कलाम को बेहतर तरीके से समझाया - अरसा पहले नबियों ने लिखा कि मसीहा दु:ख उठाएगा , मरेगा और फिर तीसरे दिन मुरदों में से जी उठेगा -

किस बात ने शागिर्दों को इस क़ाबिल किया कि वह ख़ुदा के कलाम को समझ पाए ?

येसु ने उनके दिमाग़ को खोला -

42:08

नबियों ने यह भी लिखा कि मेरे शागिर्द खुदा के पैग़ाम की मनादी करेंगे - वह हर एक से कहेंगे कि तौबा करो -अगर वह करते हैं तो खुदा उन के गुनाहों को मुआफ करेगा - मेरे शागिर्द इस मनादी को येरूशलेम से शुरू करेंगे फिर वह दुनया के हर एक कबीले में हर जगह जाएंगे जो कुछ मैं ने कहा और किया उन सबके तुम गवाह हों और जो कुछ मुझ पर वाके हुए -

वह कौनसा पैग़ाम था जो येसु के शागिर्दों को मनादी करना था ?

वह मनादी करेंगे कि हर एक को अपने गुनाहों की मुआफ़ी हासिल करने के लिए तौबा करनी चाहिए -

येसु के शागिर्दों को कहां पर इस पैग़ाम की मनादी करनी थी ?

सबसे पहले उनको येरूशलेम में और फिर दुनिया के तमाम लोगों में -

---

42:09

चालीस दिन के दौरान में यीशु अपने शागिर्दों पर कई बार ज़ाहिर हुआ ,एक बार तो वह एक ही वक़्त में 500 से ज़ियादा लोगों पर ज़ाहिर हुआ ! उसने अपने शागिर्दों को कई तरह से साबित किया कि वोह ज़िन्दा है और खुदा की बादशाही कि तालीम दी -

कितने अरसे तक येसु लगातार शागिर्दों पर ज़ाहिर होता रहा ?

वह उनपर लगातार 40 दिन तक ज़ाहिर होता रहा -

शागिर्दों की कितनी बड़ी जमाअत थी जो उस वक़्त येसु ने देखी ?

वह 500 से ज़ियादा शागिर्दों पर एक ही वक़्त में ज़ाहिर हुआ था -

---

42:10

यीशु ने अपने शागिरदों से कहा ,"खुदा ने मुझको आसमान और ज़मीन की हर एक चीज़ पर हुकूमत करने का इख्तियार दिया है - इस लिए मैं तुमसे कहता हूँ कि:"तुम जाकर सब कौमों को शागिर्द बनाओ ,और उनको बाप ,बेटे और रूहुल्कुदुस के नाम से बप्तिस्मा दो-उन्हें यह भी तालीम देना है कि उन सब बातों पर अमल करना है जिन का मैं ने हुक्म दिया ,और देखो मैं दुनया के आखिर तक तुम्हारे साथ हूँ –"

येसु ने अपने शागिर्दों को क्या करने का हुक्म दिया ?

उसने उनसे कहा "तुम जाकर सब क़ौमों को शागिर्द बनाओ ,और उनको बाप बेटे और रूहुलक़ुदुस के नाम से बपतिस्मा दो और उनको यह तालीम दो कि उन सब बातों पर अमल करें जिनका मैं ने तुमको हुक्म दिया"-

---

42:11

यीशु के मुर्दों में से ज़िन्दा होने के चालीस दिन बाद उसने अपने शागिर्दों से कहा "जब तक मेरा बाप तुम्हें क़ुवत अता नहीं करता तब तक तुम येरूशलेम में ठहरे रहो -वह तुम पर रूहुल्कुदुस नाज़िल करने के ज़रिए से ऐसा करेगा - फिर यीशु आसमान पर उठा लिया गया और एक बादल ने उसे उन की नज़रों से छिपा लिया -यीशु आसमान पर ख़ुदा के दहनी तरफ़ तख़्त निशीं है और तमाम चीज़ों पर हुकूमत करता है -

येसु ने अपने शागिर्दों से यह क्यूँ कहा कि येरूशलेम में ठहरे रहो ?

जब तक कि बाप की तरफ़ से उन्हें रूहुल क़ुदुस की क़ुव्वत नहीं मिल जाती उन्हें इंतज़ार करना ज़रूरी था -

येसु अपने जी उठने के चालीस दिन बाद कहाँ गया ?

वह आसमान पर चला गया -

अभी इसी वक़्त येसु क्या कर रहा है ?

वह ख़ुदा के दहनी तरफ़ बैठ कर सारी चीज़ों पर हुकूमत कर रहा है -

43. कलीसिया शुरू होती है

43:01

यीशु के आसमान पर वापस जाने के बाद ,शागिर्द येरूशलेम में ठहरे रहे जिस तरह से यीशु ने उनको हुक्म् दिया था - दूसरी तरफ़ ईमानदार लगातार दुआ बंदगी के लिये जमा होते थे -

शागिर्द लोग जब येरुशलेम में पाक रूह के नाज़िल होने का इंतज़ार कर रहे थे तो वह क्या कर रहे थे ?

वह हमेशा दुआ और इबादत के लिए जमा होते थे -

43:02

हर साल फ़सह के पचास दिन बाद यहूदी लोग एक ख़ास दिन मनाते थे जिसे पेन्तिकुस्त का दिन कहा जाता है – पेन्तिकुस्त एक ऐसा वक़्त होता था जब यहूदी लोग गेहूं के फ़सल की कटाई का जश्न मनाते थे - तमाम दुनया से यहूदी लोग येरूशलेम में जमा होकर एक साथ पेतिकुस्त के ईद को मनाते थे - इस साल पेन्तिकुस्त का दिन यीशु के आसमान पर सऊद फ़रमाने के एक हफ़्ते बाद पड़ा था -

यहूदी लोग पेंतिकुस्त का दिन कब मनाते थे ?

वह हर साल फ़सह के पचास दिन के बाद मानाते थे -

येसु के मुर्दों में से जी उठने के बाद पेंतिकुस्त के दिन ईमानदारों को क्या हो गया था ?

तेज़ आंधी की सी आवाज़ आई , उनके सिरों के ऊपर आग की लपटें दिखाई दीं और वह रूहुलक़ुदुस से भर गए थे और ग़ैर जुबानें बोलने लगे थे -

---

43:03

जब सारे ईमानदार लोग एक जगह पर जमा थे , तो अचानक उस घर में जहां वह जमा थे एक पुर ज़ोर आंधी की सी आवाज़ गूंजने लगी - फिर कुछ आग की लपटें दिखाई दिए जो तमाम ईमानदारों के सिर पर जाकर ठहर गईं - वह सब के सब रूहुल क़ुदुस से भर गए और फ़रक़ फ़रक़ ज़ुबानों में खुदा कि हम्द ओ सिताइश करने लगे - यह वह ज़ुबानें रूहुल क़ुदुस ने उन्हें बोलने दिया -

---

43:04

जब यरूशलेम में लोगों ने इस आवाज़ को सुना तो वह भीड़ की शक्ल में जमा होकर उस जगह को देखने के लिए आ गए कि वहाँ क्या हो रहा था - उनहोंने ईमानदारों से खुदा के उन बड़े कामों की मनादी सुनी जो उसने उन के बीच अंजाम दिए थे -लोगों की भीड़ इस बात पर ताज्जुब करने लगी कि वे अपनी मादरी ज़ुबान में इन बातों की चरचा सुन रहे थे -

भीड़ में लोग हैरत ज़दा क्यूँ होने लगे थे ?

उन्होंने शागिर्दों के मुंह से उनकी अपनी ज़बान में बात करते सुना -

---

43:05

उनमें से कुछ लोगों ने कहा कि शागिर्द लोग नशे में हैं -मगर पतरस ने खड़े होकर उन से कहा “मेरी बात सुनो ,यह लोग नशे में नहीं हैं ,बल्कि जो कुछ तुम देख रहे हो वह योएल नबी की मार्फ़त कही हुई नबूवत की तकमील है कि आख़री दिनों में मैं अपना रूह तमाम ईमानदारों पर उन्डेलूँगा -

कुछ लोगों ने क्या सोचा कि शागिर्दों के इस तरह से बात करने की क्या वजह थी ?

उन्होंने शागिर्दों पर इलज़ाम लगाया कि वह शराब के नशे में थे -

पतरस ने क्या कहा कि उनके इस तरह से ग़ैर ज़ुबानों में बात करने का क्या सबब था ?

पतरस ने कहा कि ख़ुदा उनपर अपना पाक रूह नाज़िल कर रहा था -

43:06

ऐ इस्राईलियो सुनो ,”यीशु एक शख्स था जिस ने कई एक मोजिज़े किये यह बताने और जताने के लिए कि वह कौन था - उसने खुदा की क़ुवत से बड़े अछम्बे काम अंजाम दिए - और तुम यह बात अच्छी तरह से जानते हो क्यूंकि तुमने इन बातों को देखा है मगर तुम ने उसे सलीब पर चढ़ाकर मार डाला -

पतरस ने क्या कहा कि येसु को सलीब पर चढ़ाने के ज़िम्मेदार कौन थे ?

भीड़ के लोग

43:07

यीशु मर गया मगर खुदा ने उसे मुर्दों में से ज़िन्दा किया - यह बात सच साबित हुई जो नबी ने पहले से ही उस की बाबत लिखा था कि “वह अपने माम्सूह को क़ब्र में सड़ने नहीं देगा “हम उस के गवाह हैं कि खुदा ने उसको मुरदों में से ज़िन्दा कर दिया है -

पतरस ने क्या कहा कि येसु मरने के बाद फिर कैसे ज़िन्दा हुआ ?

ख़ुदा ने उसको मुर्दों में से ज़िन्दा किया -

43:08

खुदा बाप अब उसको अपने दहने तख़्त में बैठाने के ज़रिये उसको इज़्ज़त बख्शता है - और यीशु ने हमारे लिए रुहुल क़ुदुस को भेजा है जैसा उस ने वादा किया था कि वह भेजेगा - यह रुहुल क़ुदुस का ही काम है जो तुम यहाँ पर देखते और सुनते हो “-

क्या सबब था कि शागिर्द लोग ग़ैर जुबानें बोलने लगे थे ?

रूहुल क़ुदुस के नाज़िल होने के सबब से वह लोग ग़ैर जुबानें बोलने लगे थे -

---

43:09

“तुम ने इस शख्स यीशु को सलीब पर चढ़ाया - पास इस्राईल का सारा घराना जांन ले कि खुदा ने उसी यीशु को जिसे तुम ने मस्लूब किया , खुदावंद भी किया और मसीह भी –“

पतरस ने क्या कहा कि येसु की मस्लूबियत के लिए कौन लोग ज़िम्मेदार थे

भीड़ के लोग

कौनसी दो बातें थीं जो पतरस ने कहीं कि ख़ुदा ने येसु को कौनसा रुतबा पाने का हक़ बख़्शा ?

ख़ुदावंद और मसीहा -

43:10

जब लोग पतरस की इन बातों को सुन रहे थे तो उनके दिलों पर चोट लगी - सो उन्हों ने पतरस और दीगर शागिर्दों से पूछा कि “ऐ बाइयो ! हम क्या करें ?”

पतरस के पैग़ाम का लोगों ने कैसा रद्देअमल पेश किया ?

उन के दिलों पर चोट लगी और वह पूछने लगे थे कि ‘भाइयो हम क्या करें’? -

---

43:11

पतरस ने उन से कहा तुम में से हर एक तौबा करो और अपने गुनाहों की मुआफ़ी के लिए यीशु मसीह के नाम से बप्तिसमा लो तब खुदा तुम्हारे गुनाह मुआफ करेगा और रूहुल क़ुदुस भी इनाम में देगा -

पतरस ने लोगों से क्या करने को कहा ?

उस ने उन से कहा कि तौबा करो और नजात के लिए येसु मसीह के नाम से बपतिस्मा लो ताकि ख़ुदा तुम्हारे गुनाह मुआफ़ करे -

---

43:12

पतरस की मनादी से लगभग 3,000 लोग ईमान लाए और यीशु के ईमानदारों में शामिल हो गए - उनहोंने बपतिस्मा लिया और यरूशलेम की कलीसिया का एक हिस्सा बन गए -

उस दिन कितने लोग येसु पर ईमान लाए और बपतिस्मा लिया ?

43:13

ईमानदारों ने लगातार शागिर्दों की तालीम को सुना - वह अक्सर एक साथ मिलकर खाना खाते थे और एक साथ मिलकर दुआ करते थे - वह एक साथ मिलकर खुदा की हम्द किया करते थे और सब चीजों में शरीक थे - और शहर का हर एक शख्स उनसे वाकिफ़ कार था - जो नाजात पाते थे उनको खुदा हर रोज़ उन में मिला देता था -

शागिर्द लोग क्या कुछ करने में अपना वक़्त गुज़ारते थे ?

रसूलों से तालीम पाने में , एक दूसरे के लिए दुआ करने में ,एक साथ मिलकर खाना खाने में , मिलकर ख़ुदा की हम्द ओ सिताइश करने में, सब चीज़ों में शरीक होने में अपना वक़्त गुज़ारते थे -

44 . पतरस और युहन्ना एक भीक मांगने वाले को शिफ़ा देते हैं -

44:01

एक दिन पतरस और युहन्ना मंदिर में गए - मंदिर के फाटक पर उन्होंने एक लंगड़े को भीक मांगते देखा -

लंगड़ा आदमी पतरस और युहन्ना से क्या चीज़ पाने की तवक़्क़ो रखता था ?

पैसा पाने की -

44:02

पतरस ने उस लंगड़े आदमी की तरफ़ देखा और कहा ,"मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ भी पैसे नहीं है , मगर जो मेरे पास है वह मैं तुम्हें देता हूँ , यीशु के नाम से उठ और चल फिर –"

पैसे के बदले में पतरस ने उस लंगड़े आदमी को क्या दिया ?

पतरस ने उसे येसु के नाम से उसके लंगड़ेपन से शिफ़ा बख़्शी -

44:03

फ़ौरन ही खुदा ने उस लंगड़े को शिफ़ा बख्शी और वह लंगड़ा चलने फिरने , उछलने कूदने और खुदा की तारीफ़ करने लगा – जो लोग मंदिर के आसपास थे उनहोंने यह देखकर ताज्जुब किया -

---

44:04

बहुत जल्द लोगों की एक बड़ी भीड़ इस शख्स को देखने के लिए जमा हो गई जिसने शिफ़ा पाई थी - पतरस ने भीड़ से मुख़ातब होकर कहा , इस को देखकर ताजुब न करो - क्यूंकि इस को हम ने अपनी ताक़त से शिफ़ा नहीं दी , बल्कि यीशु मसीह ने अपनी क़ुवत से इस शख्स को शिफ़ा दी है , क्यूंकि हम यीशु पर ईमान रखते हैं "

पतरस ने क्या कहा कि वह लंगड़ा बख़्स किस के बाइस शिफ़ा पा सका था ?

येसु की क़ुव्वत और ईमान जो येसु देता है -

44:05

तुम वह लोग हो जिन्होंने रोमी सरकार को मजबूर किया कि यीशु को हालाक करे – तुम ने उस शख्स को मारा जो हर एक को ज़िन्दगी बख्शाता है , मगर खुदा ने उसको मुर्दों में से ज़िन्दा किया - तुम्नाहीं समझते थे कि तुम क्या कर रहे थे - मगर जब तुम ने उन्हें अंजाम दिया तो वह चीजें साबित हुईं जो नबियों ने कहा था -उन नबियों ने कहा था कि मसीहा दु:ख उठाएगा और हालाक होगा - खुदा इस तरह से होने दिया - सो अब तुम खुदा की तरफ फिरो और तौबा करो ताकि वह तुम्हारे गुनाहों को धोए और साफ़ करे -

पतरस ने क्या कहा कि येसु को किसने हलाक किया?

उसने कहा कि भीड़ के लोगों ने रोमी गवर्नर को मना लिया कि येसु को हलाक करे -

कौनसी नबुव्वतें पूरी हुईं जब लोगों ने येसु को हलाक किया ?

वह नबुव्वतें जिनमें लिखा है कि मसीहा दु:ख उठाएगा और मरेगा -

पतरस ने लोगों से क्या कहा कि उन्हें क्या करना चाहिए ?

उन्हें तौबा करके ख़ुदा की तरफ़ फिरना चाहिए ताकि उनके गुनाह धुल जाएं -

---

44:06

जब मंदिर के रहनुमाओं ने पतरस और युहन्ना की बाबत सुना तो वह बहुत ज़ियादा परेशान हुए - सो उन्हों ने उनको गिरफ़्तार किया और क़ैद में डाल दिया - मगर बहुत से लोगों ने पतरस की बातों का यकीन किया और मसीह पर ईमान ले आए - और ईमानदारों की तादाद 3000 से बढ़ कर 5000 हो गई -

पतरस के पैग़ाम के नतीजे पर कितने लोग ईमान ले आए ?

44:07

दुसरे दिन यहूदी रहनुमाओं ने पतरस और युहन्ना को सरदार काहिन की अदालत में बुला भेजा - उस अदालत में दीगर मज़हबी रहनुमा भी थे उन्हों ने उस लंगड़े शख्स को भी हाज़िर किया जो शिफ़ा पा चूका था - उन्हों ने पतरस और युहन्ना से पूछा कि इस लंगड़े शख्स को तुम ने किस ताक़त से शिफ़ा दी थी ?

44:08

पतरस ने उन्हें जवाब दिया,"यह शख्स जो आपके सामने खड़ा है उस ने यीशु मसीह के नाम से शिफ़ा पाई है -तुम ने यीशु को सलीब पर चढ़ाया मगर खुदा ने उस को फिर से ज़िन्दगी दी ! तुम ने उसको रद्द किया – बचाए जाने का कोई रास्ता नहीं सिवाए यीशु की क़ुवत के वसीले से –"

नजात के लिए वह कौनसा एक ही रास्ता है ?

येसु की क़ुव्वत ही नजात पाने का वाहिद रास्ता है -

44:09

यहूदी रहनुमाओं ने ताज्जुब किया कि पतरस और युहान्ना में इतनी दिलेरी कहाँ से आगई - उन्होंने देखा कि यह लोग मामूली और अनपढ़ लोग थे - मगर फिर उन्होंने याद किया कि यह लोग यीशु के साथ रहे थे - सो उन्हों ने उनसे कहा "अगर तुम इस यीशु नाम शख्स की बाबत आगे को प्रचार करोगे तो हम तुमको सज़ा देंगे - इस तरह की कई बातें कहने के बाद उन्हों ने पतरस और युहन्ना को छोड़ दिया -

यहूदी रहनुमा पतरस और युहन्ना कि मनादी से क्यूँ ताज्जुब करने लगे ?

क्यूंकि पतरस और युहन्ना मामूली और अनपढ़ गंवार लोग थे -

यहूदी रहनुमाओं ने आख़िरकार पतरस और युहन्ना के साथ कैसा सुलूक करने का फ़ैसला लिया ?

उन्हें डरा धमका कर जाने दिया -

45 स्तिफ़ुनुस और फिलिप्पुस

45:01

पहली मसीही जमाअत का एक शख्स था जिस का नाम स्तिफ़ुनुस था - हर कोई उसकी इज़्ज़त करता था रूहुलक़ुदुस ने उसको ज़ियादा क़ुवत और हिकमत अता की थी - स्तिफ़ुनुस ने कई एक मोजिज़े अंजाम दिए थे - जब उस ने यीशु पर भरोसा करने की बाबत तालीम दी थी तो बहुत से लोगों ने उसका यकीन किया था -

स्तिफ़ुनुस की ख़ासियतें क्या थीं ?

वह बहुत अच्छा शोहरतयाफ़्ता और रूहुलक़ुदुस और हिकमत से भरा हुआ शख़्स था -

---

45:02

एक दिन स्तीफ़ुनुस यीशु की बाबत मनादी कर रहा था और कुछ यहूदी जो यीशु पर ईमान नहीं लाए थे उन से बहस करना शुरू कर दिया - वह बहुत गुस्सा हुए – उनहोंने मज़हबी रहनुमाओं को जाकर बताया और साथ में कुछ झूटी बातें भी उस के ख़िलाफ़ में बताईं - तब यह चर्चा फैल गई कि स्तीफ़ुनुस मूसा और खुदा के ख़ि लाफ़ बातें करता है - सो मज़हबी रहनुमाओं ने स्तीफ़ुनुस को गिरफ़्तार किया और सरदार काहिन और दीगर यहूदी रहनुमाओं के पास ले आए – मज़ीद झूठे गवाह लाए गए और वह स्तीफ़ुनुस के ख़िलाफ़ बोलने लगे -

वह कौनसे झूठे इल्ज़ामात थे जो कुछ यहूदियों ने स्तिफ़ुनुस के खिलाफ़ लगाये थे ?

उन्होंने कहा कि स्तिफ़ुनुस ने मूसा और ख़ुदा के ख़िलाफ़ बुरी बातें कही थीं -

---

45:03

सरदार काहिन् ने स्तीफ़ुनुस से पूछा ,क्या यह लोग तुम्हारे बारे में सच कह रहे हैं ? स्तीफ़ुनुस ने बहुत सी बातें बोलना शुरू किया :"उसने कहा ,ख़ुदा ने अब्रहाम से लेकर यीशु के ज़माने तक बनी इस्राईल के लिए बहुत से अजीब काम किये हैं - मगर लोगों ने हमेशा खुदा की न फ़रमानी की ,तुम लोग खुदा के ख़िलाफ़ ढीट और बग़ावती हो तुम ने हमेशा रूहुल्कुदुस को ठुकराया है जिस तरह हमारे बापदादा ने खुदा को ठुकराया था और नबियों को हालाक किया था ,मगर तुम ने उन से भी बदतर काम किया ! तुम ने मसीहा को मारा !

स्तिफ़ुनुस ने क्या कहा कि लोगों ने अपने बाब दादाओं से भी बदतर जो काम किया वह क्या था ?

उन्होंने मसीहा को हलाक कर दिया -

45:04

जब मज़हबी रहनुमाओं ने यह बात सुनी तो वह उसपर बहुत गुस्सा हुए , उन्होंने अपने कान बंद कर लिए और जोर से चिल्लाने लगे - वे स्तिफ़ुनुस को शहर के बाहर खींँच कर ले गए - और जान से हलाक करने की ग़रज़ से उसको संगसार किया -

स्तिफ़ुनुस के इलज़ामात का मज़हबी रहनुमाओं ने किस तरह से रद्देअमल पेश किया ?

वह स्तिफ़ुनुस को शहर से बाहर खींच कर ले गए और हलाक करने के मक़सद से उसको संगसार कर दिया -

45:05

जब स्तिफ़ुनुस मर रहा था तो उसने चिल्लाकर कहा ,"ऐ यीशु , तू मेरी रूह को क़बूल कर , दोबारा उसने ऊँची आवाज़ में चिल्लाकर कहा ऐ मालिक , यह गुनाह इन के ज़िम्मे न लगा "फिर वह सो गया (मर गया) -

वह कौनसे आख़री अलफ़ाज़ थे जो स्तिफ़ुनुस ने मरने से पहले कहे थे ?

'ऐ मालिक यह गुनाह उनके ख़िलाफ़ – महसूब न करना

45:06

उस दिन से कई लोगों ने यरूशलेम में मसीहियों को सताना शरू कर दिया - सो मसीही लोग तिततर बिततर होने लगे - इस के बावजूद भी हर जगह उनहोंने यीशु की मनादी की -

स्तिफ़ुनुस को जो लोग हलाक कर रहे थे उनके कपड़ों की रखवाली कौन कर रहा था ?

साउल

जब येरूशलेम में सताव शुरू हुआ तो ईमानदारों ने क्या किया ?

वह दूसरी जगहों में भाग गए और जहां भी गए वहां पर येसु की मनादी की -

45:07

फिलुप्पुस नाम का एक ईमानदार था - वह येरूशलेम से भाग कर आया था जिस तरह दीगर ईमानदार आये थे वह सामरिया के इलाक़े को गया , उसने वहां यीशु की मनादी की - बहुत से लोग ईमान लाए और बच गए थे - एक दिन एक खुदा का फ़रिश्ता फिलुप्पुस के पास आकर कहा , उठकर बयाबान की तरफ़ चला जा और फलां रास्ते पर होले - फिलुप्पुस वहां गया - जब वह सड़क पर चल रहा था तो उसने एक आदमी को देखा जो अपने रथ पर सवार था - वह इथोपिया के मुल्क का एक ख़ास वज़ीर था - रूहुल्कुदुस ने फिलुप्पुस से कहा “जा कर उस रथ के साथ होले और उस शख्स से बात कर” -

बयाबान के रास्ते में फ़िलुप्पुस से कौन मिला ?

इथोपिया का एक ख़ास वज़ीर -

45:08

सो फिलिप्पुस ने जाकर उस रथ के साथ होलिया -इथोपिया का यह शख्स खुदा का कलाम पढता जा रहा था - वह यसायाह नबी के किताब के उस इबारत को पढ रहा था जहाँ लिखा है कि “लोग उसे भेड़ की तरह ज़बह करने को ले गए , और जिस तरह बर्रा अपने बाल कतरने वाले के सामने बे ज़बान होता है , उसी तरह वह अपना मुंह नहीं खोलता - उसकी पस्त हाली में उसका इन्साफ़ न हुआ , क्यूंकि ज़मीन पर से उसकी ज़िन्दगी मिटाई जाती है –“

फ़िलिप्पुस के पहुँचने पर यह इथोपिया का वज़ीर क्या कर रहा था ?

वह यसायाह नबी का नविश्ता पढ़ रहा था -

45:09

फिलिप्पुस ने खोजा से पूछा ,”जो तू पढ़ता है क्या तू उसे समझता भी है ? ”खोजा ने जवाब दिया ,”जब तक कोई न समझाए मैं कैसे समझ सकता हूँ ? महेरबानी से ऊपर आकर मेरे साथ बैठ और मुझे समझा - यसायाह नबी यह अपने बारे में कहता है या किसी और के बारे में ?”

क्या वह वज़ीर जिस नबुव्वत को पढ़ रहा था उसे समझ पा रहा था ?

नहीं - उसे किसी और को समझाने की ज़रूरत थी -

45:10

फिलुप्पुस रथ पर चढ़ कर उस के साथ बैठ गया - फिर उसने खोजे को बताया कि यसायाह ने यीशु की बाबत लिखा था - फिलुप्पुस ने खुदा के कलाम से और भी हवालाजत पढ़ कर सुनाए - इस तरह उस ने यीशु की खुश खबरी सुनाई -

फ़िलिप्पुस ने क्या कहा कि बर्रे की नबुव्वत किसकी तरफ़ इशारा करती है ?

वह येसु की तरफ़ इशारा करती है -

45:11

जब फिलुप्पुस और खोजा सफ़र करते जा रहे थे तो पानी कि जगह पर आए ,खोजे ने कहा " देख ,यहाँ पर पानी है ,क्या मैं यहाँ बपतिस्मा ले सकता हूँ ? "और उसने रथ हांकने वाले से रथ रोकने को कहा -

नबुव्वत की बाबत फ़िलिप्पुस के समझाने के बाद और फिर वज़ीर ने रास्ते में पानी देखा तो उसने क्या कहा ?

वज़ीर ने फ़िलिप्पुस से पुछा कि अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रुकावट है ?

45:12

सो वह पानी के अन्दर गए और फिलुप्प्स ने खोजे को बपतिस्मा दिया - जैसे ही वह दोनों पानी से बाहर आए ,अचानक रुहुलक़ुदुस फिलुप्पुस को दूसरी जगह पर ले गया - वहाँ पर फिलुप्पुस ने लोगों को मनादी करना जारी रखा -

इथोपिया के वज़ीर को बपतिस्मा देने के बाद फ़िलिप्पुस को क्या हुआ ?

रूहुल क़ुदुस फ़िलुप्पुस को उठा ले गया -

45:13

खोजा ने अपने घर तक सफ़र को जारी रखा - वह खुश था कि अब वह यीशु को जान्ता था -

फ़िलिप्पुस के उस के यहाँ से जाने के बाद इथोपिया के वज़ीर ने क्या किया ?

उसने अपने घर कि तरफ़ अपना सफ़र जारी रखा ख़ुश था कि उसने येसु को जाना -

46 पौलुस एक मसीही बन जाता है

46:01

शाऊल नाम का एक शख्स था जो यीशु पर ईमान नहीं रखता था - वह जब जवान था तो स्तिफुनुस के मारे जाने के वक़्त लोगों के कपड़ों की रखवाली किया था जो उस को संगसार कर कर रहे थे - बाद में उसने मसीहियों को सताया था - वह येरूशलेम में आदमियों और औरतों को गिरफ़्तार करके उन्हें क़ैद खाने में डलवाता था - फिर सरदार कहिन ने उसे इजाज़त दी कि वह दमिशक़ शहर को जाए ,वहां मसीहियों को गिरफ्तार करके वापस येरूशलेम में ले आए और उन्हें क़ैद करे -

साउल दमिश्क़ को क्यूँ जारहा था ?

मसीहियों को गिरफ़्तार करने और उन्हें वापस येरूशलेम लाने के लिए -

---

46:02

सो शाऊल ने दमिश्क़ का सफ़र शुरू किया शहर में पहुँचने के थोड़े ही फ़ासिले पर अचानक से एक तेज़ रौशनी उस के चारों तरफ़ चमकी जिस से उस की आँखें चुंधिया गईं और वह ज़मीन पर गिर पड़ा - शाऊल ने किसी को यह कहते सुना “ऐ शाऊल ! ऐ शाऊल ! तू मुझे क्यूँ सताता है ? शाऊल ने पूछा ऐ खुदावंद तू कौन है ? यीशु ने उसको जवाब दिया ,”मैं यिशु हूँ जिसे तू सताता है “-

दमिश्क़ के रास्ते में येसु ने साउल से क्या सवाल पूछा ?

उसने पूछा ,कि तू मुझे क्यूँ सताता है ?

46:03

जब शाऊल उठा तो वह देख नहीं सकता था - उसके दोस्तों ने उसे दमिशक़ को ले गए - शाऊल तीन दिन तक न कुछ खाया और न पिया -

तेज़ रौशनी को देखने के बाद जब वह ज़मीन पर से उठा तो साउल को क्या होगया था ?

साउल देख नहीं सकता था उसके दोस्त लोग उसको दमिश्क़ ले गए और उसने तीन दिन तक न तो कुछ खाया और न पिया -

---

46:04

दमिशक़ में हननिया नाम का एक शख्स था - खुदा ने उससे कहा कि “वह उस घर में जाए जहाँ शाऊल रुका हुआ था - उसकी आँखों में अपने हाथ फेरना ताकि वह फिर से देखने लगे - मगर हननिया ने खुदा से कहा ,मैं ने तो सुना है कि उसने ईमानदारों को बहुत सताया है -मगर खुदा ने उस से कहा , तू जा ,क्यूंकि यह यहूदियों और दीगर कौम के लोगों में मेरा नाम ज़ाहिर करने का मेरा चुना हुआ वसीला है – वह मेरे नाम की ख़ातिर बहुत दुःख उठाएगा –“

हननिया साउल से से बात करने से क्यूँ डरता था ?

उसने सुन रखा था कि साउल मसीहियों को सता रहा था

ख़ुदा ने क्या कहा था कि साउल के चुने जाने का क्या मक़सद था ?

साउल यहूदियों के बीच में और दीगर क़ौमों में भी ख़ुदा के नाम का ऐलान करेगा -

---

46:05

सो हननिया पौलुस के पास गया , उसकी आन्खों पर अपने हाथ फेरे , और कहा “यीशु जो तुझ पर रास्ते में ज़ाहिर हुआ उसने मुझे तेरे पास भेजा है ताकि तू फिर से देख सके और तू रूहुल्कुदुस से भरा जाएगा “फ़ौरन ही शाऊल फिर से देखने लगा और हनानिया ने उसको बपतिस्मा दिया - फिर शाऊल ने कुछ खाया पिया तो उसके जिस्म में फिर से ताक़त आई -

हनानियाह ने किस तरह से साउल को फिर से देखने के क़ाबिल किया ?

उसने उसपर अपने हाथ रखे थे -

साउल जब फिर से देखने लगा तो हनानियाह ने उसके लिए क्या किया ?

हनानियाह ने उसको बपतिस्मा दिया -

46:06

इस सब के फ़ौरन बाद , शाऊल दमिशक़ के यहूदियों के दरमियान मनादी करने लगा और कहने लगा कि “यीशु खुदा का बेटा है” यहूदी ताज्जुब करने लगा कि कल तक तो शाऊल ईमानदारों को हलाक करने कोशिशें करता रहा ,अब वह खुद यीशु पर ईमान ले आया ! शाऊल यहूदियों से बहस करने लगा , उसने उन्हें बताया कि यीशु ही मसीहा है -

साउल ने फ़ौरन ही यहूदियों को अपनी मनादी में क्या पैग़ाम देना शुरू किया ?

उसने पैग़ाम दिया कि 'येसु ख़ुदा का बेटा है !'

46:07

बहुत दिनों के बाद यहुदियों ने शाऊल को हालाक करने का मंसूबा बाँधा – उन्हों ने शहर के फाटक पर कुछ लोग तैनात किये कि उस पर नज़र रखे ताकि उसको हलाक कर दे -मगर किसी तरह शाऊल को उनके मनसूबे का पता चल गया तो उस के दोस्तों ने उसे बचा लिया -उनहोंने उसे एक टोकरी में बैठा कर शहर की दिवार से नीचे उतार दिया – दमिशक़ से बच निकलने के बाद शाऊल ने यीशु की मनादी जारी रखी -

साउल की मनादी का यहूदियों ने कैसा रद्देअमल पेश किया ?

उन्होंने साउल को हलाक करने का मंसूबा बनाया -

साउल दमिश्क़ से कैसे बच निकला ?

उसके दोस्तों ने उसको एक टोकरी में बिठाया और टोकरी को एक रस्सी के सहारे शहर के दीवार से नीचे कर दिया

46:08

शाऊल रसूलों से मिलने येरूशलेम को गया मगर वह उस से डरते थे - फिर बर्नाबास नाम एक ईमानदार शाऊल को रसूलों के पास ले गया - उसने रसूलों को बताया कि किस तरह शाऊल ने दमिश्क में दिलेरी के साथ मनादी की थी - उसके बाद रसूलों ने शाऊल को कबूल किया -

येरूशलेम में रसूलों के ज़रिए क़बूल किये जाने में साउल की मदद किस ने की ?

बरनाबास साउल को रसूलों के पास ले गया और उनसे कहा कि साउल ने किस तरह दमिश्क़ में दिलेरी के साथ मनादी की थी -

---

46:09

कुछ ईमानदार जो येरूशलेम के सताव से भाग कर गए थे वह दूर के एक शहर अन्ताकिया में जाकर यीशु की मनादी करने लगे - अन्ताकिया के बहुत से लोग यहूदी नहीं थे - मगर वहां के बहुत से लोग ईमान लाए और पहली बार अन्ताकिया में ही लोग मसीही कहलाए -बर्नाबास और शाऊल अन्ताकिया को गए ताकि यीशु के बारे में लोगों को और ज़ियादा सेहत से बताए और कलीसिया को मज़बूत करे - यह पहला मोक़ा था कि अन्ताकिया में ईमानदार लोग मसीही कहलाए -

अन्ताकिया में जो लोग मसीही हुए थे उनमें और दूसरे मसीहियों में क्या फ़र्क़ था ?

वह यहूदियों में से नहीं थे -

अन्ताकिया के ईमानदारों को सब से पहले क्या नाम दिया गया ?

मसीही लोग

46:10

एक दिन अन्ताकिया में मसीही लोग जब रोज़ा और दुआ में बैठे हुए थे तो रूहल क़ुदुस ने कालिसिया के लोगों से कहा कि “मेरे लिए बरनबास और शाऊल को अलग करो कि जिस काम के लिए मैं ने उन्हें बुलाया है वह करे”-सो अन्ताकिया की कलीसिया ने उन दोनों के सर पर हाथ रखे और दुआ की – फिर वह यीशु की खुशखबरी की मनादी के लिए दूसरी दूसरी जगहों में भेजे गए - बरनबास और शाऊल ने फ़रक़ फ़रक़ लोगों में जाकर यीशु की तालीम दी और बहुत से लोग ईमान लाए -

अन्ताकिया की कलीसिया के लोग क्या कर रहे थे जब रूहुलक़ुदुस ने उनसे कहा कि बरनाबास और साउल को मेरे लिए अलग करदो ?

वह दुआ कर रहे थे और रोज़ा रख रहे थे -

अन्ताकिया की कलीसिया ने साउल और बरनाबास को किस मक़सद से बाहर भेजा ?

उन्होंने उन दोनों को बहुत सी और जगहों में येसु की ख़ुशख़बरी की मनादी के लिए भेजा -

47 . फिलिप्पी में पौलुस और सिलास

47:01

जब शाऊल ने तमाम रोमी सल्तनत में सफ़र को अंजाम दिया तो उस ने अपना रोमी नाम “पौलुस” का इस्तेमाल शुरू किया - एक दिन पौलुस और उस का साथी सिलास यीशु की मनादी के लिए फिलिप्पी शहर को गए - शहर से बाहर एक नदी के किनारे लोग दुआ के लिए जमा हुए थे - वहां उन्हों ने लिदिया नाम कि एक औरत से मुलाक़ात की जो तिजारत करती थी – वह सब से प्यार करती थी और खुदा की इबादत करती थी-

वह कौनसा रोमी नाम था जो साउल ने अपने लिए इस्तेमाल करना शुरू किया ?

पौलूस

फ़िलिप्पी में कौनसी जगह पर पौलुस येसु की बाबत ख़ुशख़बरी की मनादी के लिए गया ? वह शहर से बाहर एक नदी के किनारे जहां लोग दुआ के लिए जमा होते थे वहां पर गया -

---

47:02

खुदा ने लिदया का दिल खोला कि यीशु के पैग़ाम पर ईमान लाए - पौलुस और सिलास ने उसे और उसके खानदान वालों को बपतिस्मा दिया - उसने पौलुस और सिलास को दावत दी कि मनादी के दौरान उस के घर में ठहरा करे -

लुदिया के लिए येसु पर ईमान लाना कैसे मुमकिन हुआ ?

ख़ुदा ने यह मुमकिन किया कि वह येसु से मुताल्लिक़ पैग़ाम को समझे -

लुदिया जब येसु पर ईमान ला चुकी तो पौलुस और सिलास ने उस के लिए क्या किया ?

उन्होंने लुदिया और उसके ख़ानदान को बप्तिसमा दिया -

47:03

पौलुस और सिलास अक्सर उस जगह पर जाते थे जहाँ यहूदी लोग दुआ किया करते थे - हर दिन जब वह वहाँ पर जाते थे तो बदरुह से समाई हुई एक लोंडी उनका पीछा करती थी - इस बद्रूह के ज़रिये वह लोगों का मुस्तक़बिल बताया करती थी - सो यह अपने मालिक के लिए एक किस्मत बताने वाली बतोर बहुत पैसे कमाया करती थी -

---

47:04

यह लौंडी पौलुस और सिलास के पीछे चिल्लाती जाती थी कि “यह खुदा तआला के खादिम हैं , यह तुमको नजात का रास्ता बता रहे हैं “यह लौंडी अक्सर ऐसा ही किया करती थी - इससे पौलुस बहुत तंग आ चुका था -

बदरूह समाई हुई एक लौंडी पौलुस और सिलास को देखकर क्या कहकर चिल्लाने लगी ?

वह कहने लगी “यह लोग ख़ुदा तआला के बन्दे हैं जो तुम्हें नजात की राह बताते हैं”-

उस बदरूह कि गवाही का पौलूस ने कैसा जवाब दिया ?

पौलुस एक दिन सख़्त रंजीदा हुआ और बदरूह को हुक्म दिया कि उस लौंडी में से निकल जाए -

---

47:05

आख़िरकार एक दिन जब पौलुस का पीछा किया तो पौलुस ने मुड़ कर उस बदरुह को डांट कर कहा “यीशु के नाम से इस लौंडी में से निकल आ”- वह उसी वक़्त उस में से निकल गई -

उस बदरूह कि गवाही का पौलूस ने कैसा जवाब दिया ?

पौलुस एक दिन सख़्त रंजीदा हुआ और बदरूह को हुक्म दिया कि उस लौंडी में से निकल जाए -

---

47:06

वह लोग जो इस लौंडी के ज़रिये पैसे कमाते थे पौलुस पर बहुत गुस्सा हुए ! उन्होंने महसूस किया कि बग़ैर बदरूह के वह लौंडी लोगों के मुस्ताक्बिल को नहीं बता सकती थी - इस का मतलब यह हुआ कि अब लोगों से उन मालिको को पैसे नहीं मिलेंगे -

लौंडी के मालिक इस बात से क्यूँ ग़ुस्सा हुए कि उस में से बदरूह निकल गई ?

उन्होंने इस हक़ीक़त को जाना कि अब वह लोगों के मुस्तक़्बिल को नहीं बता पाएगी जिस के लिए लोग उसे पैसे देते थे -

---

47:07

सो लौंडी के मालिकों ने पौलुस और सिलास को रोमी अफसरों के यहाँ ले गए - उन्हों ने पौलुस और सिलास को मारा पीटा और जेल में डाल दिया -

---

47:08

क़ैद में उन दोनों को ऐसी जगह पर रखा जहाँ ज़ियादा पहरेदार थे - यहाँ तक कि उन्हों ने पौलुस और सिलास के पैर लकड़ी के बड़े खूंटों से बाँध रखा था - मगर आधी रात के क़रीब पौलुस और सिलास खुदा की हम्द ओ तारीफ़ कर रहे थे -

पौलुस और सिलास आधी रात के क़रीब फ़िलिप्पी जेल में क्या कर रहे थे ?

वह ख़ुदा की हम्द में गाना गा रहे थे -

47:09

जब वह ऐसा कर रहे तो अचानक एक ज़बरदस्त भोंचाल आया जिस से क़ैद खाने के सारे दरवाज़े खुल गए और तमाम जंजीरें निचे गिर पड़ीं -

जब पौलुस और सीलास गाना गा रहे थे तो उन के बीच क्या वाक़े हुआ ?

एक बहुत बड़ा ज़लज़ला आया , क़ैद ख़ाने के दरवाज़े झटके में खुल गए और क़ैदियों की ज़नजीरें निकल पड़ीं -

---

47:10

फिर जेल खाने का दारोगा जाग उठा - उसने देखा कि जेल के सारे दरवाज़े खुले पड़े हैं - उस ने सोचा कि कैदी भाग गए होंगे - उस को डर था कि रोमी अफ़सर उसको इस लिये मार डालेंगे क्यूंकि मैं ने उन्हें जाने दिया था -सो वह खुद कुशी करने के लिए तैयार हो गया - मगर पौलुस ने जब उसे देखा तो चिल्लाया “रुक जाओ – अपने आप को नुख्सान न पहुँचाओ - क्यूंकि हम सब यहीं हैं –“

जेल का दारोग़ा क्यूँ घबरा गया था ?

उसने सोचा कि तमाम क़ैदी भाग गए और रोम के अफ़सर उसको मार डालेंगे -

---

47:11

दारोगा डरते और कांपते हुए पौलुस और सिलास के पास आया और पूछा ,"मैं क्या करूँ कि नजात पाऊँ "? पौलुस ने जवाब दिया ,"यीशु जो सब का मालिक है उस पर ईमान ला तो तू और तेरा खानदान बच जाएगा – "फिर दरोगा पौलुस और सिलास को अपने घर ले गया उनके ज़ख्म धोए - पौलुस ने उसके घर के हर एक शख्स को यीशु की खुशखबरी सुनाई -

जेल के दारोग़ा ने पौलुस से क्या सवाल पुछा ?

'नजात पाने के लिए मैं क्या करूं?'

पौलुस ने दारोग़ा से क्या कहा कि नजात पाने के लिए उसे क्या करना चाहिए था ?

उसको मालिक येसु मसीह पर ईमान लाना चाहिए था -

47:12

दारोगा और उसके ख़ानदान का हर एक फ़र्द यीशु पर ईमान ले आया और पौलुस और सिलास ने उन्हें बपतिस्मा दिया - फिर दारोगा ने पौलुस और सिलास को खाना खिलाया और सब ने मिलकर ख़ुशी मनाई -

---

47:13

दुसरे दिन शहर के रहनुमाओं ने पौलुस और सिलास को जेल से रिहा करवाया और उन से कहा कि फिलिप्पी छोड़कर चले जाएँ - पौलुस और सिलास ने लिदया और दीगर दोस्तों से मुलाक़ात की और शहर छोड़कर चले गए - यीशु कि खुशखबरी हर जगह फैलती गई और कलीसिया तरक़्क़ी करती जा रही थी -

---

47:14

पौलुस और दीगर मसीही रहनुमा कई एक शहरों में सफ़र करके यीशु कि मनादी की और लोगों को खुशखबरी की बाबत तालीम दी - उन्हों ने कई एक ख़त भी लिखे ताकि कलीसिया के ईमानदारों को सिखाए और उनकी हौसला अफ़ज़ाई करे - उन में से कुछ ख़ुतूत बाइबिल की किताबें बन गईं -

पौलुस और दीगर मसीही ख़ादिमों ने कलीसिया के इमानदारों को जो ख़ुतूत लिखे उन में से कुछ क्या हो गए ?

उनमें से कुछ बाइबिल की किताबें बन गईं -

48 यीशु वादा किया हुआ मसीहा है -

48:01

जब ख़ुदा ने दुनया बनाई , हर एक चीज़ कामिल थी -कोई गुनाह नहीं था -आदम और हव्वा एक दुसरे से प्यार करते थे और वह खुदा से भी महब्बत रखते थे - वहां कोई बीमारी या मौत नहीं थी - ऐसा ही निज़ाम खुदा चाहता था कि दुनया का हो -

जब ख़ुदा ने पहली बार दुनिया को बनाया तो वह दुनया कैसी थी ?

वह कामिल थी बग़ैर गुनाह के बग़ैर बीमारी या मौत के -

48:02

अदन के बाग़ में शैतान सांप की शकल में हव्वा के पास आया और उस से बातें कीं - क्यूंकि वह उसको फुसलाकर धोका देना चाहता था - फिर वह और आदम दोनों ने खुदा के ख़िलाफ़ गुनाह किया - जिसके अंजाम बतोर हर कोई ज़मीन पर मरता गया -

ज़मीन पर लोग क्यूँ बीमार पड़ते हैं और हर कोई क्यूँ मरता है ?

क्यूंकि आदम और हव्वा ने ख़ुदा के ख़िलाफ़ गुनाह किया था -

48:03

इसलिए कि आदम और हव्वा ने गुनाह किया कुछ बदतर किसम की बात वाक़े हुई - वह खुदा के दुश्मन बन गए जिस का अंजाम यह हुआ कि उनके बाद का हर एक शख्स गुनाह करता गया - हर एक शख्स पैदाइशी खुदा का दुश्मन होने लगा - ख़ुदा और लोगों के दरमियान कोई सुलह नहीं थी - मगर खुदा सुलह रखना चाहता था -

हर कोई शख़्स जो पैदा होता है उसकी क्या हालत होती है ?

उनके अन्दर गुनाह की फ़ितरत होती है और वह ख़ुदा के दुशमन होते हैं -

---

48:04

खुदा ने वादा किया था कि हव्वा कि नसल में से एक शख्स शैतान के सर को कुचलेगा - उसने यह भी कहा कि शैतान उसकी एड़ी को डसेगा – दुसरे मायनों में शैतान मसीहा को मारेगा मगर ख़ुदा उसको फिर से ज़िन्दा करके उठाएगा - उसके बाद मसीहा शैतान से हमेशा के लिए ताक़त और क़ुवत छीन लेगा -

इसके क्या मायने हैं कि शैतान हव्वा की नस्ल को उनकी "एड़ी पर डसेगा" ?

मतलब यह कि शैतान मसीहा को मारेगा मगर ख़ुदा उसको फिर से ज़िन्दा करेगा -

---

48:05

खुदा के मनसूबे के मुताबिक़ ख़ुदा ने नुह से कहा कि एक कश्ती बनाए ताकि आने वाले उस बड़े सैलाब से खुद को और अपने ख़ानदान को बचाए जिसे खुदा भेजने वाला था - इस तरह ख़ुदा ने लोगों को बचाया जो उस पर ईमान रखते थे - इसी तरह हर एक शख्स इस बात का मुस्तहक़ होता है कि खुदा उस को हलाक करे क्यूंकि सब ने गुनाह किया है - मगर खुदा ने यीशु को भेजा कि जो कोई उस पर ईमान लाए वह बच जाए -

किन मायनों में येसु उस कश्ती की मानिंद है जिसका ख़ुदा ने इंतज़ाम किया था जब उसने सैलाब के ज़रिये से ज़मीन को तबाह किया था ?

ख़ुदा ने येसु को उन लोगों को बचाने के लिये जो उस पर ईमान लायें , एक राह के तौर पर मुहय्या किया -

---

48:06

कई सौ साल तक काहिन लोग खुदा के लिए कुर्बानियां चढ़ाते रहे - यह इस बात को ज़ाहिर करता है कि लोगों ने गुनाह किया और वह खुदा की सज़ा के मुस्तहक़ थे -मगर वह कुर्बानियां उन के गुनाहों को दूर नहीं कर सकते थे - मगर यीशु सब से बड़ा काहिन है – उसने वह किया जो दुसरे काहिन नहीं कर सकते थे - उसने ख़ुद को एक वाहिद कुर्बानी बतोर दे दिया ताकि हर एक के गुनाह उठा लेजाए - उसने क़बूल किया कि सब के गुनाहों के लिए ख़ुदा उसको सज़ा दे - यही वजह है कि यीशु एक कामिल सरदार काहिन था -

येसु उन काहिनों से कैसे फ़र्क़ है जो उस से पहले आए थे ?

उसने खुद को वाहिद क़ुर्बानी बतौर पेश किया जो तमाम लोगों के गुनाहों को उठाकर ले जा सका -

---

48:07

खुदा ने अब्रहाम से कहा था कि ज़मीन पर तमाम कौमों को तेरे वसीले से बरकत दूंगा - यीशु इसी अब्रहाम की नसल से था - ख़ुदा तमाम कौमों के लोगों को अब्रहाम के वसीले से बरकत देता है - इस लिए कि खुदा उन्हीं को बचाता है जो यीशु पर ईमान लाते हैं - जब यह लोग यीशु पर ईमान लाते हें तो खुदा उन्हें अब्रहाम की औलाद बतोर लिहाज़ करता है -

ख़ुदा का वायदा जो अब्रहाम के लियें था वह येसु के वसीले से कैसे पूरा हुआ ?

हर कोई शख़्स चाहे वह किसी भी जमाअत का क्यूँ न हो जो येसु पर ईमान लाता है वह गुनाह से बच जाता है और अब्रहाम की एक रूहानी औलाद बन जाता है -

---

48:08

खुदा ने अब्रहाम से कहा कि तू अपने एक्लोते बेटे इज़हाक़ को उसके लिए क़ुर्बान करे - मगर फिर ख़ुदा ने इज़हाक़ के बदले एक बररा क़ुरबानी के लिए दिया - हम सब के सब अपने गुनाहों के लिए मरने के मुस्तहक़ हैं ! मगर खुदा ने हमारी जगह पर एक क़ुरबानी बतोर यीशु को दे दिया - इसी लिए हम यीशु को खुदा का बर्रा कहते हैं -

येसु को कैसे उस बर्रे की तरह है जिसे इज़्हाक़ के बदले क़ुर्बान किया गया था ?

येसु ख़ुदा का बर्रा है जिसकी हमारे मक़ाम पर क़ुर्बानी दी गई थी -

---

48:09

जब खुदा ने मिस्र पर आखरी वबा भेजी तो उस ने हर एक इस्राईली खानदान से कहा कि एक बर्रे को मारना -उसने सख्ती से कहा था कि बर्रा बे ऐब हो - फिर उन्हें उसके खून को अपने घर के चौखट पर लगाना था - जब खुदा उस खून को देखता था तो वह उनको छोड़ता जाता था और उन के पहलोठे बेटे मारे नहीं जाते थे - जब यह वाक़े हुआ तो खुदा ने उसे फ़सह कहा -

---

48:10

यीशु एक फ़सह के बर्रे की मानिंद है - उसने कभी भी कोई गुनाह नहीं किया था - इसलिए उसमें कोई खता नहीं थी - वह फ़सह की ईद के ऐन वक़्त पर मरा था -जब कोई शख्स यीशु पर ईमान लाता है तो यीशु का खून उस शख्स के गुनाह की क़ीमत अदा करता है - वैसे ही जैसे खुदा उस शख्स से होकर गुज़र गया हो क्यूंकि वह उसको सज़ा नहीं देता -

येसु किस तरह फ़सह का बर्रा है ?

येसु कामिल और बे गुनाह था , और उसका ख़ून (उसकी मौत) ख़ुदा की सज़ा का सबब है जो उसपर ईमान लाता है उस हर एक पर से गुज़र जाता है -

---

48:11

खुदा ने बनी इस्राईल से एक अहद बांधा था क्यूंकि वह लोग उसकी चुनी हुई कौम थी - मगर ख़ुदा ने एक नया अहद बांधा है जो हर एक के लिए है अगर कोई शख्स किसी क़ोम या क़बीले से इस नए अहद को क़बूल करता है तो वह ख़ुदा के लोगों में शामिल हो जाता है - खुदा ऐसा करता है क्यूंकि वह यीशु पर ईमान लाता है -

ख़ुदा के लोगों का हिस्सा कौन बन सकता है ?

किसी भी जमाअत के लोगों में से कोई भी शख़्स येसु पर ईमान लाकर नए अहद के ज़रिये से ख़ुदा के लोगों का एक हिस्सा बन सकता है -

---

48:12

मूसा एक नबी था जिसने खुदा के कलाम को बड़े ही ज़बरदस्त तरीक़े से मनादी की - मगर यीशु तमाम नबियों में सब से बड़ा है – वह ख़ुदा है - इसलिए जो कुछ उस ने कहा और किया वह किरदार और खुदा के कलाम थे - इसलिए सहीफ़े यीशु को खुदा का कलाम कहते हैं -

किन मायनों में येसु तमाम नबियों से बड़ा है ?

वह ख़ुदा है , इसलिए उसने जो कुछ किया और कहा वह ख़ुदा के अलफ़ाज़ और काम थे -

---

48:13

खुदा ने दाऊद बादशाह से वादा किया था कि उसकी नस्ल में से एक बादशाह होगा और उसके लोगों पर हमेशा के लिए हुकूमत करेगा - यीशु खुदा का बेटा और मसीहा है वह दाऊद की नसल से है जो हमेशा के लिए हुकूमत कर सकता है -

किस तरह से येसु ने उस वायदे को पूरा किया जो ख़ुदा ने दाऊद बादशाह से किया था ?

इसलिए कि वह ख़ुदा का बेटा है ,वह दाऊद की नस्ल में से है जो हमेशा के लिए बादशाही कर सकता है -

---

48:14

दाऊद इस्राईल का एक बादशाह था , मगर यीशु पूरी काएनात का बादशाह है ! वह दोबारा आएगा और इन्साफ़ और अमन के साथ हमेशा हमेशा के लिए हुकूमत करेगा -

किस मायने में येसु दाऊद बादशाह से भी बड़ा है ?

येसु तमाम कायनात का बादशाह है -

49 . खुदा का नया अहद

49:01

एक फ़रिश्ते ने एक जवान औरत, मरयम से कहा कि वह खुदा के बेटे को जन्म देगी जबकि वह अभी कुंवारी ही थी - मगररूहुल क़ुदुस उस पर नाज़िल हुआ तब से उसने अपने अन्दर हमल का एहसास किया - उसने एक बेटे को जन्म दिया और उसका नाम यीशु रखा – इस लिए यीशु खुदा और इंसान दोनों है -

येसु किस तरह से ख़ुदा और इंसान दोनों है ?

इसलिए कि वह एक कुंवारी औरत से पैदा हुआ था और वह ख़ुदा का भी बेटा था -

---

49:02

यीशु ने कई सरे मोजिज़े किये जो यह बताता है कि वह खुदा है - वह पानी पर चला और आंधी तूफ़ान को थमाया - उसने कई एक बीमार लोगों को शिफ़ाएं दीं और कई एक बदरूहों को आदमी औरतों में से निकाला -उसने मुर्दा लोगों को ज़िन्दा किया , और पांच रोटी और दो छोटी मछलियों से 5,000 लोगों को खिलाया -

येसु ने कैसे साबित किया कि वह ख़ुदा था ?

उस ने कई एक मोजिज़े किये -

49:03

यीशु एक बड़ा उस्ताद भी था - हर चीज़ को उसने सही तरीक़े से तालीम दी , सिखाया और समझाया - लोगों को चाहिए कि वह उन बातों पर अमल करे जो उसने कही – थी क्यूंकि वह खुदा का बेटा है - मिसाल के तौर पर उसने कहा था कि “जैसे तुम खुद से प्यार करते हो वैसे ही तुम दूसरों से भी प्यार करो -

हमको किस तरह से दूसरे लोगों से मोहब्बत रखनी चाहिए ?

उसी तरह जिस तरह हम ख़ुद से महब्बत करते हैं -

49:04

उस ने यह भी तालीम दी कि तुम को हर किसी चीज़ से ज़ियादा खुदा से महब्बत रखनी चाहिए जिस में तुम्हारी दौलत और जाएदाद भी शामिल है -

किसी भी चीज़ से ज़ियादा हमको किससे महब्बत रखनी चाहिए ?

ख़ुदा से -

49:05

यीशु ने कहा कि दुनया की दीगर बातों में पाए जाने से बेहतर है कि ख़ुदा की बादशाही में पाए जाएँ - उसकी बादशाही में दाखिल होने के लिए यह ज़रुरी है कि ख़ुदा आपको आप के गुनाहों से बचाए -

सब से ज़ियादा ख़ास बात हर एक शख़्स के लिए क्या है ?

ख़ुदा की बादशाही में शरीक होना -

49:06

यीशु ने कहा था कि कुछ ही लोग उसको क़बूल करेंगे -खुदा इनको बचाएगा - किसी तरह दुसरे लोग उसको क़बूल नहीं करेंगे – उसने यह भी कहा था कि कुछ लोग अच्छी मिटटी की तरह हैं क्यूंकि उनहोंने यीशु की खुशखबरी को हासिल किया है और खुदा उनको बचाता है - किसी तरह दुसरे लोग रास्ते वाली सख़त मिटटी की तरह हैं – खुदा का कलाम बीज की तरह रास्ते वाली सख़त ज़मीन पर गिरता और वहां कुछ नहीं फलता बढ़ता – यह लोग़ यीशु की बाबत पैग़ाम को ठुकरा देते हैं – वह उसकी बादशाही में दाखिल होने से इंकार करते हैं -

जो येसु की ख़ुशख़बरी का इंकार करे उन लोगों का क्या होगा ?

वह ख़ुदा की बादशाही में दाख़िल न होगा -

49:07

यीशु ने सिखाया कि खुदा गुनाहगारों से बहुत ज़ियादा महब्बत रखता है - वह उन्हें मुआफ़ करना चाहता है और उनको अपना फ़रज़न्द बनाना चाहता है -

ख़ुदा गुनाहगारों के लिए क्या करना चाहता है

वह उन्हें मुआफ़ करना चाहता है और उन्हें अपने फ़र्ज़न्द बनाना चाहता है -

---

49:08

यीशु ने हम से यह भी कहा कि इसलिए कि आदम और हव्वा ने गुनाह किया तमाम उनकी नस्ल भी गुनाह करते हैं – दुनया में हर एक शख्स गुनाह करता है और ख़ुदा से दूर है – हर एक शख्स खुदा का दुश्मन है -

ख़ुदा किस चीज़ से नफ़रत करता है

गुनाह से

49:09

मगर ख़ुदा दुनया में हर एक से इस तरह महब्बत रखता है कि उसने अपने एक्लोते बेटे को दे दिया , ताकि जो शख्स उस पर ईमान लाता है खुदा उसको सज़ा नहीं देगा बल्कि वह हमेशा के लिए उस के साथ रहेंगे -

---

49:10

आप मरने के मुस्तहक़ (सज़ावार) हैं आप को मरना वाजिबी है क्यूंकि आप ने गुनाह किया है - खुदा को यह हक़ है कि वह आप से गुस्सा हो - मगर वह आप के बदले यीशु से गुस्सा हुआ - उसने उसको सलीब पर हलाक करने के ज़रिये सज़ा दी -

हमारे गुनाह के सबब से हम ख़ुदा की जानिब से किस चीज़ के मुस्तहक़ हैं ?

हम मौत के मुस्तहक़ हैं -

येसु जब सलीब पर मरा तो वह किस बात का मुस्तहक़ नहीं था जो उसने हासिल किया ?

उसने मेरी सज़ा को हासिल किया -

49:11

यीशु ने कभी कोई गुनाह नहीं किया था - मगर उस ने खुदा को हक़ दिया कि वह उसको सज़ा दे – उसने मरना क़बूल किया - इस तरह वह एक कामिल क़ुर्बानी था कि आपके और सारी दुनया के हर एक शख्स के गुनाहों को उठा ले जाए - यीशु खुदा के हुज़ूर ख़ुद से क़ुर्बान हो गया - इसलिए खुदा किसी भी गुनाह को , यानि कि ख़तरनाक से ख़तरनाक गुनाह को भी मुआफ करता है -

येसु की क़ुर्बानी क्यूँ इस क़ाबिल है कि दुनिया के हर शख़्स का गुनाह उठा कर लेजा सकता है ?

इसलिए कि येसु ने कोई गुनाह नहीं किया था -

49:12

यहाँ तक कि अगर आप बहुत से अच्छे काम करते हैं तो भी खुदा आप को नहीं बचाएगा - कोई ऐसी बात नहीं है कि ख़ुदा आप से दोस्ती करले बल्कि आप को यकीन करना चाहिए कि यीशु खुदा का बेटा है , वह आप के लिए आप के बदले सलीब पर मारा गया और यह कि ख़ुदा ने उसे फिर से ज़िन्दा किया - अगर आप यह ईमान रखते हैं तो खुदा आपके गुनाहों को मुआफ करेगा -

---

49:13

खुदा हर एक को बचाएगा जो यीशु पर ईमान लाते और उसको अपना मालिक बतोर क़बूल करते हैं - मगर जो ईमान नहीं लाते उन्को नहीं बचाएगा - इस से कुछ फ़रक़ नहीं पड़ता कि आप अमीर हैं या ग़रीब , आदमी हैं या औरत , बूढ़े हैं या जवान या आप कहाँ रहते हैं – खुदा आपसे प्यार करता है और चाहता है कि आप यीशु पर ईमान लाएं ताकि वह आप का दोस्त बन जाए -

कौन सचमुच में बचाए जायेंगे ?

हर वह शख़्स जो येसु पर ईमान लाता और उसे अपना मालिक क़बूल करता है -

---

49:14

यीशु आप को बुलाता है कि आप उस पर ईमान लाएं और बपतिस्मा लें - क्या आप एत्काद करते हैं कि यीशु मसीहा है और खुदा का एकलोता बेटा है ? क्या आप एत्काद करते हैं कि आप एक गुनाहगार हैं और खुदा की सज़ा के मुस्तहक़ हैं ? क्या आप एत्काद करते हैं कि यीशु सलीब पर मरा ताकि आप के गुनाह उठा ले जाए ?

49:15

अगर आप यीशु पर ईमान लाते कि क्या कुछ उसने आप के लिए किया तो आप एक मसीही हैं - शैतान अपमी तारीकी की बादशाही में आइन्दा से आप पर हु कूमत नहीं करेगा - अभी खुदा अपनी बादशाही की रौशनी में आप पर हुकूमत कर रहा है - खुदा ने आपको गुनाह करने पर रोक लगादी है जिस तरह आप पहले किया करते थे - उसने आप को जीने का नया हक़ एक नया अंदाज़ दिया है -

---

49:16

अगर आप एक मसीही हैं तो खुदा ने आप के गुनाह मुआफ कर दिया है - अब ख़ुदा आप को एक नजदीकी दोस्त बतोर लिहाज़ करता है न कि एक दुश्मन बतोर -

क्या मसीही लोग अभी भी ख़ुदा के दुशमन हैं

नहीं -अब वह ख़ुदा के नज़दीकी दोस्त हैं -

49:17

अगर आप खुदा के एक दोस्त और यीशु के ख़ादिम हैं तो जो यीशु आप को सिखाता है उस के मुताबिक आप अमल करेंगे - हालाँकि आप एक मसीही हैं फिर भी शैतान आप को गुनाह की तरफ़ ले जाएगा - मगर खुदा हमेशा वही करताहै जो वह अपने कलाम में कहता है कि अगर तुम अपने गुनाहों का इक़रार करोगे तो वह तुम्हें मुआफ कर देगा - वह तुम्हें गुनाह के ख़िलाफ़ लड़ने की ताक़त देगा -

क्या मसीही लोग अभी भी गुनाह की आज़माइश में पड़ते हैं ?

जी हाँ -

मसीही लोगों को क्या करनी चाहिए जब वह गुनाह करते हैं ?

उन्हें चाहिये कि अपने गुनाहों के लिए ख़ुदा के हुज़ूर तौबा करें -

जब हम अपने गुनाहों से तौबा करते हैं तो ख़ुदा हम से क्या वायदा करता है ?

वह हम को मुआफ़ करने का वायदा करता है और गुनाह के खिलाफ़ लड़ने के लिए हमको क़ुव्वत बख़्शता है -

---

49:18

खुदा आप से कहता है कि आप दुआ करें और उसके कलाम को पढ़ें - वह यह भी कहता है कि दीगर मसीहियों के साथ मिलकर उसकी इबादत करें - आप को दूसरों को भी बताना है कि यीशु ने आप के लिए क्या कुछ किया है - अगर आप इन बातों को करेंगे तो वह आपका एक ताक़तवर और मजबूत दोस्त बन जाएगा -

वह कौन सी थोड़ी बातें हैं जो ख़ुदा हम मसीहियों से करने को कहता है ?

हमको दुआ करनी चाहिए , उसके कलाम का मुताला करना चाहिए , उसकी इबादत करनी चाहिए , और जो कुछ उस ने हमारे लिए किया है उसे दूसरों को बताना चाहिए -

50 यीशु की दोबारा आमद

50:01

तक़रीबन 2000 सालों से पूरी दुनया के लोग यीशु मसीह की खुश ख़बरी को सुनते चले आ रहे हैं - कलीसिया तरक्की करती जा रही है - यीशु ने वादा किया था कि दुनया के आखिर में वह वापस लौटेगा - हालाँकि वह अभी तक वापस नहीं लौटा , फिर भी वह अपने वादे को पूरा करेगा -

2000 सालों के दौरान उन बे शुमार लोगों को क्या हुआ जो येसु पर ईमान लाए हैं

इनका शुमार बढ़ता ही चला जा रहा है -

50:02

जब हम यिशु की वापसी का इंतज़ार करते हैं तो खुदा चाहता है कि हम एक पाक ज़िन्दगी जिएँ और वह उसको इज़्ज़त बख्शेगा - वह हम से यह भी चाह्ता है कि उसकी बादशाही की बाबत दूसरों को बताएं - जब यीशु ज़मीन पर था तो उस ने कहा था कि मेरे शागिर्द दुनया में हर जगह लोगों को खुदा की बादशाही की बाबत खुख्ब्री कि मनादी करेंगे तब खातिमा आजाएगा -

जब हम येसु की दूसरी आमद का इंतज़ार करते हैं तो ख़ुदा क्या चाहता है कि हम कैसी ज़िन्दगी जियें ?

वह चाहता है कि हम एक पाक ज़िन्दगी जिएँ जिस से कि ख़ुदा को इज़्ज़त मिले -

येसु ने क्या कहा कि इस से पहले कि ज़माने का आख़िर हो क्या कुछ होगा ?

उसके शागिर्द ख़ुदा की बादशाही की ख़ुश ख़बरी को दुनिया के हर एक कोने में लोगों तक पहुंचाएंगे -

---

50:03

बहुत सी कौमों या क़बीले के लोगों ने अभी तक यिशु का नाम नहीं सुना है - आसमान पर लौटने से पहले यीशु ने मसीहियों से कहा था कि उन लोगों तक खुश खबरी की मनादी करें जिन्होंने कभी भी नहीं सुना -उसने कहा “तुम जाकर सब कौमों को शागिर्द बनाओ”---“पक्के खेत तो बहुत हैं “-

---

50:04

यीशु ने यह भी कहा “एक आदमी का नौकर उसके मालिक से भी बड़ा होता है - इस दुनया में कुछ ख़ास लोगों ने मुझसे नफ़रत की और वह मेरे नाम की खातिर तुम को भी सताएंगे , और बाज़ को मरवा भी डालेंगे - इस दुनया में तुम तकलीफ उठाओगे ,मगर खातिर जमा रखो ,क्यूंकि मैंने शैतान को हारा दिया है - उसे जो इस दुनया पर हुकूमत करता है – अगर तुम आखिर तक वफ़ादार रहोगे तो खुदा तुमको बचाएगा -

दुनिया जिस ने येसु से नफ़रत की उसके शागिर्दों से कैसा बर्ताव करेगी ?

दुनिया के लोग उसके शागिर्दों को वैसे ही सताएंगे जैसे येसु को सताया था -

जो आख़िर तक येसु के ईमान में वफ़ादार बने रहेंगे उनके लिए ख़ुदा का क्या वायदा है ?

ख़ुदा वायदा करता है कि वह उन्हें बचाएगा -

50:05

यीशु ने अपने शागिर्दों से एक कहानी पेश की थी यह समझाने के लिए कि जब दुनया का ख़ात्मा होगा तो लोगों का क्या हषर होगा , उसने कहा “एक शख्स ने अपने खेत में अच्छा बीज बोया- मगर लोगों के सोते में उसका दुश्मन आया और गेहुं में कड़वे दाने भी बो गया और वह चला गया -

येसु की कहानी में जो आख़री ज़माने की बाबत थी गेहूं के बीच में जंगली दाने कहां से आगये थे ?

एक दुशमन ने उन्हें बोया था -

50:06

और जब पत्तियां निक्लीं और बालें आईं तो कड़वे दाने भी दिखाई दिए - नौकर ने मालिक से कहा “ऐ खुदावंद क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज नहीं बोया था ? उस में कड़वे दाने कहाँ से आ गए ? उसने उस से कहा ,”यह किसीं दुश्मन ने किया है “

येसु की कहानी में जो आख़री ज़माने की बाबत था गेहूं के बीच में जंगली दाने कहां से आगये थे ?

एक दुशमन ने उन्हें बोया था -

50:07

नौकरों ने अपने मालिक से कहा ,"तू क्या चाहता है कि हम उनको जमा करें ? मालिक ने कहा "नहीं ,अगर तुम ऐसा करोगे तो उनके साथ गेहूं भी उखाड़ लोगे - कटाई तक दोनों को इकठा बढ़ने दो और कटाई के वक़्त तुम उन्हें जमा करके तुम उन्हें जला सकते हो - मगर गेहूं को मेरे खत्ते में जमा करदो –"

नौकरों ने उन जंगली पौदों को अलग क्यूँ नहीं किया ?

इसलिए कि कहीं ऐसा न हो कि साथ में गेहूं भी न चला जाए -

50:08

शागिर्दों ने कहानी के मतलब को नहीं समझा था सो उनहोंने यीशु से दरखास्त की कि उसका मतलब उन्हें समझाए - यीशु ने उनसे कहा " जिस ने अच्छे बीज बोये थे वह मसीहा को ज़ाहिर करता है ,खेत दुनया है -और अच्छा बीज ख़ुदा की बादशाही के लोगों को ज़ाहिर करता है -

अच्छे बीज किस की तरफ़ इशारा करते हैं ?

अच्छे बीज ख़ुदा की बादशाही के लोगों की तरफ़ इशारा करते हैं -

50:09

कड़वे दाने शैतान के लोगों को ज़ाहिर करता है जो बुरे लोग हैं - आदमी का दुश्मन जिस ने कड़वे दाने बोए वह शैतान को ज़ाहिर करता है और कटाई दुनया के आख़िर को ज़ाहिर करता है ,और काटने वाले खुदा के फ़रिश्ते हैं -

कटनी किस की तरफ़ इशारा करती है ?

कटनी दुनिया के आख़िरी ज़माने कि तरफ़ इशारा करती है जब ख़ुदा के फ़रिश्ते उन लोगों को जमा करेंगे जो शैतान से ताल्लुक़ रखते हैं -

---

50:10

जब दुनया का खातमा होगा तो खुदा के फ़रिश्ते शैतान के लोगों को जमा करेंगे और उन्हें आग की झील में डालेंगे और वहां बड़ी मुसीबत में उन लोगों का रोना और दांत पीसना होगा-

कटनी किस की तरफ़ इशारा करती है ?

कटनी दुनिया के आख़िरी ज़माने कि तरफ़ इशारा करती है जब ख़ुदा के फ़रिश्ते उन लोगों को जमा करेंगे जो शैतान से ताल्लुक़ रखते हैं -

ज़माने के आख़िर में उन लोगों का क्या होगा जो शैतान से ताल्लुक रखते हैं ?

उन्हें धधकती आग में फेंका जाएगा जहां वह बहुत ज़ियादा तकलीफ़ उठाएंगे -

---

50:11

यीशु ने यह भी कहा कि वह दुनया के खातमे से पहले ज़मीन पर आएगा - वह जिस तरह आसमान पर गया है उसी तरह वह वापस आएगा - उस वक़्त उसका अपना हक़ीक़ी जलाली जिस्म होगा - और वह आसमां के बादलों पर आएगा - जब यीशु की आमद होती है हर एक मसीही जो मर चुका है वह मुर्दों में से जी उठेगा और आसमान पर उस से मुलाक़ात करेगा -

किस सूरत येसु ज़मीन पर लौटेगा ?

जिस सूरत में उस को जलाली जिस्म में आसमान के बादलों पर ज़मीन पर से उठा लिया गया था उसी सूरत में वह ज़मीन पर लौटेगा -

---

50:12

फिर वह मसीही लोग जो उस के आने के वक़्त ज़िन्दा होंगे वह ज़िन्दा आसमान पर उठा लिए जाएंगे - वह सब वहां पर यीशु के साथ होंगे - उसके बाद यीशु अपने लोगों के साथ होगा - उन के पास कामिल इत्मिनान और तसल्ली हमेशा के लिए सुकूनत करेगी -

येसु जब आसमान पर लौटेगा तो तमाम मसीहियों का क्या होगा ?

जो ज़िन्दा होंगे वह उठा लिए जाएंगे ताकि बादलों पर उससे मुलाक़ात हो और मरे होंगे वह जिलाए जाएंगे और वह भी आसमान में उससे मुलाक़ात करेंगे -

---

50:13

यीशु ने हरेक ईमानदार को एक ताज देने का वायदा किया था -वह ख़ुदा के साथ मिलकर हुकूमत करेंगे - उन के पास कामिल तसल्ली और इत्मिनान होगा -

---

50:14

मगर ख़ुदा हर एक का इन्साफ़ करेगा जो यीशु पर इमान नहीं लाए – उन्हें जहन्नुम में डाला जाएगा – वह वहां पर रोएंगे, मातम करेंगे और दांत पीसेंगे – और हमेशा के लिए दुःख उठाएँगे - वहाँ की आग कभी नहीं बुझती और वहां का कीड़ा कभी नहीं मरता -

---

50:15

जब यीशु की आमद होती है तो शैतान और उसकी बादशाही को पूरी तरह से फ़ना व बर्बाद किया जाएगा -वह शैतान को भी जहन्नुम में डालेगा - शैतान हमेशा के लिए उन सब के साथ जो उस के पीछे हो लिए थे जहन्नुम की आग में जलता रहेगा -

जब वह लौटेगा तो वह शैतान को क्या करेगा ?

शैतान को वह जहन्नुम में डालेगा जहाँ वह हमेशा के लिए जलता रहेगा -

---

50:16

इस लिए कि आदम और हव्वा खुदा के नाफ़रमान हुए और दुनया में गुनाह लेकर आए उस दुनया पर खुदा ने लानत भेजी थी और उसको बर्बाद करने का फ़ैसला लिया था - मगर किसी दिन खुदा एक नया आसमान और एक नई ज़मीन क़ायम करेगा जो कामिल होगी -

---

50:17

यीशु और उसके लोग ज़मीन में सुकूनत करेंगे और वह हमेशा हमेशा के लिए सब पर हुकूमत करेगा वह लोगों की आँखों से सारे आंसू पोंछ डालेगा - फिर किसी तरह का ग़म या मुसीबत नहीं होगी -वह न रोएंगे और न बीमार पड़कर मरेंगे - वहाँ किसी तरह बुराई या शरारत नहीं होगी - यीशु इन्साफ के साथ और सलामती के साथ बादशाही करेगा – वह अपने लोगों के साथ हमेशा हमेशा के लिए रहेगा -आमीन -

नया आसमान और नई ज़मीन में ज़िन्दगी किस तरह की होगी ?

येसु हमेशा के लिए अम्न और इंसाफ़ के साथ बादशाही करेगा और किसी तरह की कोई तकलीफ़ नहीं होगी -

योगदानकर्ताओं

Open Bible Stories Translation Questions योगदानकर्ताओं

Dr. Bobby Chellappan
Vipin Bhadran
Dr. Joseph Jekab
Acsah Jacob
Jinu Jacob
Hind Prakash

Open Bible Stories योगदानकर्ताओं

Antoney Raj
Cdr. Thomas Mathew
Dr. Bobby Chellappan
Hind Prakash
Shojo John
Vipin Bhadran